

धर्म और उससे संबंधित मुद्दों पर कुछ बातें – इसे आत्मसात करने की आवश्यकता

(धर्म को आत्मसात करने तथा अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन के पुनर्गठन का क्या,
क्यों और कैसे, तथा इसकी तात्कालिकता)

(Translated by Google)

वर्ष 2024 के सोशल मीडिया पोस्टों का संग्रह,

नरेंद्र अग्रवाल

(वेबसाइट: resurrectionofdharma.com)

संकलित, प्रस्तुत एवं प्रकाशित

बंदना चौधरी

पहला संस्करण: दिसंबर-2024

© लेखक के पास आरक्षित,

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरह से पुनः प्रस्तुत या किसी अन्य भाषा में अनुवादित नहीं किया जा सकता।

यद्यपि इस पुस्तक के प्रकाशन में हर प्रकार की सावधानी बरती गई है, फिर भी इसमें हुई किसी भी त्रुटि या चूक के कारण किसी भी व्यक्ति को हुई हानि या क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक और मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। यदि प्रकाशकों के ध्यान में कोई गलती लाई जाती है तो वे अगले संस्करण में उसमें सुधार करने के लिए बाध्य होंगे।

प्रकाशक: बंदना चौधरी

प्रथम तल, सी-6, अंबिका नगर,

सक्तीनाट , भरूच, गुजरात (392001)

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com (पुस्तकों के मुफ्त डाउनलोड और वीडियो/पॉडकास्ट के लिंक के लिए, ईमेल, लिंकडइन/फेसबुक,

कुछ शब्द

यह पुस्तक "धर्म और उससे संबंधित मुद्दों पर कुछ-उसके आत्मसात करने की आवश्यकता, (धर्म का आत्मसात क्यों, कैसे और क्यों हो तथा अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन का पुनर्गठन और इसकी तात्कालिकता), जो मूलतः श्री नरेन्द्र अग्रवाल के विभिन्न सोशल मीडिया पोस्टों का संग्रह है", वर्तमान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक कटुतापूर्ण स्थिति की आलोचनात्मक टिप्पणियां और हमारी सामूहिक भलाई के लिए एक संभावित रोडमैप प्रस्तुत करती है, ताकि न केवल समवर्ती गड़बड़ी से उबरा जा सके बल्कि एक बेहतर प्रणाली की ओर बढ़ने और स्थायी रूप से विकसित हो सके। इस पुस्तक में जहां भी आवश्यक समझा गया, भारत से उदाहरण या स्थितिजन्य प्रस्तुति प्रस्तुत की गई है।

आगे, इस दस्तावेज़ को पढ़ते समय निम्नलिखित पुस्तकों का संदर्भ लेना उचित होगा, इन्हें वेबसाइट से निःशुल्क डाउनलोड करें: resurrectionofdharma.com,

1. . . . सतत विश्व व्यवस्था, (हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक खुशी के लिए आवश्यक संस्थानों के पुनरुद्धार के लिए) , विश्लेषण और दृष्टि प्रपत्र -
2. काम की बात (जल, ज़मीन और जंगल पर), बंदना चौधरी द्वारा
3. -मीता-लाइफ़ स्टाइल एजेंडा (सामाजिक- आर्थिक -धार्मिक-राजनीतिक एजेंडा) नरेंद्र अग्रवाल द्वारा
4. डिविनक्रेसी (दिव्य-लोकतंत्र) - (हिंद स्वराज का पुनरावलोकन) नरेंद्र अग्रवाल द्वारा
5. परांजलि (गीतांजलि का पुनरावलोकन) डॉ. कल्पना सेंगर द्वारा
6. धार्यते इति धर्म (ताओ ते चिंग का पुनरावलोकन) डॉ. कल्पना सेंगर द्वारा,
7. वैकल्पिक अर्थव्यवस्था, बन्दना चौधरी

ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

बंदना चौधरी

धर्म और उससे संबंधित मुद्दों पर कुछ बातें – इसे आत्मसात करने की आवश्यकता

(धर्म का आत्मसातीकरण और अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन का पुनर्गठन, क्यों और कैसे, तथा इसकी तात्कालिकता), वर्ष 2024 के सोशल मीडिया पोस्टों का संग्रह, लेखक, नरेन्द्र अग्रवाल, (वेबसाइट: resurrectionofdharma.com)

विषय-सूची:

1. आओ दुनिया बनाने के लिए काम करें, एक कविता,
2. भाग-1/5, धर्म पर कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है - समवर्ती धर्मों में विवादास्पद मुद्दे,
3. भाग-2/5, धर्म पर कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है - गंभीर मुद्दे और बड़ी समस्या,
4. भाग-3/5, धर्म पर कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है - इसकी आवश्यकता क्यों है,
5. भाग-4/5, धर्म पर कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है - समाधान केंद्रित प्रस्तुतियाँ,
6. भाग-5/5, धर्म पर कुछ और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है और यह कैसे किया जा सकता है, साथ ही एक अस्थायी व्यवस्था भी:
7. धार्मिक पर्यटन पर कुछ,
8. भारत और विश्व में क्या गलत हुआ, इस पर कुछ बातें,
9. महान चाणक्य के अर्थशास्त्र पर कुछ आलोचक,
10. "सोने की अर्थव्यवस्था या स्वर्णिम अर्थव्यवस्था" पर कुछ
11. नशे के अर्थशास्त्र या अर्थव्यवस्था के नशे पर कुछ
12. जनसाधारण की गरीबी के अर्थशास्त्र पर कुछ,
13. महिला और समाज पर कुछ बातें
14. बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट कानून पर कुछ,
15. नेतृत्व और उसके विकास पर कुछ बातें
16. भारत में राज्य सरकारों की अप्रासंगिकता पर कुछ बातें
17. भाग-1/3, इस विषय पर कुछ कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए और यह कैसे किया जा सकता है,
18. भाग 2/3 - इस विषय पर कुछ बातें कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए - पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के विचार,
19. भाग 3/3 - इस विषय पर कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए - स्क्रेप-डंप करना चाहिए और यह कैसे किया जा सकता है - एक समाधान केंद्रित प्रस्तुति,
20. द्रौपदी मुर्मू को एक खुला निवेदन (निम्नानुसार 13 अनुलग्नक ए.एम. के साथ):
 1. अनुलग्नक - ए, 'सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बनाम सकल खुशी अनुपात/सूचकांक (जीएचआर या जीएचआई)' में बुनियादी अंतर क्या है और समाज और देश के लिए उनकी स्थिति को मापने के लिए कौन सा अधिक प्रासंगिक हो सकता है?

- II. अनुलग्नक-बी, किसी भी समाज में सामाजिक सुरक्षा का प्रावधान क्यों आवश्यक है और देश के प्रत्येक नागरिक, जिसमें उसके वैध आगंतुक और अतिथि भी शामिल हैं, के लिए इसे कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है?
- III. अनुलग्नक-सी, कई लोगों का कहना है कि देश में हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, उसका कारण लोगों/नेताओं की राजनीति (भारत में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला एक संस्कृत शब्द) और राजनीति (अंग्रेजी बोलने वाले देशों में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला लैटिन मूल का शब्द) के प्रति बुनियादी समझ है? सुशासन के लिए इसका क्या परिप्रेक्ष्य हो सकता है?
- IV. अनुलग्नक-डी, परिवार क्या है? सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में इसका क्या महत्व है? यह अवधारणा कहाँ से आई है कि दुनिया एक बड़ा परिवार है?
- V. अनुलग्नक-ई, क्या दुनिया में हम जो भी गड़बड़ियाँ देख रहे हैं, उसके लिए अर्थशास्त्र की हमारी बुनियादी समझ की विफलता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? अगर ऐसा है तो ऐसा क्यों है? इसे ठीक करने के लिए क्या-क्या करने की ज़रूरत है और एक अच्छी आर्थिक व्यवस्था कैसे बनाई जा सकती है?
- VI. अनुलग्नक-एफ, परिवार, देश और समाज के सदस्यों के बीच आय के वितरण का पैटर्न क्या होना चाहिए, जो तर्कसंगत प्रतीत हो और दीर्घकालिक अधिकार बनाम जिम्मेदारी चार्ट में अच्छी तरह से फिट हो और एक स्वस्थ, खुशहाल और टिकाऊ सामाजिक व्यवस्था का आधार हो सके?
- VII. अनुलग्नक-जी, समाज में स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय की उपलब्धता के मुद्दों से निपटने के लिए सबसे अच्छा अर्थशास्त्र क्या हो सकता है?
- VIII. अनुलग्नक - एच, क्या धर्म (मूल धर्म) उन समस्याओं के व्यापक स्पेक्ट्रम का समाधान प्रस्तुत करता है जिनका हम मानव जाति सामना कर रही है?
- IX. अनुलग्नक-आई, राम राज्य (राम का शासन, राम द्वारा शासन और राम जैसा शासन) को सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, यदि ऐसा है, तो इसका व्यापक परिप्रेक्ष्य क्या है?
- X. अनुलग्नक-जे, हम (समाज और सरकार) सभी युवाओं को रोजगार और सभी बुजुर्गों को सम्मानजनक रोजगार कैसे प्रदान कर सकते हैं, ताकि बेरोजगारी के साथ-साथ अकेलेपन की समस्या का समाधान हो सके?
- XI. अनुलग्नक-के, सुशासन में स्वच्छता और सफाई के मार्गदर्शक सिद्धांत क्या हो सकते हैं?
- XII. अनुलग्नक - एल, "इंडिया - हिंदुस्तान - भारत", इन शब्दों की अच्छे शासन के लिए क्या प्रासंगिकता है?
- XIII. अनुलग्नक-एम, भारत-इंडिया-हिंदुस्तान, एक बेहतर स्थान क्यों है।

21. इच्छा पर कुछ, हमारी इच्छा या प्रकृति की इच्छा, एक कविता.

आइये विश्व निर्माण के लिए काम करें

जहाँ आस्था भय रहित हो और धर्म ऊँचा हो,
जहाँ सिर हृदय के पीछे रहता है और शरीर सीधा रहता है,
जहाँ बुद्धि का सम्मान किया जाता है और कमजोरों की रक्षा की जाती है।
जहाँ विश्व को संकीर्ण राज्य सीमाओं में विभाजित नहीं किया गया है,

जहाँ सत्य की गहराई से शब्द निकलते हैं,
जहाँ अथक प्रयास पूर्णता की ओर पंख फैलाता है,
और तर्क की स्पष्ट धारा खोई नहीं है,
मृत अनुष्ठानों की नीरस रेत में इसका रास्ता,

जहाँ हृदय को तुम आगे ले जाते हो, सदा-व्यापक विचार और क्रिया में,
जहाँ धर्म का राज्य है और अधर्म का संहार कलि नामक राक्षस द्वारा किया जाता है,
जहाँ रहना स्वर्ग जैसा है और समाज बंधन रहित है,
हे प्रिय, आओ हम उस दुनिया को बनाने के लिए काम करें,

*[धर्म- मूल धर्म , अधार्मिक- अधार्मिक ,]

डॉ. कल्पना सेंगर की कविता - परांजलि से (गीतांजलि पुनः प्रकाशित)

भाग-1/5, धर्म पर कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है – समवर्ती धर्मों में विवादास्पद मुद्दे

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

समवर्ती धर्मों में विवादास्पद मुद्दे:

1. धर्म क्यों विफल होते और अप्रासंगिक होते जा रहे हैं? क्योंकि, जब कोई व्यक्ति किसी समस्या में होता है और वह किसी धार्मिक स्थान पर जाता है, तो उसे केवल उपदेश मिलते हैं, पुजारियों से उपदेश या तो उसके द्वारा स्वयं रचित या किसी पवित्र ग्रंथ के अंश और मामला वहीं समाप्त हो जाता है, बिना किसी वास्तविक और दृश्यमान समर्थन के। उसे खाली हाथ वापस आना पड़ता है और फिर से उसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, चाहे वह बुनियादी भूख, कपड़ा या आश्रय की हो या अपने घर/मकान/पड़ोसियों से दूर एक शांतिपूर्ण वातावरण खोजने के लिए आवश्यक समर्थन की हो या अपनी रचनात्मक खोज को व्यक्त करने के लिए एक जगह की हो।

इसके अलावा, ऐसी स्थिति के बारे में सोचें जिसमें परिवार के भीतर कोई आकस्मिक झगड़ा/झगड़ा हो जाए, और यदि कोई व्यक्ति मामले को शांत करने (यदि सुलझाया न जा सके) के लिए रात/कुछ दिनों के लिए भी बाहर जाना चाहे? अफसोस! वर्तमान में यदि किसी पुरुष के पास पैसा नहीं है, तो उसके लिए रहने के लिए कोई सम्मानजनक जगह नहीं है, और महिलाओं के लिए तो और भी अधिक।

उपरोक्त बातों का सारांश यह है कि हम सभी एक ऐसे विश्व में रह रहे हैं, जहां प्रत्येक मनुष्य के मन में भोजन, कपड़ा और मकान की असुरक्षा व्यवस्था को सुरक्षा प्रदान कर रही है।

क्या हम इसे एक खुशहाल और स्वस्थ स्थिति कह सकते हैं? क्या कोई भी धर्म कम से कम अपने अनुयायियों के लिए ऐसी असुरक्षित, अस्वस्थ, दुखी स्थिति को उचित ठहरा सकता है, गैर-अनुयायी, नास्तिक या अज्ञेयवादी या इसके अविश्वासी आलोचक की तो बात ही क्या करें? क्या ऐसी स्थिति में कोई व्यक्ति अपने धर्म/आस्था को बनाए रखने में सक्षम होगा और तथाकथित धार्मिक संस्थानों/आस्था केंद्रों के रखरखाव में स्वेच्छा से योगदान दे सकेगा?

2. आश्चर्य की बात यह है कि प्रत्येक धर्म के उपदेशक और पुजारी कहते हैं कि उनका ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली है और सर्वोच्च तथा अभिन्न है, फिर भी ऐसे मौलवी/पुजारी यह मान लेते हैं कि उनका तथाकथित ईश्वर उनके पड़ोसियों को आशीर्वाद नहीं देगा जो

इस ईश्वर को दूसरे नाम से पुकारते हैं और अलग शैली और स्वरूप में प्रार्थना करते हैं। इसके अलावा हर धर्म के ऐसे मौलवी/पुजारी बेबुनियाद विश्वास के साथ कहते हैं कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर निश्चित रूप से उनके पड़ोसियों तक नहीं पहुंचेगा जो उनके ईश्वर के संस्करण का सम्मान नहीं करते, उन्हें नहीं समझते और उनका पालन नहीं करते और निश्चित रूप से उस व्यक्ति तक नहीं पहुंचेंगे और उसे आशीर्वाद नहीं देंगे जो उनके ईश्वर के संस्करण से अनभिज्ञ है।

क्या कोई पुजारी/पादरी इस बात पर विचार कर सकता है कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर इतना छोटा कैसे है कि वह अपने पड़ोसी को भेद नहीं पाता, जो उनके विचारों से सहमत नहीं है और ऐसे पड़ोसी को नास्तिक या गैर-धार्मिक या यहां तक कि शैतान घोषित किया जा सकता है और वह भयंकर सजा का हकदार है? क्या इसका कोई मतलब है?

3. ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक धर्म के सभी धार्मिक गुरुओं ने धर्म की मूल बातों को नजरअंदाज कर दिया है, कि आस्था/धर्म वह आधार है जिस पर राजनीति का ढांचा खड़ा होता है और इस प्रकार भोजन, पानी, कपड़ा, आवास, रोजगार, मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय प्रशासन और न्याय जैसी सभी बुनियादी आवश्यकताओं की देखभाल करना धर्म की मूल जिम्मेदारी है।

प्रत्येक धर्म के सभी धर्मगुरु अपने कुल, अनुयायियों और समर्थकों को ये सेवाएं देने के बजाय मृत्यु के बाद जीवन के सपने दिखाने, अपने अनुयायियों में भय पैदा करने, अपने धर्म की श्रेष्ठता और दूसरों को हीन दिखाने में व्यस्त रहे और समाज में शांति और सद्भाव की जगह नफरत और दुश्मनी को और अधिक बढ़ाया। इन सभी धर्मगुरुओं ने मिलकर आस्था को हिलाकर रख दिया है और अपने लगभग सभी अनुयायियों के साथ-साथ पूरे समाज का जीवन कष्टमय बना दिया है।

चूंकि आस्था प्रत्येक जीव के लिए जन्मजात और केंद्रीय (हृदय) है, इसलिए जब आस्था डगमगाती है तो यह स्पष्ट है कि हृदय अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो यह अंततः व्यक्ति के आंतरिक संतुलन और प्रतिरक्षा को बिगाड़ देती है, जिससे जाहिर तौर पर शुगर लेवल (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग), असहायता (कैंसर) और वह सभी प्रकार की अन्य बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

चिकित्सा डेटा पुष्टि करते हैं कि बीमारियाँ बहुत ही खतरनाक दर से बढ़ रही हैं जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज में आशा प्रदान करने वाली एजेंसियाँ (धार्मिक संस्थाएँ) अपने अनुयायियों के बीच

आशा पैदा करने में बुरी तरह विफल हो रही हैं। क्या किसी समाज के लिए कम से कम एक आशा की अनुपलब्धता से भी बदतर स्थिति हो सकती है?

संभवतः स्थिति की इसी गम्भीरता के कारण विभिन्न धर्मों के संस्थापकों ने मिलकर यह कल्पना की होगी कि बीसवीं शताब्दी (समवर्ती समय) महत्वपूर्ण होगी, तथा विभिन्न धर्मों के संस्थापकों के अनुसार यह या तो प्रलय का समय होगा, या नए मसीहा का अवतरण होगा, या बुद्ध का पुनर्जन्म होगा, या ईश्वर के नए दूत का आगमन होगा, या महान मंथन होगा, या फिर नए युग में संक्रमण का समय होगा? बुद्ध के अनुसार, उनका धर्म पच्चीस सौ वर्षों तक चलेगा, उसके बाद वे पुनर्जन्म लेंगे और मैत्रेय के रूप में प्रकट होंगे, ईसाई लोग प्रलय के बारे में बहुत चर्चा करते हैं, हालांकि पैगम्बर साहिब को कई लोग अंतिम संदेशवाहक कहते हैं, लेकिन ऐसा कहा जाता है कि चौदह सौ वर्ष बाद दो व्यक्ति (संदेशवाहक) प्रकट होंगे जो विश्व में शांति स्थापित करेंगे, टोरा (धार्मिक पुस्तक) के अनुसार यहूदी कहते हैं कि यह अंतिम पीढ़ी है जबकि हिंदू कहते हैं कि यह नए युग की ओर संक्रमण का समय है।

4. धार्मिक विवादों की गंभीरता को न केवल द्वितीय विश्व युद्ध में धार्मिक नरसंहार के रूप में विश्व स्तर पर देखा जा सकता है, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी स्थिति की गंभीरता को धार्मिक घृणा की कई घटनाओं और उसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हत्याओं से देखा जा सकता है, यहाँ तक कि भारतीय उपमहाद्वीप में भी। भारत का अलग होना, थाईलैंड, श्रीलंका, म्यांमार, पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में संघर्ष और जातीय सफाया भारतीय उपमहाद्वीप में हुई कुछ दिल दहलाने वाली घटनाएँ हैं।

ये सभी जातीय हत्याएं और सफाए कोई छिटपुट और अकेली घटनाएं नहीं हैं, बल्कि ये धार्मिक घृणा का चरम परिणाम हैं, जो स्वयं पुजारियों द्वारा न केवल दूसरे धर्म के विरुद्ध, बल्कि अपने ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों के बीच – नस्लीय और नस्लीय, जाति, वर्ग और रंग के आधार पर भेदभाव के रूप में फैलाई जाती है।

जो लोग कहते हैं कि धर्म कुछ नहीं सिखाता या उपदेश नहीं देता या शत्रुता बढ़ाने में संलिप्त है, जबकि वर्तमान विश्वव्यापी परिदृश्य में अनेक धार्मिक उपदेशक और पुजारी न केवल भय उत्पन्न करने और घृणा फैलाने में संलिप्त पाए गए हैं, बल्कि वास्तव में एक या दूसरे धर्म के विरुद्ध अपराध को बढ़ावा देने में भी संलिप्त पाए गए हैं, वे शत्रुता का जीवन जी रहे हैं।

अराजकता को देखते हुए यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि धर्म की सार्वभौमिकता धीरे-धीरे लेकिन लगातार क्षीण होती जा रही है, पहले सार्वभौमिकता से मानवता की ओर, मानवता से

धार्मिकता की ओर, धार्मिकता से क्षेत्रीय धार्मिकता की ओर, फिर स्थानीयता की ओर और अंत में वैयक्तिकता की ओर, जो यह दर्शाता है कि न केवल परिवार, समाज का ताना-बाना लुप्त हो गया है, बल्कि पूरा वातावरण ही अस्त-व्यस्त हो गया है, जिसने हमारे अस्तित्व पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

इस परिदृश्य को देखते हुए क्या कहा जा सकता है कि हम कहाँ जा रहे हैं?

i. नरसंहार के साथ एक और विश्व युद्ध?

ii. प्रलय की ओर, या किसी व्यक्ति द्वारा प्रलय की योजना बनाकर स्वयं को मसीहा घोषित करने की स्थिति का बलि का बकरा बनने की ओर।

iii. क्या अब पृथ्वी छोड़कर मंगल ग्रह पर बसने का समय आ गया है?

4. क्या यह बुराई के अंत और धार्मिकता के पुनरुत्थान का समय है?

5. ऐसा प्रतीत होता है कि सभी धर्म अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं, जो भौतिक दुनिया में कोरोना/कोविड लॉकडाउन के दौरान स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हुआ है। लगभग सभी धर्म आधुनिक दिनों की बीमारियों के हमले के आगे झुक गए हैं और परिणामस्वरूप लगभग सभी पूजा स्थल और उनके पुजारी बीमारी के हुकम के आगे आत्मसमर्पण कर चुके हैं और अपने अनुयायियों को मौत के मुंह में जाने के लिए छोड़ दिया है। स्थिति तब चिंताजनक हो जाती है जब लोगों को पता चलता है कि प्रार्थना के कई सर्वोपरि स्थानों को भी बंद किया जा सकता है और ये भी किसी आपात स्थिति और आपातकाल के दौरान सांत्वना और सांत्वना नहीं दे सकते हैं। जब वेटिकन, मक्का-मदीना, यरुशलम जैसे केंद्रों के साथ-साथ आस्था-पूजा के लगभग सभी केंद्र ताले और चाबी के नीचे पाए जाते हैं, तो एक साधारण व्यक्ति की आस्था कैसे बरकरार रहेगी?

ये सभी मंदिर-मस्जिद, मठ और चर्च बंद हो गए हैं और उन पर ताले लगा दिए गए हैं, जिससे यह संदेश गया है कि पूजा के इन केंद्रों और उनके उपदेशकों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, ये अप्रासंगिक हो गए हैं और इन केंद्रों की पवित्रता और निरंतरता पर ही नहीं बल्कि इन केंद्रों के जारी रहने और इनमें होने वाले सांसारिक अनुष्ठानों पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। ऐसी स्थिति में क्या यह हम सभी के लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम इस मुद्दे पर खुले दिमाग और बड़े दिल से विचार करें और तय करें कि क्या ऐसे केंद्रों को छोड़ दिया जाना चाहिए या हमेशा के लिए बंद कर दिया जाना चाहिए या सम्मानपूर्वक नष्ट कर दिया जाना चाहिए या उन्हें इतिहास और पर्यटन के लिए संग्रहालयों सहित अन्य उद्देश्यों के लिए किराए पर दे दिया जाना चाहिए।

ऐसी स्थिति में, जहां हर धर्म अपने वर्तमान स्वरूप में हाल की परिस्थितियों से निपटने में अक्षम साबित हुआ है, अब किसी का भी अपने आप को उसका ठेकेदार बताकर यह कहना कि उसका धर्म सर्वश्रेष्ठ है, बेकार और मूर्खतापूर्ण है कि वह उसके नाम पर अपनी जान जोखिम में डाले या दूसरों की जान ले।

इसके अलावा, यह देखकर आश्चर्य होता है कि अब जैन और बौद्ध हथियार और आक्रमण की बात कर रहे हैं, मुसलमान शांति और सौहार्द की बात कर रहे हैं, यहूदी और हिंदू अपना पारंपरिक संयम खो चुके हैं और उन्मत्त हो रहे हैं।

चूंकि प्रकृति शून्यता को नापसंद करती है, इसलिए भले ही लॉकडाउन के बाद धर्म का कारोबार सामान्य रूप से फिर से शुरू हो गया हो, लेकिन लोगों को पता चल गया है कि प्रार्थना व्यक्तिगत है और इसे व्यक्तिगत रूप से या परिवार के साथ या समूह के साथ ऑनलाइन किया जा सकता है, जबकि पहले सामुदायिक प्रार्थना के तरीके यही थे। जो भी मौजूदा स्थिति अनिश्चित प्रतीत होती है और समाज में एक ऐसी चर्चा की मांग करती है जो प्रत्यक्ष, सीधी और सीधी हो कि भविष्य में लोग कैसे अपने विश्वास को बनाए रख सकते हैं और सामान्य दिनों के साथ-साथ आपातकालीन और आपातकाल के दौरान भी सांत्वना पा सकते हैं।

ऊपर प्रस्तुत है,

भाग-2/5, धर्म पर कुछ और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है – गंभीर मुद्दे और बड़ी समस्या

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुति प्रश्न उत्तर के रूप में है और इसमें शामिल हैं: 1. शैतान और संतों पर, 2. धर्म – युद्ध भगवान और युद्ध उद्योगों का एक आसान उपकरण, 3. धर्म – विविध दृष्टिकोण, 4. धर्म – भारतीय परिदृश्य, 5. एक प्रफुल्लित करने वाला पक्ष – एक संक्षिप्त काल्पनिक कहानी, 6. एक कविता, धार्यते इति धर्मः पुस्तक से एक अंश ,

1. शैतान और संतों पर:

प्रश्न: यह खुले तौर पर कहा जा रहा है कि तथाकथित शैतान और संत एकमत हैं और एक ही स्थिति, एक ही भविष्य की ओर इशारा कर रहे हैं, जो चिंताजनक, अशांत और खतरनाक है, और निश्चित रूप से चल रही विश्व घटनाएं क्या संकेत देती हैं?

तथाकथित शैतानों का कहना है कि धरती पर हालात इतने खराब हो गए हैं कि उस पर रहना मुश्किल हो गया है और धरती लंबे समय तक सात सौ करोड़ से ज़्यादा की मानव आबादी का बोझ नहीं उठा सकती। अगर धरती को टिकाऊ बनाए रखना है तो कम से कम नब्बे प्रतिशत मानव आबादी को खत्म करना होगा, ताकि धरती पर सिर्फ दस प्रतिशत आबादी बचे यानी लगभग सत्तर करोड़ लोग।

संत जनों को सांत्वना देते हुए कह रहे हैं कि कलयुग समाप्त होने वाला है और सतयुग आने वाला है, जिसमें सब कुछ सही अनुपात में होगा जैसे वन और वृक्ष क्षेत्र सैंतीस प्रतिशत होगा, जल निकाय (महासागर को छोड़कर), कृषि भूमि, खुला क्षेत्र (रेगिस्तान और दलदल, भूभाग और घाटी आदि) और आवासीय क्षेत्र बराबर अनुपात में होंगे यानी लगभग पंद्रह प्रतिशत प्रत्येक जो उस समय पृथ्वी पर रहने वाले तैंतीस करोड़ लोगों को स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करेगा। उस समय हर व्यक्ति खुद को देवता जैसा महसूस कर सकता है।

अगर हम शैतान और संतों के संस्करणों की तुलना करें तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि संत आने वाले दिनों में घटनाओं के और भी भयावह मोड़ की ओर इशारा कर रहे हैं। तो सवाल यह है कि इन तथाकथित शैतान और संतों की हिम्मत कैसे हुई कि वे ऐसा कह सकें, क्या वे खुद को दुनिया में इतनी बड़ी विनाशकारी घटना के योजनाकार, अपराधी और निष्पादक के रूप में माना जा सकता है? क्या आप कृपया पहले यह

बता सकते हैं कि किसे संत और शैतान माना जा सकता है, उनकी सोच क्या हो सकती है और शैतान के काम करने के तरीके और साधन क्या हो सकते हैं?

उत्तर: ऐसा कहा जाता है कि संत और साधु, शैतान (राक्षस और शैतान) पाताल लोक के लोग हैं, जो खुद को सभी धर्मों से ऊपर मानते हैं और अपनी सोच के अनुसार धर्म का उपयोग और दुरुपयोग करते हैं। ये संत और साधु, शैतान (राक्षस और शैतान) अपने तरीके और शैली से सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं और वे सभी चीजें प्राप्त करते हैं जो प्रकृति प्रदान करती है (प्रकृति भेदभाव नहीं करती है; यह सभी के साथ समान व्यवहार करती है)। हिंदू शैतान, यहूदी शैतान, ईसाई शैतान, बुद्ध शैतान, जैन शैतान, मुस्लिम शैतान आदि जैसा कोई शब्द नहीं है। शैतान शैतान हैं, वे जाति पंथ और रंग, नस्ल, क्षेत्र और धर्म से परे हैं, संतों के साथ भी ऐसा ही है। इन संतों और साधुओं, राक्षसों और शैतानों की सोचने की प्रक्रिया पूरी तरह से अलग है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी कार्यशैली और जीवनशैली है।

जिसे हम सामान्यतः शैतान और यहां तक कि संत के रूप में देखते हैं और मानते हैं, वह या तो अधोलोक (संतों और शैतान) से निकले हुए लोग हैं या फिर केवल एक प्रतिकृति, नकल मात्र हैं, अन्यथा एक चरमोत्कर्ष निकट आ रहा है, जहां भगवान या ईश्वरीय लोग केंद्र में आ रहे हैं और शैतान और संतों दोनों को खेल के मैदान में ला रहे हैं।

आमतौर पर शैतान को वायरस (घरे में महत्वपूर्ण सूचना संसाधन) की तरह कहा जा सकता है, जो आपके और आपके स्वभाव के बीच एक अवरोध पैदा करता है। शैतान वह है जो आपको शराब, धन, हथियार की शांत अवस्था में रखना पसंद करता है और आपको अनियंत्रित रखता है (अनियंत्रित का अर्थ है कोई उचित कारण/उत्सावे का न होना, या बिना किसी नियंत्रण या सीमा के होना। इसका अर्थ अश्लील, अश्लील या यौन उत्तेजना पैदा करना भी हो सकता है)। शैतान आपको शांत करने वाली दवाओं की ओर आकर्षित करता है और आपको लुभाने के लिए ये सब करता है और फिर किसी तरह या किसी भी तरह आपको शांत अवस्था में रखना चाहता है ताकि आपको उसका आज्ञाकारी सेवक बनाए रखा जा सके जिसे शैतान कहा जा सकता है।

कहा जाता है कि शैतान सभी प्रकार की चालबाजियों और चालाकी से ऐसा कर रहा है, जिसमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सुंदर ढंग से लिपटे अर्थ के माध्यम से शोर को बढ़ावा देकर सभी का जीवन दयनीय बनाना, तथाकथित आधुनिक कमोड शैली के शौचालयों के माध्यम से अपच/कब्ज को बढ़ावा देना, हममें से प्रत्येक को एक ऑटोमोबाइल, एक घर, एक कंप्यूटर और एक मोबाइल का मालिक बनाकर तथाकथित आराम और मन की शांति को बढ़ावा देकर ऊर्जा (पेट्रोलियम उत्पाद और जीवाश्म ईंधन) के उपयोग को बढ़ावा देना और आराम और विलासिता के लालच में परिरक्षक मिश्रित पैकेज्ड भोजन की खपत को बढ़ावा देना शामिल है। ये सभी चीजें शैतान द्वारा लोगों को प्रकृति और मूल स्व से दूर रखने के लिए की जा रही हैं ताकि वे आपको अपने कब्जे में रख सकें। ऐसा कहा जाता है कि यदि लोगों का एक बड़ा हिस्सा

ऐसे नियमों और विनियमों का पालन करता है और दो से तीन पीढ़ियों तक ऐसा करना जारी रखता है तो उनकी सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा जा सकता है।

वे कहते हैं कि शैतान का असली चेहरा कोई नहीं देख सकता। शैतान आंतरिक दुनिया के उन सदस्यों को कहा जा सकता है जो अपनी शक्ति पर विश्वास करते हैं, कहते हैं कि ईश्वर मौजूद है – लेकिन ईश्वर/देवी हमेशा उन लोगों का साथ देते हैं जिनके पास शक्ति है, ताकत है, जिनके पास माया (धन – साधन, संसाधन) है और जिनका माया के रूपों (मीडिया, पैसा, बाजार, बैंक और बाज़ार) पर नियंत्रण है।

ये अन्तर्राष्ट्रीय लोग साधु-संतों को निकम्मे, मूर्खों का समूह कहते हैं – ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय लोगों में यह बात आम है कि यह पृथ्वी इतनी जनसंख्या का बोझ नहीं उठा सकती, गाजर की तरह बढ़ती इस जनसंख्या ने गंदगी फैला दी है, इतनी बकवास मचा दी है कि आराम से रहना मुश्किल हो गया है।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि इस जनसंख्या की एक बड़ी संख्या को समाप्त कर दिया जाए, ताकि मनुष्य, पशु-पक्षी, मछलियाँ और मत्स्यपालन की जनसंख्या सीमित रहे और संसाधन असीमित हो जाएँ। प्रकृति में जीवधारी ही जीवों के लिए भोजन हैं (जीव – जीवस्य भोजनम्), लेकिन मनुष्य ने अपने आप को इससे ऊपर उठा लिया है – आज मनुष्य को खाने वाला कोई नहीं बचा है, इसीलिए मनुष्यों की जनसंख्या इतनी बढ़ गई है।

अगर इस मानव प्रजाति में बुद्धि होती तो ये जनसंख्या को नियंत्रित कर लेती, लेकिन ये लोग पागल हैं – इनके नेता सब पागल हैं, ये अपनी जनसंख्या बढ़ा रहे हैं, और अगर पृथ्वी को बचाना है तो इन और इन जैसे पागलों को खत्म कर देना चाहिए और सिर्फ वे लोग जिनके पास पैसा है, जो हमारी व्यवस्था से जुड़े हैं, जिन्होंने जीवन में कुछ हासिल किया है, जो सक्षम हैं, सक्षम हैं, उन्हें ही जीवित रहने का अधिकार है, बाकी सबको मर जाना चाहिए या मार दिया जाना चाहिए जैसे कीड़े-मकोड़े, मच्छर, मछली या मुर्गी। आंतरिक जगत के इन वैश्विक सदस्यों में यह बात आम है कि भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान, चक्रवातों का जनसंख्या पर कोई खास असर नहीं पड़ता और परमाणु बम भी हमारे लिए खतरा बन सकते हैं – इसीलिए ऐसे तरीके खोजने जरूरी हैं जिनसे बहुसंख्यक लोग मारे जाएं।

कहा जाता है कि ये लोग प्रयोग कर रहे हैं कि यदि बड़े शहरों का तापमान 50 डिग्री से ऊपर चला जाए तो क्या होगा, यदि खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों और पानी में प्रदूषण बढ़ जाए तो क्या होगा, यदि कुछ देशों में वायरस और बैक्टीरिया से बीमारियां फैलती हैं तो क्या होगा, यदि जंगलों में आग लगा दी जाए और उन्हें लंबे समय तक जलने दिया जाए तो क्या होगा, यदि कुछ बड़े शहर लंबे समय तक धुएं/धुएं की चपेट में रहे तो क्या होगा, क्या इसके लिए जंगलों की संख्या कम करना जरूरी है, क्या उपयोगितावाद, उपभोक्तावाद और तथाकथित विकास के प्रेरक नारे काम आएंगे? क्या डीएनए बीमारियों से लड़ पाएगा? आनुवंशिक दवाओं को पेश करके डीएनए/आरएनए में हेरफेर करने के बारे में क्या, फिर लोगों के बीच

पहले से मौजूद धार्मिक, नस्लीय और क्षेत्रीय विभाजन को बढ़ावा देने और समुदायों को एक नया विश्व युद्ध शुरू करने के लिए उकसाने के बारे में क्या? यह आश्चर्य की बात है कि ये (शैतान) इन सभी गतिविधियों से कमाते रहते हैं और कहा जाता है कि वे वैभवशाली जीवन जी रहे हैं और उन्हें शासन करने के लिए पैदा हुए लोग मानते हैं।

प्रश्न: यह अजीब और भयावह लगता है, अब क्या आप संतों और उनकी विचार प्रक्रिया तथा चीजों/घटनाओं को वास्तविक रूप देने के उनके तरीकों के बारे में कुछ बता सकते हैं?

उत्तर: संत कह रहे हैं कि कलयुग (वर्तमान युग) का प्रभाव जिसे अंधकार युग या काला युग या मशीन युग भी कहा जाता है

(काल- पुर्जा युग) या कलयुग या काल-काली का युग शुरू होता है।

ऐसा कहा जाता है कि अंधकार युग के आगमन के साथ ही सभी रात्रिकालीन उल्लू, बैटमैन, स्पाइडरमैन, शिकारी, डाकू, चोर, मोहिनी, जादूगर, डार्क वेब के संचालक, धूर्त कलाओं, काले जादू और छद्म विज्ञान के स्वामी तथा अन्य प्राणी और प्रचारक जो सामान्यतः अंधेरे में काम करते हैं, सक्रिय हो गए और अपनी गतिविधियां शुरू कर दीं।

जबकि ऐसा कहा जाता है कि कलियुग के आते ही सभी ऋषि-मुनि अपने पैरों पर खड़े हो गए और अपने आपको एकांत और प्रार्थना में समर्पित कर दिया तथा आम लोग ऋषियों-मुनियों के उचित संरक्षण और मार्गदर्शन से वंचित होकर चालाक कलाओं और काले जादू के उस्तादों की ओर आसानी से आकर्षित हो गए और अंधकार के प्रभाव में आकर खुद को बिगाड़ लिया और खुद को (धन, शराब, जुआ, शेयर बाजार, ड्रग्स और नशीले पदार्थों, वेश्यावृत्ति और अश्लीलता आदि का) लुटेरा बना लिया और बैल, भैंस, बकरा (बकरा) आदि मनुष्यों सहित अन्य की अकारण बलि देने लगे, जिसके बदले में उन्हें अकल्पनीय कष्ट और दंड (गुलामी जैसी सजा) मिला। इन सभी वर्णित कार्यों में फिएट करेंसी का उपयोग अधर्म का कार्य कहा जा सकता है और कोविड के प्रसार के दौरान दुनिया भर में लॉकडाउन को अधर्म की आग का बिंदु और पराकाष्ठा कहा जा सकता है।

अब, संत पुनः प्रकट हो गए हैं और कह रहे हैं कि जब पाप का घड़ा लबालब भर जाता है तो वह टूट जाता है या फूट जाता है, जबकि जब पुण्य का घड़ा लबालब भर जाता है तो उसमें एक पौधा उग आता है और उसमें वृद्धि होती है, इसलिए जो लोग अच्छे इरादे, अच्छे आचरण वाले हैं और अच्छे कर्म करने में लगे हैं, जो प्रकृति से प्रेम करते हैं, वे ही जीवित रहेंगे (कलयुग के इस अशांत समय में) और नए युग, स्वर्ण युग में प्रवेश करेंगे।

प्रश्न: शैतान द्वारा कही जा रही बातों की सराहना की जा सकती है, क्योंकि शैतान ही वास्तव में इसमें शामिल होता है और अपने सभी कार्य या दुष्कर्म करता है, जिसे वह सही समझता है, लेकिन संतों के बारे में क्या, जो अपनी कही गई बातों के प्रति इतने आश्वस्त होते हैं?

उत्तर: ऐसा इसलिए है क्योंकि संत प्रकृति को शैतान और धनवानों-राजाओं, राजाओं-रानियों, पुजारियों-पंडितों सहित किसी से भी अधिक समझते हैं, और इसी कारण संत यह विश्वास करते हैं कि:

" कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत। अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूँ ॥4 - 7॥

मोक्ष के लिए संतों का विनाश की ओर एक शैतानी दस्तावेज। धर्म की स्थापना के लिए असंभव युगे युगे. ॥4-8 ॥ “

हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, संपूर्ण विश्व), जब भी धर्म के प्रति पश्चाताप / अपराध / गिरावट / बेहोशी / उदासी / आलस्य / पश्चाताप / पश्चाताप होता है, तो मैं धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, संतों, साधुओं और आम पुरुषों / महिलाओं की रक्षा के लिए, दुष्टों / बुरे काम करने वालों के विनाश के लिए और युगों में संभव धर्म संस्थानों (धार्मिक संस्थानों) की पुनर्स्थापना के लिए खुद को पुनर्जीवित करता हूँ।

[भारत शब्द का उल्लेख अर्जुन के लिए किया गया है, जो बुद्धिमान, प्रबुद्ध और महान भारत नामक पृथ्वी का वंशज है। यहां (गीता में) भारत शब्द का प्रयोग इस भूमि के टुकड़े के लिए नहीं किया गया है, जिसे अब भारत-हिंदुस्तान भी कहा जाता है]

संत कहते हैं कि, यदि हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ हमारे दैनिक व्यवहार में) तो हम आश्वस्त हो सकते हैं कि बड़े पैमाने पर मंथन/परिवर्तन आने वाले हैं।

सबसे सरल तरीके से कहें तो, जब बच्चे/लोग दिन में खेलते हैं तो यह स्वाभाविक है कि उस स्थान पर गंदगी जमा होगी और यह भी उतना ही सामान्य है कि बड़े-बुजुर्ग (आमतौर पर माता-पिता घर की सफाई में शामिल होते हैं, समाज/सरकार समाज की सफाई में शामिल होती है ताकि बच्चे/लोग फिर से खेल सकें। ऐसे कृत्यों में माता-पिता और बड़े-बुजुर्ग उन लोगों को दंडित करते हैं जो अनावश्यक गंदगी करते हैं और निर्दोषों को परेशान करते हैं ताकि उस व्यवस्था को बहाल किया जा सके जो घर/समाज/देश की स्वच्छता को लंबे समय तक बनाए रख सके। यह सब इस प्रतिबद्धता के साथ है कि हम फिर से सफाई करेंगे ताकि खेल चलता रहे, जीवन चलता रहे। संत कहते हैं कि भगवान के साथ भी ऐसा ही है।

2. धर्म – युद्ध सरदारों और युद्ध उद्योगों का एक आसान उपकरण:

प्रश्न: ऐसा कहा जाता है कि धर्म को कम से कम अपने अनुयायियों (यदि सभी को नहीं) को एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करना चाहिए, तो सवाल यह उठता है कि धर्म स्वयं युद्ध सरदारों और युद्ध के व्यापारियों का एक आसान उपकरण कैसे बन गया?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

i. धर्म (मूल धर्म) सर्वांगीण है और जीवन के सभी लेन-देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, धर्म आधार है इसलिए धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थानों) से समाज की सभी बुनियादी आवश्यकताओं की देखभाल करने के लिए कहता है, लेकिन धर्म न तो खुद को व्यापार में शामिल करता है और न ही व्यावसायिक संस्थाओं का समर्थन/पक्षपात करता है।

धर्म किसी राजनीतिक दल, शासक या विस्तारवादी का अनुचर, प्रचारक या अग्रगामी संगठन नहीं बनता। धर्म कभी किसी को यह वर्दी पहनने या वह बाल कटवाने, यह शास्त्र पढ़ने और वह संरचना देखने, ये उपदेश सुनने और वह प्रार्थना रटने, इस तरह झुकने और उस तरह झुकने के लिए नहीं कहता, धर्म मूल रूप से जीवन को स्वस्थ और पवित्र बनाने में लगा हुआ है।

अफसोस! लेकिन तथ्य यह है कि ये सभी समवर्ती धर्म – हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई – चाहे कितने भी समग्र होने का दावा करें, इनमें से कोई भी धर्म अपने अनुयायियों को भी समान मंच पर, स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करने में सक्षम नहीं है।

आश्चर्य की बात है कि प्रत्येक धर्म का प्रत्येक उपदेशक और पुजारी कहता है कि उनका ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली है और सर्वोच्च तथा अभिन्न है, फिर भी ऐसे मौलवी/पुजारी यह मान लेते हैं कि उनका तथाकथित ईश्वर उनके पड़ोसियों को आशीर्वाद नहीं देगा जो इस ईश्वर को दूसरे नाम से पुकारते हैं और अलग शैली और स्वरूप में प्रार्थना करते हैं। इसके अलावा प्रत्येक धर्म के ऐसे मौलवी/पुजारी पूरे विश्वास के साथ कहते हैं कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर निश्चित रूप से उनके पड़ोसियों तक नहीं पहुंचेगा जो उनके ईश्वर के संस्करण का सम्मान नहीं करते, उन्हें नहीं समझते और उनका पालन नहीं करते और निश्चित रूप से उस व्यक्ति तक नहीं पहुंचेंगे और उसे आशीर्वाद नहीं देंगे जो उनके ईश्वर के संस्करण से अनभिज्ञ है और ऐसे सभी लोग जो समान भावनाओं को प्रतिध्वनित नहीं करते उन्हें नास्तिक या गैर-धार्मिक या यहां तक कि शैतान घोषित किया जा सकता है और वे भयंकर सजा के हकदार हैं?

ii. अनादि काल से यह एक पवित्र कहावत और व्यापक समझ है कि स्वस्थ और खुशहाल तरीके से जीवित रहने के लिए, "ईश्वर के प्रति समर्पण करो और जिस तरह से तुम चाहते हो, उसी तरह प्रार्थना करो, और अपने पड़ोसी से उस तरह से प्रेम करो जिस तरह से वे हकदार हैं और तुम उन्हें उपकृत कर सकते हो"।

यह समझ इतनी स्वाभाविक और सामान्य थी कि इसने शाश्वतता (संस्कृत में सनातन) प्राप्त कर ली और इस प्रकार यह आज भी कम से कम संतों, साधुओं और आम लोगों के बीच धर्म के मूल सिद्धांत के रूप में जारी है।

iii. इस युग में (कलयुग के आरम्भ में) समस्या तब आरम्भ हुई जब मूल सिद्धांतों में भिन्नताएँ आने लगीं, जैसे; "ईश्वर के समक्ष समर्पण करो, लेकिन जो नाम बताया गया है, वही बोलते रहो और पुजारी द्वारा बताए गए तरीके से ही प्रार्थना करो तथा अपने पड़ोसियों से प्रेम करो, यदि पड़ोसी तुम्हारा अनुसरण करते हैं, अर्थात् वही नाम लो और वही प्रार्थना करो (अर्थात् यदि वे दोनों एक ही धर्म के हैं)।

इसके अलावा, साथी शिष्यों को पहचानने के लिए विशेष वस्त्र पहनना या पूरी तरह से वस्त्र उतार देना, मुंह को ढकने के लिए मास्क पहनना या पूरा चेहरा ढककर सार्वजनिक स्थानों पर जाना, शरीर पर निशान या निशान न लगाना, सिर मुंडवाना या बाल बिल्कुल न कटवाना, विशेष टोपी, पगड़ी पहनना इन सभी धर्मों में आम बात हो गई।

इसके अतिरिक्त, चूंकि प्रत्येक व्यक्ति एक उद्देश्य लेकर पैदा होता है, ईश्वर से प्रार्थना करने/उनके प्रति समर्पित होने तथा अपने पड़ोसी से प्रेम करने का उद्देश्य, इसलिए अनुयायियों का यह कर्तव्य और दायित्व दोनों है कि वे अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम फैलाएं।

अगर आपका पड़ोसी आपके जैसा नहीं है, तो किसी भी तरह से या हर तरह से अपने पड़ोसी को अपने जैसा बना लें, क्योंकि अपने पड़ोसी से प्यार करना एक धार्मिक आज्ञा है। यह प्रथा बुद्ध के बाद से ही शुरू हुई है और पहले से ही चली आ रही है।

4. चूंकि इस छोटी सी दुनिया में हर कोई पड़ोसी कहा जा सकता है, इसलिए धर्म के अनुयायियों को धर्म को पूरी दुनिया में फैलाना चाहिए। चूंकि प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज है, इसलिए ऐसे ईश्वर के आदेश का पालन करने के लिए, यानी अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए, किसी को इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि उसके लिए क्या स्वर और भाव, रीति-रिवाज और तरीके, या संघर्ष, लड़ाई या युद्ध की आवश्यकता हो सकती है या अपने पड़ोसी को गुलाम बनाने, जबरन भीख मांगने और वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करने की आवश्यकता हो सकती है ताकि वे प्रेम के योग्य बन सकें। भले ही इसके लिए गाली-गलौज और कारण की आवश्यकता हो,

यद्यपि ये सभी धर्म स्वतंत्रता की बात करते हैं, ताकि वे धर्म परिवर्तन कर सकें और अपने पड़ोसियों से प्रेम कर सकें, लेकिन ये धर्म अपने ही सदस्यों से स्वतंत्रता छीन लेते हैं और ऐसा वे भय के कारण करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनके अपने अनुयायी/सदस्य धर्म परिवर्तन न कर लें।

ये धर्म न केवल अपने ही समुदाय के सदस्यों को सर्वव्यापी, अगम्य और अदृश्य देवताओं के नाम पर कठपुतली या मोहरा मानते हैं, बल्कि उन पर पर्याप्त आचार संहिता और आंखों पर पट्टी भी बांध देते हैं, मानो धर्म के सदस्य किसी सेना का हिस्सा हों और इस धरती पर किसी गुप्त मिशन पर हों।

इसके अलावा, ये सभी धर्म जानबूझकर या अनजाने में अपने समुदाय में पुरुष और महिला के बीच पर्याप्त विभाजन पैदा करते हैं और न केवल महिलाओं को कमतर आंकते हैं, बल्कि यह भी मानते हैं कि महिलाएं स्वतंत्रता नहीं पा सकतीं, इसलिए उन पर निगरानी रखी जानी चाहिए और उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

इस परिदृश्य में एक समस्या तब उत्पन्न होती है जब अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए प्रसिद्ध धर्म (बेशक उन्हें अपने धर्म में परिवर्तित करने के बाद) एक दूसरे से भिड़ जाते हैं, जिसका स्वाभाविक परिणाम मौखिक झड़प, युद्ध और विश्व युद्ध के रूप में सामने आता है, और इस स्तर पर ये धर्म युद्ध सरदारों और युद्ध उद्योगों का एक आसान उपकरण बन गए हैं, जिसे दुनिया ने भी देखा है।

3. धर्म- विविध दृष्टिकोण:

3.A. इसके अतिरिक्त, कम से कम बौद्ध धर्म से लेकर आगे तक सभी धर्म अपने पड़ोसी से प्रेम करने तथा इस प्रकार के प्रेम से संबंधित अन्य गतिविधियों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे जीवन के मूलभूत मुद्दों पर ध्यान देना भूल गए हैं या उनकी ओर ध्यान देने की जहमत नहीं उठाई है, जो जीवन में आते हैं तथा जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जैसे अर्थव्यवस्था, रोजगार, मनोरंजन, ऊर्जा, पर्यावरण, नैतिकता, शिष्टाचार, प्रदूषण, जनसंख्या, गरीबी, वेश्यावृत्ति, सफाई, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य, जबरन भीख मांगना तथा गुलामी।

3. बल्कि इनमें से अधिकांश धर्म स्वयं ही वृक्षों की वृद्धि को रोकने के अप्राकृतिक कृत्य में शामिल हो गए, जैसे कि उन्हें बोनसाई बना देना, बैल को बधिया करके उसे बैल बना देना, या पुरुष और महिला को (शारीरिक या मानसिक रूप से) बधिया करके उन्हें बौना, ट्रांसजेंडर या ब्रह्मचारी बना देना।

इसके अलावा ये धर्म बकरी, भैंस, गाय, ऊँट और मानव शिशु की बलि देने में उलझ गए, तथा यह बुनियादी बात भूल गए कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर इरादे को जानता है और उसे ऐसे बलिदानों से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता।

3. A.ii. जब छोटे बच्चों की अनुष्ठानिक बलि कुछ क्षेत्रों में प्रचलित थी, तब यह प्रश्न उठता है कि इस प्रकार की बलि से स्वयं को तथा छोटे बच्चों को कैसे बचाया जाए। इस समस्या का समाधान इस प्रकार की बलि की मुख्य शर्त से निकला कि “बलि की वस्तु में कोई शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए अन्यथा अपेक्षित प्रसन्नता के स्थान पर देवता का श्राप मिलेगा”, और इस प्रकार पुरुषों में खतना तथा महिलाओं में FGM-महिला जननांग विकृति की शुरुआत हुई (वर्तमान में - वर्ष 2024 तक, विश्व में FGM के कम से कम बीस करोड़ महिला मामले हैं)। इन कृत्यों [पुरुष खतना तथा FGM (महिला जननांग विकृति)] की सत्यता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज भी कई पुजारी ऐसे पुरुषों और महिलाओं की ओर से प्रार्थना करने से यह कहते हुए मना कर देते हैं कि उनमें शारीरिक दोष हैं और इसलिए वे स्वयं या किसी अन्य द्वारा उनकी ओर से प्रार्थना करने के योग्य नहीं हैं।

3.बी. यह आश्चर्यजनक हो सकता है, लेकिन तथ्य यह है कि हिंदुओं से लेकर यहूदियों तक, बौद्धों से लेकर जैनों तक, ईसाइयों से लेकर मुसलमानों तक, सिखों से लेकर बहाई तक किसी भी धर्म ने समुदाय में सामान्य क्षेत्र की सफाई के तरीकों और सफाई के प्रावधान के बारे में बात नहीं की है? किसी भी धर्म ने यह नहीं समझा है कि, "सामान्य क्षेत्र की सफाई कौन करेगा, वह ऐसा क्यों करेगा, इसके साधन क्या होंगे? इसके साथ क्या पारिश्रमिक और सम्मान जुड़ा होगा? यदि शारीरिक सफाई उचित नहीं है, जो दिखाई देती है और कुछ हद तक करना आसान है, तो मन और हृदय की माध्यमिक सफाई और तृतीयक सफाई के बारे में क्या कहा जा सकता है?

3.बी. इन सभी धर्मों में इस तरह की कमी के कारण, जो हुआ वह यह कि इसके सदस्य बाजार के राक्षसों और चालाक कला के उस्तादों के आसान शिकार बन गए। इन सभी धर्मों की इस बुनियादी कमी के कारण, इसके सदस्य बाजार की ताकतों, पाखंडियों (अंदर से डरपोक लेकिन साहसी होने का दिखावा करने वाले) और स्पष्टता की कमी के लिए आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले या हेरफेर किए जाने वाले पाए गए। हालाँकि इन सभी धर्मों ने शांति का दावा किया है, लेकिन अंततः मानवता को प्रकृति की क्षमता से अधिक टुकड़ों में काटने के अपराध में भागीदार बन गए हैं।

3.सी. ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग सभी धर्म आधुनिक दिनों की बीमारियों के हमले के आगे झुक गए हैं और हाल के लॉकडाउन के हमले को बर्दाश्त नहीं कर सके, और अपने विश्वासियों/अनुयायियों को कठिन परिस्थितियों के दौरान अपने स्वयं के तरीके खोजने के लिए मझधार में छोड़ कर निराश कर दिया है और उन्हें एक अद्वितीय संकट के दौरान मौत के नृत्य का सामना करने के लिए अकेला छोड़ दिया है।

स्थिति तब और भी चिंताजनक हो जाती है जब लोगों को लगता है कि प्रार्थना के कई महत्वपूर्ण स्थलों पर भी ताला लगाया जा सकता है और वे भी आपातकालीन स्थिति में सांत्वना नहीं दे सकते। जब वेटिकन, मक्का-मदीना, यरुशलम जैसे आस्था-पूजा के लगभग सभी केन्द्रों पर ताले लगे हैं तो आम लोगों की आस्था कैसे बची रहेगी?

ये वही धर्म हैं जो अपने अनुयायियों से न केवल अपनी आय में हिस्सा देने को कहते हैं, बल्कि विशेष पोशाक/वर्दी/पोशाक पहनने, अद्वितीय और आसानी से पहचाने जाने योग्य/पहचानने योग्य चेहरे और बाल रखने (जैसे कि आस्तिक/अनुयायी किसी बटालियन या व्यापारिक संगठन या बच्चों के स्कूल का हिस्सा हों) बल्कि जिस धर्म से वे जुड़े हैं, उससे जुड़े नाम, स्थान और गौरव को बचाने के लिए अपनी जान देने को भी कहते हैं।

3. ऐसी स्थिति में, जहां हर धर्म अपने वर्तमान स्वरूप में हाल की परिस्थितियों से निपटने में अक्षम साबित हुआ है, अब किसी का भी अपने आप को उसका ठेकेदार बताकर यह कहना कि उसका धर्म सर्वश्रेष्ठ है, और उसके नाम पर अपनी जान जोखिम में डालना या दूसरों की जान लेना बेकार और मूर्खतापूर्ण है।

जब हम लगभग सभी धार्मिक दक्षिणपंथियों द्वारा सभी प्रकार के भेदभाव और विचलन का उपदेश देते हुए देख रहे हैं, तो यह एक बड़ी चिंता का विषय बन जाता है, खासकर तब जब दुनिया कुछ साल पहले की तरह बहुत तेज गति से घटनाओं को देख रही है, पूरे विश्व में किसी ने भी अपने अजीब सपने में भी लॉकडाउन और उसके बाद के कार्यों के बारे में नहीं सोचा था, इसलिए अगर हममें से कुछ लोगों को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुए नरसंहार की पुनरावृत्ति का विचित्र एहसास हो रहा है और यह प्रारंभिक क्षेत्रीय, धार्मिक और क्षेत्रीय दंगों के माध्यम से पुनः सक्रिय हो सकता है, नरसंहार के पूर्ण घातक संस्करण, इकोसाइड (पर्यावरण हत्या), एथनोसाइड (जातीय हत्या- विशिष्ट कीटनाशक, कीटनाशक और शाकनाशी के साथ) या यहां तक कि यूएफओ, क्षुद्रग्रहों और एलियंस के हमलों की अफवाहों से भी पर्याप्त दहशत पैदा होनी तय है।

इस भयावह स्थिति में क्या यह हमारे लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम आगे आएँ और भय, घृणा और शत्रुता पैदा करने वाले इन बुरे धार्मिक प्रचारकों पर भरोसा करने के बजाय पुनरुत्थान के लिए सामूहिक रूप से अपना पूरा प्रयास करें।

4. धर्म – भारतीय परिदृश्य:

प्रश्न: चूंकि हम सामान्य रूप से धर्म और विशेष रूप से भारत में इसके समावेशन के बारे में बात कर रहे हैं, तो क्या आप हमें कुछ अस्पष्ट विचार देंगे ताकि यह पता चल सके कि हमारे प्रयास कहां होने चाहिए अर्थात् हम कहां चूक गए?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

i. अनगिनत खोजों में पाया गया है कि खुशी ही जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति है और खुशी को वास्तविकता बनाए रखने के लिए सुरक्षा और संरक्षा का सुरक्षित और संरक्षित होना ज़रूरी है। सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और न्याय है। दूसरी सुरक्षा भोजन, पानी, आश्रय और कपड़े की है, तीसरी सुरक्षा ऊर्जा, मनोरंजन, पर्यावरण और स्वास्थ्य और शिक्षा की है, और फिर लाभकारी रोज़गार और सम्मानजनक जुड़ाव की है। भारत जो कि भारत है, अपने लोगों और भारत पर निर्भर लोगों को शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने में चूक गया है।

धार्मिक मोर्चे पर भारत मूल धर्म का पालन करता था, जिसे अंग्रेजी में शाश्वत-शाश्वत या संस्कृत में सनातन/शाश्वत कहा जा सकता है, वह आदि धर्म था/है और रहेगा।

कारण चाहे जो भी हो, लेकिन चूंकि भारत अपनी ताकत बनाए रखने में विफल रहा और विभिन्न आंतरिक उदासीनताओं और बाहरी आक्रमणों के आगे झुक गया, इसलिए कई नए धर्म यहां आए और भारत के अपने बच्चों को नए पाए गए धर्म में परिवर्तित करके यहां विकसित हुए। फिर ये नए पाए गए धर्म सनातन धर्म (शाश्वत/शाश्वत/जावेद/द्वामी) को पहले सनातन धर्म के रूप में और फिर हिंदू धर्म के रूप में ब्रांड करने में सक्षम हो जाते हैं (भले ही गीता और/या अन्य धर्मग्रंथों में ऐसा कोई उल्लेख न हो) और फिर धर्म के अपने संस्करण के अनुयायियों के बीच सनातन धर्म के साथ दुश्मनी पैदा करते हैं। भारत पर काफी कीचड़ उछाला गया है और गुलामी सहित काफी कठिनाइयां झेली गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप दुर्भाग्यवश भारत के अपने बच्चे आपस में ही लड़ रहे हैं, क्योंकि वे अपने दुश्मन नंबर एक हैं और यह भूल रहे हैं कि वे उनके अपने भाई-बहन हैं।

यह आंतरिक कलह युद्ध सरदारों और युद्ध उद्योगों को हमारे खर्च और दुखों पर अपना लाभ कमाने में मदद कर रही है, इसलिए हमें (भारत को) (विशेष रूप से हिंदुओं और मुसलमानों के बीच) बदनामी के बजाय किसी भी चीज़ से पहले भौतिक सुरक्षा को बेहतर बनाने की आवश्यकता है, जिसके लिए जैसा कि वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पुस्तक में विस्तार से प्रस्तुत किया गया है कि एक चौथाई आबादी को सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं की देखभाल करनी चाहिए, जिसमें से एक चौथाई को चौबीसों घंटे सुरक्षा और संरक्षा के प्रावधान में शामिल किया जाना चाहिए। इसका मतलब है कि लगभग आठ करोड़ युवाओं (पुरुष और महिला) को समाज द्वारा ही सुरक्षा प्रदान करने के लिए शामिल किया जाना चाहिए। बुनियादी मानसिकता के अनुसार महिलाएं आंतरिक सुरक्षा का प्रभारी होने का फैसला कर सकती हैं जबकि पुरुष बाहरी सुरक्षा का फैसला कर सकते हैं और तदनुसार मार्शल आर्ट और हथियार में प्रशिक्षित हो सकते हैं।

ii) यदि हम आदिवासियों (आदिवासी - मूल निवासी - जो यहां प्रारंभ से ही हैं) पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि जनजाति के प्रत्येक सदस्य को उन सभी पहलुओं का ध्यान रखने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है जिनका सामना पुरुष और महिलाएं अपने पूरे जीवन में कर सकते हैं, चाहे वह सुरक्षा हो, व्यापारिक लेन-देन हो, प्रशासन हो, पुरोहिताई हो, न्यायपालिका हो या सहायक नौकरियां हों।

कहा जाता है कि आदिवासी-मूलवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या इन मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब यह संरचना जीर्ण-शीर्ण होती दिखाई दे तो मूल-आदिवासियों के पास जाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है और उनसे पुनः संकेत/मार्गदर्शन/दिशा लेना कि कैसे इन (आदिवासियों) ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आश्रय) का ध्यान रखा है और कैसे अपना प्रशासन, न्याय और अपने वंश को बनाए रखा है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा-अर्चना भी की है जो उन्हें युगों से खुद को बनाए रखने के लिए परिपूर्ण बनाती है।

समाज, देश और दुनिया में दीर्घकालिक परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न गुरुओं के बीच धर्म और प्राकृतिक नियमों पर संवाद और परिणामी कार्रवाई शुरू करना समझदारी होगी। क्या हमें किसी जादू और चमत्कार के होने का इंतजार करना चाहिए या किसी नए देवता के आसमान से उतरकर हमारी समस्या का समाधान करने का? या हमें इस अवसर पर उठकर पुनरुत्थान के लिए काम करना चाहिए?

यह समय संतों और महात्माओं के लिए खुलकर योगदान देने तथा नकारात्मक मानसिकता वाले लोगों और ताकतों द्वारा दिए गए घावों को भरने का है।

iii. भारत का समग्र परिदृश्य:

निम्नलिखित कुछ मानदंड हैं जिनके द्वारा कोई भी सामान्य व्यक्ति भारत की उस जमीनी हकीकत का पता लगा सकता है, जो निश्चित रूप से अच्छी स्थिति में नहीं है तथा जिसे तत्काल सुधारने की आवश्यकता है:

इसके अलावा भारत सरकार अपने कृषि प्रधान देश में गरीब माने जाने वाले चार करोड़ किसानों को मानदेय के रूप में चार किशतों में केवल लगभग आठ हजार रुपये देती है।

ख. ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है; भारत की राजधानी दिल्ली सहित किसी भी महानगर में अनगिनत भिखारी देखे जा सकते हैं।

सी. न्याय मिलने में लगने वाला समय, भारत के विभिन्न न्यायालयों में पांच करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं, जिनमें से अस्सी हजार से अधिक मामले भारत के सर्वोच्च न्यायालय में लंबित हैं। इसके अलावा शोषण की शिकायत करने और सांत्वना पाने का कोई रास्ता नहीं बचा है (चाहे कर्मचारियों द्वारा या मालिक द्वारा या रिश्तेदारों द्वारा)।

(घ) शिक्षा, बीमारी से उबरने और अदालतों से न्याय पाने पर खर्च होने वाला धन, स्वास्थ्य और स्वस्थ आदतों, मनोरंजन और उत्सवों पर खर्च होने वाले धन की तुलना में दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है?

ई. वन और जल निकायों की स्थिति, ताजी हवा और पानी की गुणवत्ता खराब हो रही है। कॉलोनिओ, बाजार और धार्मिक स्थलों पर शोर का स्तर असहनीय स्तर तक बढ़ गया है?

(च) संत/साधु/फकीर, गुरु और पुजारी, बुजुर्ग और नेता उन पर से विश्वास खो चुके हैं, परिणामस्वरूप समाज में उनका सम्मान भी खत्म हो गया है, इसलिए वे अपने निजी जीवनयापन के लिए धन संचय करने के लिए मजबूर हैं?

छ) अपने घर से दूर किसी स्थान पर विपत्ति आने पर छोटी-मोटी सहायता (जैसे यात्रा व्यय के लिए धन) प्राप्त करने के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं है, इसी प्रकार छोटे-मोटे शोषण के लिए शिकायत करने तथा तत्काल सांत्वना पाने के लिए भी कोई साधन उपलब्ध नहीं है।

ज. विश्व की अन्य मुद्राओं की तुलना में भारतीय मुद्रा का मूल्य घट रहा है।

i. नेताओं को बार-बार अपना रुख बदलते देखा गया है।

'परिवार, समाज, योग, धर्म-निरपेक्षता, धर्मनिरपेक्षता और विश्व एक बड़ा परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम्) जैसे मूल शब्दों के अर्थ गड़बड़ा गए हैं।

क. स्थानीय स्तर पर इस बारे में कोई मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है कि हम क्या खाते हैं, हम क्या तरल पदार्थ पीते हैं, हम क्या धूम्रपान करते हैं तथा हम क्या सामग्री पढ़ते और देखते हैं, जो मूल रूप से नागरिकों, उनके समाज और देश को आकार देते हैं।

एल. स्वच्छता, मनोरंजन, आचार-विचार आदि की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियों में बहुत सुस्ती दिखाई देती है।

ऐसा प्रतीत होता है कि गरीबी, बेरोजगारी, अकेलापन, मोटापा और कुपोषण आदि को समाप्त करने के संबंध में कोई प्रयास और यहां तक कि उचित चर्चा भी नहीं की गई है।

n. चाहे कोई व्यक्ति कितनी भी चतुराई से घृणा, आतंक, दंगे की युद्ध आधारित अर्थव्यवस्था के आधार पर अपने कृत्य को उचित ठहरा ले, लेकिन तथ्य यह है कि इन युद्ध के शौकीनों और युद्ध के व्यापारियों द्वारा किए गए सभी विनाशों ने दुनिया को पशु-पक्षियों, वनस्पतियों और जीव-जंतुओं, मछलियों और मत्स्य पालन के लिए रहने योग्य नहीं बनाया है और अंत में, ये व्यवसायी लोग मनुष्य को एक जीवित रोबोट बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में समाज नियंत्रण और संतुलन स्थापित करने के लिए क्या कर सकता है ताकि हम सभी स्थायी रूप से खुशी से रह सकें?

आध्यात्मिक गुरु और अधिक आत्मनिरीक्षण करने वाले अंतर्दृष्टि और भावी दूरदर्शिता वाले लोग, सुझाव देते हैं कि एक व्यापक मंथन और "धर्म और धर्म संस्थान (धर्म और धार्मिक संस्थानों) का पुनरुत्थान" संतों की भविष्यवाणी और शैतान (शक्ति ब्लॉक) की भ्रातृहत्या/आत्मघाती कार्रवाइयों के ऊपर एक व्यवहार्य विकल्प होगा।

ऐसे गुरुओं का कहना है कि समाज में व्यापक मंथन की आवश्यकता है क्योंकि न तो पुरानी बुद्धिमता गूगल, यूट्यूब, विकिपीडिया आदि के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकती है और न ही ये नव-शास्त्रीय तकनीकें और गैजेट दादा-दादी और गुरुओं की कहानियों के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकते हैं। ऐसे गुरुओं का कहना है कि जो आम तौर पर हासिल होता है वह लय है और हमें न केवल देश स्तर पर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी लक्ष्य बनाने की आवश्यकता है (क्योंकि कोई भी नया आविष्कार/अभ्यास किसी देश की सीमाओं के भीतर सीमित नहीं हो सकता है और न ही ऐसा होना चाहिए)।

5. एक हास्यप्रद पक्ष - एक संक्षिप्त काल्पनिक कहानी :

प्रश्न: कुछ लोग पूछते हैं कि यदि प्रणाली इतनी अच्छी तरह स्थापित थी तो फिर हमारा यह पतन कैसे हुआ?

उत्तर: ऐसा कहा जाता है कि, एक समय था (लगभग तीन-चार हजार साल पहले) जब पृथ्वी पर सब कुछ काफी सीधा और ठीक चल रहा था।

एक दिन नरक से एक प्रतिनिधि भगवान के पास आया, जिसने कहा: "मेरे प्रभु, यह आप ही हैं जिन्होंने नरक और स्वर्ग का निर्माण किया है, और यह केवल आपके विवेक पर है कि हमें नरक में काम करने की अनुमति है। प्रभु के आदेश के अनुसार हम "नरक का 24×7×365 प्रबंधन" कर रहे हैं, लेकिन आपका प्रभु यह नोट करना चाहेगा कि पिछली कुछ शताब्दियों से हमें अपनी सेवाएँ देने के लिए कोई भी नहीं मिला है।

प्रतिनिधियों ने माननीय से पूछा कि ऐसा क्यों, माननीय इसे बंद करके हमें कहीं और पोस्ट कर सकते हैं? माननीय हम पर दया करें! कृपया हमें अनिश्चित काल तक ऊबने, छोड़े जाने, अयोग्य, सुस्त और एक तरह से बेकार महसूस करने से बचाएं।

उसी समय स्वर्ग से भी एक जापन प्राप्त हुआ जिसमें लंबी प्रतीक्षा लाइनों, लगातार काम करने तथा स्वर्ग के स्तर में गिरावट का मुद्दा उठाया गया।

इस पर भगवान को नरक और स्वर्ग के कर्मचारियों की दुर्दशा देखकर दया आ गई और उन्होंने कहा कि चिंता मत करो, धैर्य रखो, वे आवश्यक कार्य करेंगे।

ऐसा कहा जाता है कि भगवान ने नर्क और स्वर्ग दोनों पर कृपा की, इतना अधिक कि ऐसा प्रतीत होता है कि समस्त मानवजाति ने स्वयं को भ्रष्ट कर लिया है और इस प्रकार स्वर्ग के अयोग्य हो गए हैं और न केवल नर्क के योग्य बन गए हैं, बल्कि उन्हें पृथ्वी पर भी नर्क की तरह जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है।

धरती पर पूरा परिदृश्य पूरी तरह से बदल गया है, जहाँ एक समय धरती पर स्वर्ग था, अब धरती के हर कोने में समस्याएँ हैं। ऐसा कहा जाता है कि पिछले कुछ हजार सालों में स्वर्ग और नर्क की तालिका बदल गई है।

लेकिन अजीब बात यह है कि अब भगवान को स्वर्ग और नर्क के विपरीत रूप में दर्शाया जा रहा है, खालीपन का स्वर्ग और भीड़ का नर्क। प्रतिनिधियों ने कहा कि स्वर्ग पूरी तरह से भूली हुई चीजें बन गई हैं और अब नर्क ही घूम रहा है।

प्रश्न: मानव जाति की मुख्य समस्या क्या है?

उत्तर: गरीब कहते हैं कि अमीर खुश हैं, अमीर कहते हैं कि राजपरिवार (राजा और रानी) खुश हैं, राजा और रानी कहते हैं कि चक्रवर्ती राजा और रानी (जो अपनी प्रजा पर नीतिपूर्वक और परोपकारपूर्वक शासन करते हैं, और पूरे विश्व के विजेता हैं) खुश हैं, चक्रवर्ती राजा कहते हैं कि राजा इंद्र खुश हैं, राजा इंद्र कहते हैं कि भगवान राम खुश हैं और भगवान राम कहते हैं कि संत खुश हैं, जबकि संत कहते हैं कि खुशी, संतोष, संतुष्टि, भोज, शांति में निहित है।

कहा जाता है कि राज करने या नाम, शोहरत और ताकत पाने की चाहत ही किसी भी टकराव, लड़ाई, युद्ध और यहां तक कि विश्व युद्ध की शुरुआत होती है। यह ऐसी चाहत है जो कभी पूरी नहीं होती, जब तक कि ऐसी चाहत का फल न मिल जाए, हमेशा और अधिक पाने की भूख बनी रहती है और कभी खत्म नहीं होती, (अगर उसे धरती पर पूरा कब्जा मिल जाए तो वह अपने पंख फैलाने के लिए चांद या शुक्र की तरफ देखेगा। इसलिए यह सभी बुराइयों में सबसे बुरी और दुष्ट है।

यह विचार प्रक्रिया हमें आत्म-विनाश के अलावा कहीं नहीं ले जाती है और इन लोगों द्वारा तैयार की गई ऐसी प्रणालियों की निरंतरता को युद्धों के इन नियंत्रकों और प्रबंधकों सहित किसी के द्वारा भी सराहा नहीं जा सकता है, और इसलिए इन्हें संशोधित/सरलीकृत या समाप्त किया जाना चाहिए तथा धर्म को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए।

6. एक कविता, धार्यते इति धर्म पुस्तक से अंश

ऐसा कहा जाता है:

*खजाना पेट की भूख मिटाना है;

लक्ष्य है दिल की उलझन दूर करना,

महिमा मन के अंधकार को दूर करना है;

जिम्मेदारी है आलस्य, भय और अनुशासनहीनता को दूर करना,

इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति बांटकर शासन करता है,

मन को साफ़ करके और हृदय को शुद्ध करके,

अकेले में प्रार्थना करके, खिलाड़ियों के साथ खेलकर और साथियों के साथ पार्टी करके।

जब इनका पालन किया जाता है, तो धर्म का पालन होता है।

ऊपर प्रस्तुत है,

भाग-3/5, धर्म पर कुछ और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है – इसकी आवश्यकता क्यों है,

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुतिकरण प्रश्न उत्तर के रूप में है,

प्रश्न: यह सर्वविदित है कि, 'ईसाइयों के अनुसार प्रलय की समय-सीमा सन् 2012 में ही पार हो चुकी है तथा अब यह कभी भी आ सकती है, जबकि टोरा (यहूदियों) के अनुसार यह पीढ़ी (समवर्ती) अंतिम पीढ़ी होगी, जबकि पैगम्बर साहब के अनुसार उसके चौदह सौ वर्ष बाद दो व्यक्ति (संदेशवाहक) प्रकट होंगे, जो विश्व में शांति स्थापित करेंगे, इस पर हमारा क्या विचार है, विशेषकर तब, जब वर्तमान में चल रही विश्व घटनाएं किसी विनाशकारी घटना या सर्वनाश की ओर संकेत कर रही हों?

उत्तर: ये सभी कथन महान महाकाव्य/व्यक्तित्व से जुड़े हैं जिन्हें धार्मिक ग्रंथ या स्वयं पैगम्बरों का प्रत्यक्ष संदेश माना जाता है और इन्हें पूरी गंभीरता से देखा जाना चाहिए, क्योंकि यदि वे महान और महत्वपूर्ण न होते तो वे इतने लंबे समय तक जीवित नहीं रहते और वर्तमान में उनके बारे में बात नहीं की जाती।

किसी को भी इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि विश्व भर के ज्योतिषी भी आने वाले महीनों और वर्षों में बहुत गंभीर घटनाओं की ओर इशारा कर रहे हैं।

रामचरित मानस (गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा) में भी इसी तरह का लेखन देखा जा सकता है, जिसमें कहा गया है कि:

[' जब ज होई धर्म की हानि , रक्तसावहिं असुर आदम अभिमानी ,
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥

तो फिर तक भगवान मिश्रित शरीरा , हरहिन दयानिधि सज्जन पीरा ']

जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब अहंकारी और दुष्ट राक्षस बढ़ जाते हैं। तब भगवान विभिन्न रूप धारण करते हैं और दयालु और महान लोगों के दर्द को दूर करते हैं।"

अर्थात् जब-जब पृथ्वी पर धर्म की हानि होती है, दुष्टों और अहंकारियों का प्रभाव बढ़ने लगता है, तब-तब सज्जनों के कष्टों का निवारण करने के लिए करुणा के भंडार भगवान समय, काल और परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग रूपों में अवतार लेते हैं। अब विभिन्न संतों के अनुसार संसार को पाप और कष्टों से मुक्त करने और विश्व को धन्य करने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

कहने का तात्पर्य यह है कि स्थिति गंभीर है, लेकिन सज्जनों के लिए चिंता की कोई बात नहीं है, तथा दुष्टों/दुष्टों/राक्षसों के लिए चिंता की कोई बात नहीं है, अन्यथा वे अपने तौर-तरीके सुधार लें और भगवान के सामने समर्पण कर दें।

प्रश्न: आप क्या कहते हैं? ऊपर जो कुछ तेजी से आकार लेता हुआ दिखाई दे रहा है, उसे न केवल भयावह बल्कि अशांत, भयावह और खतरनाक कहा जा सकता है, जिसके लिए कई लोग लोगों को यह कहकर सांत्वना दे रहे हैं कि यह एक नए युग की शुरुआत है, जैसे एक बेचैन रात के बाद एक नई सुबह। क्या आप इस पर कुछ प्रकाश डालेंगे?

उत्तर: हो सकता है कि निम्नलिखित एक उदाहरण इस उद्देश्य के लिए पर्याप्त हो:

i. ऐसा कहा जाता है कि हृदय (अर्थात् प्रत्येक प्राणी में विश्वास) मस्तिष्क और शरीर के प्रत्येक भाग को रक्त (ऊर्जा देता है) की आपूर्ति करता है। हृदय द्वारा आपूर्ति किया जाने वाला यह रक्त परिणामस्वरूप मस्तिष्क को चलाता है, जो बदले में शरीर के प्रत्येक भाग की गति या गति को संभव बनाता है।

वैज्ञानिक क्षेत्र में यह कहा जाता है कि: "मन पदार्थ को गति देता है", अर्थात्, यह हमारा मन ही है जो हमारे हाथ, पैर और पूरे शरीर (पदार्थ) की गति/आंदोलन करता है, जो बदले में हमारे शरीर को गति देता है, यानी आसपास की अन्य चीजों को हिला सकता है जिससे स्वयं, अपने परिवार, समाज और आसपास की अन्य चीजों में परिवर्तन आ सके। संक्षेप में कहें तो, दुनिया में हम जो भी परिवर्तन देखते हैं, वे हमारे मन के अनुसार होते हैं और मुख्य रूप से इसके नियंत्रक हृदय के द्वारा होते हैं जो विश्वास का केंद्र है और पसंद, नापसंद आदि के अनुसार संचालित होता है। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि हम में से हर एक का मन हमारे द्वारा की जाने वाली गतिविधियों, हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों, हमारे द्वारा खेले जाने वाले नाटक से परिलक्षित होता है, अर्थात्, यह कहना है कि हम में से हर एक के मन (अधिक विशेष रूप से हृदय/विश्वास) को हमारे द्वारा की जाने वाली गतिविधि और हमारे द्वारा प्रकट की जाने वाली भौतिक वास्तविकता से आंका जा सकता है।

उपरोक्त के अनुसार, यदि हम चारों ओर गंदगी देख रहे हैं, तो यह स्पष्ट है कि हम में से प्रत्येक का मन खराब हो गया है और हम में से लगभग सभी का विश्वास/दिल डगमगा गया है, व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी (परिवार, समाज, देश और उसकी व्यवस्थाएँ)। विश्वास खोने के परिणामस्वरूप, हम जीवन में आशा खोना शुरू कर रहे हैं और असहाय, निराश, आत्मघाती और हर नए वायरस, बैक्टीरिया और बीमारियों के प्रति अतिसंवेदनशील होते जा रहे हैं।

ऐसी परिस्थितियों में, जो लोग एकांत में हैं, उन्हें छोड़कर बाकी सभी न केवल व्यवस्था की गंदगी से पीड़ित होंगे, बल्कि बीमारी और रोग को बढ़ाने में भी योगदान दे रहे होंगे। हमारे सामूहिक कष्ट और परिणामी पतन को तब सबसे निचले स्तर पर पहुँचाया जा सकता है, जब हमारे नेता, मीडिया और जन मंच लगातार स्थिति को देखते, पढ़ते, सुनते, लिखते और बीमारी और रोग के अलावा किसी और काम में हिस्सा नहीं लेते, बजाय इसके कि वे स्वास्थ्य, खुशी और स्वस्थता को बढ़ाने वाले कामों में समय और ऊर्जा लगाएँ।

दुनिया के ज्यादातर देशों में ऐसी ही स्थितियाँ व्याप्त हैं। क्या यह इस बात का संकेत नहीं है कि यह समय है कि हम प्रार्थना करें और खुद पर और प्रकृति पर अपना विश्वास फिर से स्थापित करें?

2. संयुक्त राष्ट्र और देशों की संसदें चाहे कितनी भी बेहतर सफाई की बात करें, लेकिन मच्छर भगाने वाली दवाइयों, मच्छरों से बचाव वाली क्रीम, मच्छरदानी, फेस मास्क और सैनिटाइजर की बिक्री, हवा और पानी को शुद्ध करने वाले उपकरणों की बिक्री, दवाइयों, डॉक्टरों, प्रयोगशालाओं और अस्पतालों के बिलों में बढ़ोतरी, और परिणामस्वरूप गंभीर और मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि, बेहतर सफाई के किसी भी दावे के खिलाफ बहुत कुछ कहती है।

iii. यह सभी के लिए आश्चर्य की बात हो सकती है कि हिंदुओं से लेकर यहूदियों तक, बौद्धों से लेकर जैनों तक, ईसाइयों से लेकर मुसलमानों तक, सिखों से लेकर बहाई तक किसी भी धर्म में सार्वजनिक क्षेत्र की सफाई और उसके साधनों के बारे में बात नहीं की गई है या चर्चा नहीं की गई है, जैसे कि समाज में सफाई कौन करेगा, वह ऐसा क्यों करेगा, वह किस उम्र में यह कार्य करने में सक्षम होगा और उसके साथ कैसा व्यवहार, सम्मान और पुरस्कार किया जाएगा।

फिर लगभग सभी धर्म यह स्पष्ट नहीं करते कि इस व्यक्ति (या किसी भी व्यक्ति) का अपने जीवन में विभिन्न आयु में क्या अधिकार और जिम्मेदारी है, हिस्सा और योगदान क्या है, समाज/सरकार से वह क्या अपेक्षा कर सकता है और समाज और सरकार उससे क्या अपेक्षा कर सकती है, फिर अन्य पशु-पक्षियों, मछलियों, पेड़-पौधों, पर्यावरण और प्रकृति के प्रति कम से कम स्वच्छ और स्वास्थ्यकर वातावरण बनाए रखने के संबंध में उसका क्या अधिकार और जिम्मेदारी होगी, और इस तरह इन सभी धर्मों ने अपने ही अनुयायियों को विकलांग बना दिया है, जब अनुयायियों/शिष्यों को समग्रता में जीवन से निपटना पड़ता है।

4. यह तर्क दिया जाता है कि आस्था और प्रजनन हर प्राणी में जन्मजात होता है, जो मनुष्य सहित हर जीवित प्राणी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए यदि हम चारों ओर गंदगी/मैलापन देख रहे हैं, तो यह निश्चित है कि धर्म और क्षेत्र से परे सभी वर्गों के लोगों की आस्था डगमगा गई होगी। यह भी कहा जा सकता है कि इन सभी धर्मों ने अपनी ऊर्जा खो दी है और उनके प्रभाव की अवधि समाप्त हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी प्रासंगिकता समाप्त हो गई है और वे अपने अनुयायियों को नियंत्रित करने, नियंत्रित करने और मार्गदर्शन करने में असमर्थ हैं।

यह हमें एक बहुत ही बुनियादी सवाल उठाने के लिए कहता है: क्या ये सभी धर्म हमें आगे ले जाने में सक्षम हैं या हमें सामूहिक रूप से मूल धर्म/मज़हब पर फिर से विचार करना होगा जो समुदाय की सभी बुनियादी और स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा कर सके जिसमें स्वच्छता और स्वास्थ्य शामिल है जिसके लिए 'पांच तत्वों', यानी अंतरिक्ष, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी का सम्मान करके उपचारक को उपचारित करना, हमारे पुनरुत्थान का आधार हो सकता है।

महान आचार्यों द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त कथनों की प्रामाणिकता के संबंध में किसी के भी मन में, चाहे वह कोई भी हो, रती भर भी संदेह नहीं होना चाहिए, अर्थात् यदि हम प्रकृति में बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं, तो आश्वस्त रहें कि बड़े पैमाने पर मंथन/परिवर्तन आने वाले हैं।

प्रश्न: यद्यपि इंटरनेट, पुस्तकालय और किताबों की दुकानें जानकारी से भरी पड़ी हैं, लेकिन समझने में आसानी के लिए आप यह परिभाषित करना चाहेंगे कि धर्म (मूल धर्म), धर्म संस्थान (धर्म की संस्थाएं) और राजनीति (शासन के साथ-साथ रहस्य रखने की नैतिकता - जिसे अंग्रेजी में पॉलिटिक्स कहते हैं) क्या है?

उत्तर: संभवतः निम्नलिखित उद्देश्य के लिए पर्याप्त होगा:

i. **धर्म (मूल धर्म) क्या है:** धर्म (धर्म) जो सब कुछ समाहित करता है वह धर्म है, अथवा धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी का सार है (धार्यते) इति धर्मः , धरा का मर्म धर्म संस्कृत में वे कहते हैं, यह मूल धर्म है जो शाश्वत/शाश्वत/सनातन है, जो पूरी धरती/धरा (धरा) को अपनी संपूर्णता में समाहित करता है। जबकि धर्म को धर्म की क्षेत्रीय अभिव्यक्ति कहा जा सकता है, 'जैसे; हिंदुस्तान के लिए यह हिंदू है, यहूदा के लिए यह यहूदी धर्म है (यहूदियों के लिए यरूशलेम)। बुद्ध, जैन और सिख हिंदू के मुख्य उपभेद हैं जबकि ईसाई, मुस्लिम और बहाई यहूदियों के मुख्य उपभेद हैं (धर्म : धरा का और रिलिजन रीजन का)।

*[पूरी दुनिया एक है लेकिन एक बड़ा परिवार धर्म की सबसे बुनियादी समझ है, जिसे अब तक कई धर्मों ने तब तक मानने से इनकार किया जब तक कि उन्होंने सभी पंथों और रंगों के लोगों को अपने धर्म के संस्करण को स्वीकार करते नहीं देखा। अब, बीमारी के प्रकोप और दुनिया भर में लॉकडाउन ने

बिना किसी संदेह के साबित कर दिया है कि दुनिया एक है। अगर दुनिया एक नहीं होती, तो एक बीमारी कैसे पूरी धरती पर मौजूद बिरादरी को प्रभावित कर सकती थी?]*

धर्म स्वतंत्रता और प्रेम के सद्गुण पर आधारित है। लोग धर्म को पसंद करते हैं और धर्म को अपनाते हैं क्योंकि धर्म सभी को अपनी पूरी उदारता के साथ प्रदान करता है, न कि भूत-प्रेत और नर्क का डर पैदा करके या खुलेआम धमकाकर और जेल में सजा देकर, जैसा कि लगभग सभी समवर्ती धर्म और समाज और देशों की शासन व्यवस्थाएँ कर रही हैं।

धर्म सर्वतोमुखी है और जीवन में होने वाले सभी लेन-देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, यह न तो स्वयं को व्यापार में शामिल करता है, न ही व्यापारिक संस्थाओं का समर्थन/पक्षपात करता है, साथ ही यह राजनीतिक या शासक या विस्तारवादियों का अनुचर, प्रचारक या मुखौटा संगठन नहीं बनाता है।

धर्म कभी किसी को यह पोशाक पहनने या उस प्रकार के बाल कटवाने, यह पढ़ने और वह देखने, व्यायाम (योगिक या एरोबिक) करते हुए प्रवचनों को सुनने के लिए नहीं कहता। धर्म मूल रूप से जीवन को स्वस्थ और पवित्र बनाने में लगा हुआ है।

धर्म कभी भी किसी को भगवान को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य या उसके विकल्प जैसे नारियल या बकरी, भैंस, भेड़, ऊँट आदि की बलि देने के लिए नहीं कहता है। धर्म कभी भी किसी को बैल और भैंस को बधिया करने या पुरुषों का खतना करने या लड़कियों के जननांगों को विकृत करने (एफजीएम) के लिए नहीं कहता है, जिसमें उन्हें ब्रह्मचारी बनने के लिए मजबूर करना शामिल है, या उन्हें (लड़के और लड़कियों को) पूर्ण बलिदान से बचाने के लिए उन्हें एक इकाई बनाकर और घोषित करके जो पहले से ही प्रतीकात्मक रूप से सर्वशक्तिमान के लिए बलिदान किया जा चुका है।

धर्म किसी को भी किसी के विकास को प्रतिबंधित करने के लिए नहीं कहता है, चाहे वह मनुष्य हो या पेड़, और उन्हें बौना या बोनसाई बना दें। धर्म कभी किसी को कैद करने के लिए नहीं कहता है, चाहे वह एक्वेरियम में मछलियाँ हों, पिंजरे में तोते हों या चिड़ियाघर में जानवर हों।

धर्म हमें जीवन का जश्न मनाने, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वच्छता बनाए रखने और स्वयं तथा पूरे पर्यावरण की स्वच्छता बनाए रखने के लिए कहता है। धर्म बस हर जीवित प्राणी (मनुष्यों सहित) को जीवन का आनंद लेने और दूसरों को भी इसका आनंद लेने की अनुमति देता है और वह खाने की अनुमति देता है जो व्यक्ति के मूड को स्वस्थ रखता है और वह पीने की अनुमति देता है जो उसकी आवाज़ को संयमित रखता है।

धर्म कभी किसी को पूजा करने के लिए नहीं कहता है और न ही धर्म किसी को किसी भी तरह या किसी रूप (मूर्ति) या निराकार की पूजा करने या यहां तक कि स्वयं की पूजा करवाने के लिए प्रतिबंधित करता है, धर्म केवल जन्मजात विश्वास/चेतना के निर्देशों का पालन करने और अपने कर्म-कर्म को करते रहने के लिए कहता है (यह भी कह सकते हैं; कर्म ही धर्म है और कर्म ही पूजा है।

जब कोई व्यक्ति संशय में हो तो धर्म उसे समुद्र और जंगल, पृथ्वी और आकाश की ओर देखने को कहता है और यह समझने की कोशिश करता है कि इन स्थानों पर किस प्रकार धर्म और व्यापक व्यवस्था कायम है और उसका पालन पशु-पक्षी, मछलियां, वनस्पति और जीव-जंतु आदि करते हैं। फिर भी यदि कोई (धार्मिक गुरु) संशय में हो तो वह जनजातीय/मूलनिवासियों/मूलनिवासियों से बातचीत कर सकता है, जहां से पूरी सभ्यता का विकास हुआ माना जाता है और जीवन और धर्म की गतिशीलता की सराहना कर सकता है।

इसके अलावा, अगर किसी को ज़्यादा संदेह है तो वह मार्गदर्शन के लिए प्रत्यक्ष देवता सूर्य से प्रार्थना कर सकता है, क्योंकि सूर्य ही एकमात्र दृश्यमान इकाई है जो योग के सभी रूपों और उसके संपूर्ण पहलुओं को जानता है (ऐसा कहा जाता है कि शुरुआत में जब समय नहीं था तब भगवान ने स्वयं सूर्य को योग बताया था)। हालाँकि दुनिया भर में लोग योगाभ्यास करते समय सबसे पहले सूर्य नमस्कार करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से योग की मूल बातें सदियों से भूली जा चुकी हैं और जो बचा है वह केवल व्यायाम/अनुष्ठान का एक रूप है। यहाँ आदरणीय गुरु, संत और ऋषिगण इसे फिर से सुनाना चाहेंगे और हमारे सामूहिक सुख के लिए मूल धर्म को पुनर्जीवित करना चाहेंगे।

अंग्रेजी में धर्म के लिए कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए धर्म शब्द का प्रयोग किया जाता है।

आइए धर्म समवर्ती समझ - एक अवलोकन:

मुझे इस बात पर बहुत आश्चर्य है कि विश्व भर में उपलब्ध किसी भी पूर्व/बीते युग के धर्मग्रंथ में धर्म को कोई नाम निर्दिष्ट/संलग्न नहीं किया गया है, अर्थात् जहां कहीं भी विश्वास का उल्लेख किया गया है, उसे केवल धर्म के रूप में वर्णित किया गया है, अर्थात् धर्म से पहले कोई संज्ञा या ब्रांड नाम (जैसे सनातन, हिंदू, यहूदी आदि) नहीं आया है।

हालाँकि जब धर्म की गुणवत्ता/विशेषताओं को सनातन (अर्थात् शाश्वत, सतत, बारहमासी, नित्य आदि) के रूप में उदाहरणित किया जाता है, उदाहरण के लिए गीता में, यदि हम इसके सबसे प्रसिद्ध श्लोक/कथन में देखें तो हम समझेंगे कि इसमें केवल धर्म का उल्लेख है (बिना किसी तार/उपसर्ग या प्रत्यय के) जो प्रसिद्ध श्लोक में कहा गया है (संस्कृत में)

कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत ।

अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूँ .

इसके अलावा, पिछले युगों के लगभग सभी ग्रंथों में कई स्थानों पर यह कथन मिलेगा: "धर्म ही सनातन है", लेकिन कहीं भी ऐसा लिखा हुआ नहीं मिलेगा: सनातन धर्म।

उपरोक्त के साथ यह कहा जा सकता है कि हर कोई धर्म (धार्मिक) के साथ पैदा होता है जो प्रकृति में सनातन (शाश्वत, शाश्वत आदि) है,

मूलतः बाद में जब गिरावट शुरू हुई तो ब्रांड नाम (अनावश्यक सामान) इसके साथ जुड़ने लगे और समस्या उत्पन्न होने लगी।

हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, वह धर्म की ब्रांडिंग के कारण है, जिसे अब 'हिंदू, यहूदी, बुद्ध जैन, ईसाई, इस्लाम, बहाई, सिख आदि' के रूप में जाना जाता है। इसका समाधान किसी भी धार्मिक परिवर्तन से नहीं बल्कि इन सभी धर्मों को पूरी तरह से त्यागने/छोड़ने से होगा। जब हम इस त्याग/छोड़ने/छोड़ने से निपट लेंगे, तो हम सभी अपनी मौलिकता पर आ जाएँगे – एक वास्तविक धार्मिक जिसे अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग शब्दों जैसे: शाश्वत, शाश्वत सनातन, जावेद, दावती आदि द्वारा वर्णित / वर्णित किया जा रहा है। ऊपर बताई गई बातें बहुत सरल हैं, लेकिन उनकी सराहना करना कठिन है।

ii. धर्म संस्थान क्या है? धर्म-संस्थान वह संस्था है जो बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के, संपूर्ण समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति आत्मनिर्भर तरीके से करती है। ऐसे आत्मनिर्भर धर्म-संस्थान (धार्मिक संस्थाएँ) सदियों से निरंतर (सदाबहार) काम करते आ रहे हैं।

दरअसल, इस व्यवस्था के निरंतर काम करने के कारण ही इसे सनातन नाम दिया गया है। इसके अलावा, चूंकि इन संस्थाओं का काम पूरी धार्मिकता के साथ किया जाता है, इसलिए इसे सनातन धर्म का नाम दिया गया है। हालांकि, कुछ लोग इसके विपरीत कहते हैं कि शाश्वतता की बुनियादी समझ के कारण ही ये संस्थाएं निरंतर तरीके से काम कर पाती हैं।

धर्म संस्थान एक ऐसी संस्था है जो भूखों को भोजन, प्यासों को पानी, निराश्रितों को आश्रय, रोगियों को उपचार, जरूरतमंदों को सलाह और न्याय, असहायों को सहायता, युवाओं को रोजगार और अकेले तथा वृद्धों को सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराने के साथ-साथ अपने आस-पास के सभी व्यक्तियों को शोषण-मुक्त वातावरण में शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करेगी, ताकि वहां कोई अभाव, जबरन भीख मांगने और जबरन वेश्यावृत्ति न हो।

संस्था के दीर्घकालिक सफल संचालन के बाद आमतौर पर प्रकट होने वाली स्पष्ट आत्मसंतुष्टि तथा पूर्णता से भी अधिक सुधार करने की मूर्खतापूर्ण इच्छा के कारण, ऐसी संस्थाओं में समाज का योगदान कम होता गया, जिससे धीरे-धीरे ऐसी संस्थाएं पिछले तीन हजार वर्षों में अस्तित्वहीन हो गईं।

ये सभी धर्म – हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई, चाहे कितने भी समग्र होने का दावा करें, लेकिन तथ्य यह है कि इनमें से कोई भी धर्म अपने अनुयायियों को भी समान मंच पर स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करने में सक्षम नहीं है, इसलिए धर्म संस्थान का पुनरुत्थान ही एकमात्र विकल्प कहा जा सकता है ताकि पृथ्वी पर जीवन एक बार फिर से पुनर्जीवित हो सके।

iii. राजनीति (शासन और रहस्य रखने की नैतिकता – जिसे अंग्रेजी में पॉलिटिक्स कहते हैं) क्या है ? : राजनीति शासन और नैतिकता के आधार पर सरकार के कामकाज की नैतिकता है, जबकि नैतिकता वह है जो पृथ्वी और उसके पर्यावरण से निकलती है (नीति) 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... से :अ: है).

चूंकि पर्यावरण समय के साथ बदलता रहता है, इसलिए पर्यावरण को गतिशील इकाई कहा जा सकता है। पर्यावरण की तुलना में पृथ्वी को स्थिर इकाई कहा जा सकता है। चूंकि राजनीति पृथ्वी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है, इसलिए राजनीति को स्थिर कहा जा सकता है, लेकिन चूंकि राजनीति पर्यावरण के साथ प्रतिध्वनित होती है, इसलिए राजनीति भी गतिशील हो जाती है।

इस मिश्रण को देखते हुए , **राजनीति को एक ऐसा अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति कहा जाता है जो दृढ़ होते हुए भी काफी लचीली होती है** । इस परिभाषा के मददेनजर यह माना जा सकता है कि राजनीति एक नौकरी/पेशा नहीं है बल्कि समाज और उसके आसपास के वातावरण की सामूहिक भलाई के लिए समाज के प्रति एक जुड़ाव है। ऐसी राजनीति को ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया जा सकता है जिनकी बुनियादी पारिवारिक जरूरतों के लिए उनके समय और धन की आवश्यकता नहीं होती है यानी ऐसे समय में जब उनके बच्चों की शादी हो जाती है, और ऐसी राजनीति में भागीदारी तब तक जारी रह सकती है जब तक कि उनके बच्चे उनकी जगह लेने के लिए उपलब्ध न हो जाएं। इसका मतलब है कि एक सक्रिय राजनीति (मतदान के साथ-साथ चुनाव लड़ना) की उम्र लगभग पचास वर्ष से पचहत्तर वर्ष तक हो सकती है। पचहत्तर वर्ष की आयु के बाद ऐसे सम्मानित व्यक्ति आम तौर पर नए लोगों को शिक्षित करने और प्रशिक्षित करने में शामिल होना चाहते हैं।

राजनीति एक पेशा है और राजनेता पेशेवर होते हैं, जो निश्चित रूप से अन्य व्यवसायों के समान व्यवहार के हकदार हैं, जो देश और समाज के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक हैं। राजनीति मूल रूप से धर्म के ग्रंथों और/या देश के संविधान में तैयार किए गए निर्धारित नियमों और विनियमन पर पुलिसिंग है। चूंकि देश का संविधान स्थिर है (परिदृश्य और समय के परिवर्तन के साथ भी कमोबेश एक जैसा रहता है)

इसलिए संविधान आम तौर पर अलग-अलग समय पर सामने आने वाले मुद्दों से निपटने में अक्षम पाया जाता है।

अंग्रेजी में राजनीति के लिए कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए राजनीति शब्द का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न: आगे क्या होगा?

उत्तर: इस दुनिया में कुछ भी नया नहीं है, जो कुछ भी यहाँ या बताई गई किताबों में लिखा है, वह सब पहले से ही प्रचलन में है। ऐसा कहा जाता है कि समय बीतने के साथ-साथ व्यवस्था में आत्मसंतुष्टि आ जाती है और बहुत लंबे समय तक सुचारु रूप से चलने के बाद लोग अपना दिमाग लगाना शुरू कर देते हैं और बेकार के तर्क के बहाने व्यवस्था के साथ खेलना शुरू कर देते हैं कि सुधार की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है।

इस सरल समझ के बावजूद कि अनंत में कुछ भी जोड़ने की संभावना नहीं है, पूर्णता में सुधार की कोई संभावना नहीं है। जब मन को अनावश्यक रूप से परिपूर्ण प्रणालियों में सुधार करने की इच्छा के साथ भी लगाया जाता है, तो क्या होता है, परिपूर्ण प्रणालियाँ, सभ्यता और चरित्र अधिक परिपूर्ण या कम परिपूर्ण नहीं बनते, बल्कि टूट जाते हैं और रसातल में गिर जाते हैं। गौरवशाली अतीत और परिपूर्ण शाश्वत/सनातन प्रणाली के बाद हमारे पतन का यही मामला है।

अब पुनर्जीवित करने के लिए, कुछ नया करने की जरूरत नहीं है, बल्कि उस प्रणाली और प्रक्रियाओं को बहाल या पुनर्जीवित करने की जरूरत है, जिनका हम कभी पालन करते थे और कह सकते हैं कि यही हमारा मुख्य कार्य था।

प्रार्थना

खंडहर मंदिर में देवता नहीं रहते,
देवता अवज्ञाकारियों के बीच नहीं रहते,
जहां देवता को छोड़ दिया जाता है, वहां देश गुलाम बना दिया जाता है और आम आदमी को लात मारी जाती है।
और अनेक नई छवियां और चालाक कला के अनेक नए स्वामी प्रकट होते हैं,

खंडहर मंदिर में देवता नहीं रहते,
खंडहर मंदिर को जर्मीदोज करना होगा; पवित्र मंदिर बनाना होगा;
कर्तव्य तो निभाना ही होगा,
सुसज्जित मंदिर में आ सकते हैं देवता
देवता जीवन का निर्माण करेंगे, देवता धर्म की स्थापना करेंगे।

तो, एक शो की तरह,
आइये हम अपने काम को घटनाओं का एक क्रम बनाएं।
हमारी संवेदनाएं स्वच्छ आकाश की तरह फैलती रहें
और हमारा कार्य शक्ति स्वरूपा देवियों के आशीर्वाद से जारी रहे।
देवता को नमस्कार करते हुए, देवता की इच्छा की स्थापना करते हुए,
धर्म की स्थापना में

ऐसा कहा जाता है कि जब हम यह सब कार्य करेंगे और अपना कार्य सर्वशक्तिमान को समर्पित कर देंगे, तो हमारे कार्य (कर्म) में शीघ्र ही सफलता मिलेगी।
ऊपर प्रस्तुत है

भाग-4/5, धर्म पर कुछ और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है – समाधान केंद्रित प्रस्तुतियाँ

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुतिकरण प्रश्न उत्तर के रूप में है,

प्रश्न: धर्म और धार्मिक व्यवस्थाएं अपने मूल तक भ्रष्ट और जीर्ण-शीर्ण हो चुकी हैं और यह लंबे समय से इसी तरह काम कर रही हैं, यहां तक कि लोग इसके आदी हो चुके हैं और कहीं न कहीं अपने विवेक में उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया है और खुद को भी भ्रष्ट कर लिया है। यह किसी के लिए आश्चर्य की बात नहीं होगी कि तथाकथित शैतान इस स्थिति का फायदा उठाते रहते हैं और संत हमेशा की तरह अपने मगरमच्छ के आंसू बहाते दिखते हैं और कुछ पुराने नियमों/शास्त्रों से अपने उपदेशों को दोहराते रहते हैं। क्या ऐसी स्थिति को वास्तव में भयावह/खतरनाक/अशांत कहा जा सकता है, इस पर हमारा क्या कहना है?

उत्तर: जब भी कोई मनुष्य, मशीन, पैसा, सामग्री, बाजार, पद्धति या सभ्यता अपने मूल में जंग खा जाती है, तो यह कहा जा सकता है कि उसके जाने का समय आ गया है। यह कहावत है कि - 'पाप का घड़ा भर जाने पर वह फूट जाता है और जब पुण्य का घड़ा भर जाता है तो उसमें फूल खिल जाते हैं', जो यह दर्शाता है कि यदि समकालीन धर्म और उनकी प्रणालियाँ अपने मूल में ही भ्रष्ट और जंग खा गई हैं तो अब समय आ गया है कि इन्हें तोड़ दिया जाए। इसे कौन तोड़ेगा? इसे कैसे तोड़ा जाएगा, यह ऐसे प्रश्न हैं जो निश्चित रूप से समय ही बताएगा और यह आप भी बता सकते हैं।

कोई भी इस बात की सराहना कर सकता है कि कई बुरी शक्तियों का प्रदर्शन और उसके परिणामस्वरूप उनका उन्मूलन पहले ही शुरू हो चुका है, और इसके साथ ही अच्छी शक्तियों का उदय और उत्थान भी शुरू हो गया है। आध्यात्मिक क्षेत्र में, यह कहा जा रहा है कि समाज में व्यापक मंथन की आवश्यकता है क्योंकि न तो पुरानी बुद्धि गूगल, यूट्यूब, विकिपीडिया आदि के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकती है और न ही ये 'नव-शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत, फिएट मुद्राएँ, सोना और बिटकॉइन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीनिंग प्रौद्योगिकियाँ' दादी-माँ की सलाह, सुस्थापित बुजुर्गों के त्वरित समाधान, स्थानीय स्तर की वस्तु विनिमय प्रणाली के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकती हैं।

ऐसा कहा जा रहा है कि धर्म का व्यापक मंथन अर्थात् पुनरुत्थान हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है, जिसके बारे में कहा जा सकता है कि प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, इसलिए चिंता करने की कोई बात नहीं है, चीजें अपेक्षा से जल्दी ही सुलझ जाएंगी, आपसे और मुझसे केवल इतना ही अपेक्षित है कि हम अपना काम जारी रखें और सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करें तथा ईश्वर के आशीर्वाद की प्रतीक्षा करें।

प्रश्न: धर्म के पुनरुत्थान और अच्छे आदेश की स्थापना की आवश्यकता महसूस की जा रही है, लेकिन जो लोग इसे संकल्पित करेंगे और इसे प्रकाश में लाएंगे, वे कहीं नहीं दिख रहे हैं। हालाँकि मैं पोप, दलाई-लामा, मुनि और भिक्षुओं, गैड इमाम, गैड अयातुल्ला, खलीफा, कोहेन , शंकराचार्य और धर्म के अन्य नेताओं के बारे में जानता हूँ, लेकिन वे बस ऐसे लोग नहीं हैं, जो इसे वैसे भी करने जा रहे हैं।

इस दुनिया में जो सबसे बुरी चीज हो सकती थी, वह हो चुकी है, वह है धर्म का व्यावसायीकरण और ये सभी समवर्ती धर्म इतने संतृप्त हो चुके हैं कि ऐसे समय में जब दुनिया में इतना ज्ञान उमड़ रहा है, उनमें कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं जोड़ा जा सकता है।

सिद्धांत और व्यवहारिकता में फर्क होता है, राजनीतिक हलकों में लोकतंत्र और साम्यवाद सिद्धांत रूप में अच्छे लगते हैं लेकिन व्यवहार में वे दोनों भ्रष्ट हो गए हैं। कहा जाता है कि पैसा किसी को भी भ्रष्ट कर सकता है, और हम आखिर इंसान ही हैं। इंसानों की बढ़ती हुई बुद्धि, पैसे बनाने की बढ़ती हुई दर और दुनिया में लोगों के लिए घटती हुई जगह एक बड़ा खतरा बन गई है।

मैं गंभीरता से महसूस करता हूँ कि पुराने धर्म का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए नहीं किया जा सकता; इसमें केवल दरवाजे और खिड़कियां खोलना ही सहायक हो सकता है, ताकि बाजार में नए विचार पेश किए जा सकें।

उत्तर: यह जानकर अच्छा लगा कि आपको भी धर्म के पुनरुत्थान और अच्छे क्रम की स्थापना की आवश्यकता महसूस हुई, लेकिन आप इसके काम करने के तरीके से चिंतित हैं। आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए आप उस व्यक्ति की ओर देख रहे हैं जो या तो अब जीवित नहीं है या अपने धर्म के युवाओं को नियंत्रित करने में विफल रहा है। एक तरह से आप अपने माता-पिता, दादा-दादी यानी पिछली पीढ़ी की ओर देख रहे हैं और निराश हो रहे हैं, जबकि मैं आपकी, आने वाली पीढ़ी की ओर देख रहा हूँ और इसलिए काफी आशान्वित हूँ।

प्रश्न: आपने जो ऊपर कहा वह अधिक दार्शनिक प्रतीत होता है, क्या व्यावहारिक अंतर्दृष्टि देना और यह सूचीबद्ध करना अधिक महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सामूहिक गतिविधि के रूप में क्या करने जा रहे हैं?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है: **A.** व्यावहारिक क्या है? **B.** दार्शनिक प्रस्तुति क्या है? **C.** सूची बनाएं,

क्या है: अगर आपने अपने जीवन में कोई प्रैक्टिकल किया है तो आप समझेंगे कि किसी भी प्रैक्टिकल के पीछे एक सिद्धांत होता है, कारण और प्रभाव का सिद्धांत, प्रक्रिया का सिद्धांत और विभिन्न घटकों

की परस्पर क्रिया का सिद्धांत और फिर इन सिद्धांतों का पालन करने पर जो परिणाम मिलता है वह उम्मीद के मुताबिक हो सकता है या नहीं या परिणाम आश्चर्यजनक हो सकता है – बिल्कुल नई चीज। अगर प्रैक्टिकल बड़ा है तो उसके परिणाम में अधिक समय, स्थान और ऊर्जा लग सकती है जैसे अलग-अलग प्रजातियों (चूहा, बिल्ली, कुत्ता, इंसान, हाथी आदि) में अलग-अलग समय पर जन्म लेना। इस प्रकार, व्यावहारिक होने का मतलब है कि हम कुछ चीजों को आजमाएंगे, हम कुछ प्रणालियों और प्रक्रियाओं का पालन करेंगे और फिर जो परिणाम होगा, उसे हम स्वीकार करेंगे।

जबकि, जो चीजें व्यवहार में हैं, वे पहले किए गए प्रैक्टिकल (किसी और द्वारा किए गए) का परिणाम हैं, न कि कोई नया और रूटीन बन गया है, आप इसे जो चाहें कह सकते हैं। आम तौर पर, दिन-प्रतिदिन के कामों में बच्चों को करने के लिए सिद्धांत लिखे जाते हैं और वे इसे प्रैक्टिकल बुक कहते हैं, क्योंकि उनके लिए यह एक नई चीज है और इसलिए वे इसे प्रैक्टिकल तरीका/विकल्प कहते हैं।

ख. दार्शनिक प्रस्तुति क्या है: जहां तक दार्शनिक प्रस्तुति का सवाल है, इसे आम तौर पर दो प्रारूपों में तैयार और प्रस्तुत किया जाता है:

i) जब किसी व्यक्ति या समूह को लगता है कि लोग एक निश्चित तरीके से खुश रह सकते हैं या सत्ता केंद्र के अनुसार उनका इस्तेमाल और दुरुपयोग किया जा सकता है, तो वे अपनी परिकल्पना/दर्शन (बिना किसी परीक्षण या बहुत सीमित और क्षेत्रीय परीक्षण के) को लोगों के सामने लोगों की अपनी खुशी के लिए अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण के रूप में प्रचारित करते हैं। साम्यवाद, पूंजीवाद, शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत, नव शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत, लोकतंत्र आदि को इस प्रकार के दृष्टिकोण का परिणाम कहा जा सकता है।

भारत जैसे देशों पर आक्रमण हुआ, उन्हें गुलाम बनाया गया और गुलामी से मुक्ति भी मिली और विभाजन भी हुआ, क्योंकि किसी ने तो इसके बारे में सोचा होगा, विचार की कल्पना की होगी, इसकी रचना/परिकल्पना की होगी (जिसे आप दर्शन कह सकते हैं) फिर कुछ चर्चा/प्रयोगशाला परीक्षण, फिर क्षेत्र परीक्षण और उसके बाद ही सिद्धांत को व्यावहारिक उपयोग में लाया गया और वह वास्तविकता बन गया।

ii. जब किसी समाज में पर्याप्त विकास हो चुका होता है तो इनको दोहराया जा सकता है और बाहरी लोगों तथा कुछ पीढ़ियों के लिए दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लोग इनका प्रयोग करते समय इन्हें आम तौर पर अभ्यास (व्यावहारिक) तरीका कहते हैं। इस प्रकार की प्रथाओं को कई पीढ़ियों तक जारी रखा जा सकता है और इन्हें अंग्रेजी में परपीचुअल/पेरैनियल/एटरनल, संस्कृत में सनातन/शाश्वत, उर्दू में जावेद/द्वैमी आदि कहा जा सकता है।

पुस्तक डिविनक्रेसी (ईश्वरीय लोकतंत्र) को पिछले युगों में प्रचलित दार्शनिक/व्यावहारिक अंतर्दृष्टि देने का एक प्रयास कहा जा सकता है, ताकि व्यक्तिगत और सामूहिक खुशी प्राप्त की जा सके।

सी. कार्य सूची :

i. सदियों पुरानी समस्याओं पर काबू पाने के लिए, समाज को स्थानीय सरकार के संचालन और रखरखाव के लिए आवश्यक सभी काम और ज़िम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले लेनी चाहिए और उस धार्मिक स्थल से काम करना शुरू करना चाहिए, जिसका उस इलाके में सबसे ज़्यादा स्थान हो और अन्य सभी धार्मिक स्थलों को अपना कार्यस्थल बनाना चाहिए। समाज अपना काम शुरू करके, सबसे पहले ज्ञान और संसाधन केंद्र स्थापित करके, फिर सामुदायिक भोजन और आश्रय शुरू करके शुरू कर सकता है और उसके बाद, समाज अपने स्थानीय लोगों से कर संग्रह सहित अन्य सभी गतिविधियाँ अपने हाथ में ले सकता है।

इस दृष्टि से समाज को मौजूदा (विशाल और प्रमुख) धार्मिक केंद्रों को स्थानीय शासन सह सुविधा सह पर्यटन केंद्र के रूप में पूर्ण धर्म-निर्पेक्ष तरीके से (पूरे समाज के साथ-साथ आगंतुकों/पर्यटकों के लिए) बनाने की आवश्यकता है और इसे साकार करने के लिए समाज को मौजूदा मानदंडों के स्थान पर प्रार्थना को पूरी तरह से व्यक्तिगत, शासन को सामूहिक और उत्सव को सार्वजनिक बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा गैर-कार्यात्मक धार्मिक केंद्रों को सामूहिक रूप से निष्क्रिय किया जा सकता है।

जहां तक रोजगार का सवाल है, लोगों को दैनिक आधार पर जीवंत, स्वस्थ और संपूर्ण मनोरंजन सुनिश्चित करना, ताकि उन्हें नशीली दवाओं, मादक पदार्थों, शराब और इंटरनेट द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले मनोरंजन में कूड़ा ढूँढने के लिए मजबूर न होना पड़े, अपने आप में भारत की वर्तमान स्थिति के अनुसार छह प्रतिशत जनसंख्या, यानी आठ करोड़ से अधिक को प्रत्यक्ष रोजगार/सगाई प्रदान करेगा।

ii. इसके अलावा, शुरू से ही ये ज्ञान सह संसाधन केंद्र परिवारों को सलाह देना शुरू कर सकते हैं कि क्षेत्र, मौसम और दिन/रात के समय के अनुसार क्या खाएं, क्या पीएं, क्या धूम्रपान करें और क्या न करें, क्योंकि ये ऐसी चीजें हैं जो किसी भी समाज को तोड़ सकती हैं या बना सकती हैं।

(यह निवेदन है कि जैसा भोजन वैसा ही भाव, जैसा जल वैसा ही स्वर और जैसा धुआं, वैसी ही इन्द्रियाँ होंगी, अतः धर्म सावधानी बरतने की सलाह देता है, जैसे रासायनिक रूप से उपचारित कामोद्दीपक पदार्थों के सेवन से बचें, सड़े हुए फलों और अनाजों के पेय से बचें, मानव मांस (नरभक्षण) से बचें, तथा उन जानवरों/मछलियों का मांस न खाएं जो आकार में बड़े हैं, जिनका डीएनए/आरएनए बड़ा है और जो ऐसे मांस को खाने वालों में आनुवंशिक गड़बड़ी पैदा कर सकता है, गिद्ध और सूअर का मांस खाने से बचें, क्योंकि ये मैला ढोने वाले हैं, फिर कुत्ते का (क्योंकि कुत्ते को मनुष्य का मित्र माना जाता है), फिर उन

जानवरों का मांस खाने से बचें जिनका दूध परिवार पीता है, चाहे वह बकरी/गाय/भैंस/ऊँटनी आदि हो, ताकि माता के प्रति उदासीन होने का आरोप न लगे।

कोई व्यक्ति इन संस्थाओं के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है, यह न केवल उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है, बल्कि इन लोगों, उनके परिवार और समग्र रूप से उनके समाज के भविष्य का पूर्वानुमान भी लगाता है।

अधिक जानकारी के लिए, वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पुस्तक के अध्याय - एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण, को देखें, इसे वेब साइट: resurrectionofdharma.com से निःशुल्क डाउनलोड करें।

प्रकृति ने कोई खुला नेटवर्क और सिस्टम नहीं दिया है, इसलिए हमारे लिए चेक और बैलेंस, फीडबैक, सुझाव और खुली प्रस्तुति प्राप्त करने की प्रणाली होना स्वाभाविक और आवश्यक है ताकि जीवन और जीवन चक्र खुशी से आगे बढ़े। निरंतर या दिन में पांच बार या पांच दिनों में एक बार भगवान का स्मरण निश्चित रूप से खुश रहने में अतिरिक्त सार प्रदान करता है ।

कई लोगों के लिए उपरोक्त बातें एक स्वप्न या कल्पना प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन कई धार्मिक गुरु जानते हैं कि ऐसी व्यवस्था वास्तव में अस्तित्व में थी, हालांकि इसका इतिहास की किसी पुस्तक में उल्लेख नहीं है और यदि हम बारीकी से देखें तो जनसाधारण में एक बड़ी इच्छा आसानी से देखी जा सकती है और आध्यात्मिक दायरे में एक अंतर्धारा महसूस की जा सकती है कि परिवार, समाज और सरकार प्राकृतिक नियमों पर आधारित हो, जहां परिवार, समाज, सरकार और इसकी व्यवस्था आपसी विश्वास और सम्मान के सिद्धांत पर काम कर रही हो, न कि केवल चरनी और मेनाजेरी या शासक और शासित के आधार पर।

ऊपर प्रस्तुत है,

भाग-5/5, धर्म के बारे में कुछ बातें और हमें भारत में विभिन्न धर्मों को आत्मसात करने की आवश्यकता क्यों है और यह कैसे किया जा सकता है, साथ ही एक अस्थायी व्यवस्था भी

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुतिकरण प्रश्न उत्तर के रूप में है,

प्रत्येक धर्म वर्तमान में प्रचलन में है, चाहे वे कितने भी बड़े, साहसी, सुंदर, बेहतर या सर्वश्रेष्ठ होने का दावा करें, लेकिन तथ्य यह है कि ये धर्म गुलामी, जबरन भीख मांगने और वेश्यावृत्ति (जिन्हें किसी भी सभ्यता पर धब्बा कहा जा सकता है) का कोई समाधान नहीं देते हैं, बल्कि इनमें से अधिकांश धर्म या तो चुप रहते हैं या गुलामी, भीख मांगने और वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं।

इसके अलावा, ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी धर्म जीवन के उन बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देना भूल गए हैं या फिर उन पर ध्यान देने की जहमत नहीं उठाई है, जो जीवन में आते हैं और जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है, जैसे अर्थव्यवस्था, रोजगार, मनोरंजन, ऊर्जा, पर्यावरण, नैतिकता, शिष्टाचार, प्रदूषण, जनसंख्या, गरीबी, वेश्यावृत्ति, सफाई, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य।

इन सभी धर्मों में इस तरह की कमी के कारण, जो हुआ वह यह कि इसके सदस्य बाजार के राक्षसों और चालाक कला और छद्म विज्ञान के उस्तादों के आसान शिकार बन गए। इन सभी धर्मों की इस बुनियादी कमी के कारण, इसके सदस्य बाजार की ताकतों, पाखंडियों (अंदर से डरपोक लेकिन साहसी होने का दिखावा करने वाले) और स्पष्टता की कमी के लिए आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले या हेरफेर किए जाने वाले पाए गए। हालाँकि इन सभी धर्मों ने शांति का दावा किया है, लेकिन अंततः मानवता को प्रकृति की क्षमता से अधिक टुकड़ों में काटने के अपराध में भागीदार बन गए हैं।

ऐसी स्थिति में क्या हमें किसी जादू के होने या आसमान से किसी नए देवता के उतरने का इंतज़ार करना चाहिए? या हमें कोई योजना बनाकर कोई समाधान निकालना चाहिए। जब उपरोक्त समस्या को पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के सामने रखा गया तो उन्होंने निम्नलिखित समाधान सुझाया:

प्रश्न: हमने आपके समक्ष कई समस्याएं रखीं, जिनका सामना हम एक व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के सदस्य के रूप में कर रहे हैं, और आपने कहा कि, हां, समस्याएं हैं, तो समाधान भी हैं, और समाज और देश के स्तर पर समाधान लागू करने से पहले व्यापक चर्चा और व्यापक संवाद आवश्यक है।

लेकिन हमें चिंता है कि इन प्रक्रियाओं में बहुत समय लगता है और कई बार मामला अनिर्णीत हो जाता है। ऐसे में क्या कोई और तरीका नहीं हो सकता कि बातचीत की प्रक्रिया जारी रहे और लोगों को कुछ राहत भी मिले?

उत्तर: समाधान हवा में हैं, मूल समाधान तीन चीजों में निहित है, "प्रार्थना करें, खेलें और पार्टी करें। अकेले में प्रार्थना करें; खिलाड़ियों के साथ खेलें और साथियों के साथ पार्टी करें" और यह सभी के लिए उपलब्ध है, वह भी बिना किसी शोर-शराबे के, बिना लाउडस्पीकर के माध्यम से प्रार्थना किए और दूसरों को परेशान किए बिना।

हमारी ज़्यादातर समस्याओं का समाधान सामूहिक उत्सव/आनंद/पार्टी (अधिमानतः एक आम जगह या धार्मिक संस्थानों में) में निहित है। बस जीवन का जश्न मनाएँ और अगर कोई आता है तो उसे शामिल करें, उसे खुश करें और उसे भोजन कराएँ और अगर कोई रुकना चाहता है तो उसके ठहरने की व्यवस्था करें और जश्न (पार्टी) जारी रहने दें।

कहा जाता है कि "जैसे हवा में सांस ली जाती है, वैसी ही दिशा चुनी जाती है, जैसा भोजन होता है, वैसा ही मूड होता है, जैसा पानी/तरल पदार्थ होता है, वैसी ही आवाज होती है और जैसा नशा होता है, वैसी ही स्थिति होती है", इसलिए जब ये चीजें प्रसाद के रूप में भगवान की कृपा के रूप में परोसी जाती हैं (शाब्दिक अर्थ भगवान का कृपापूर्ण उपहार), तो हमारी दिशा, नियति, मूड, आवाज अच्छी होनी चाहिए। यह कहा जा सकता है कि इस छोटे से प्रयास से हमारी पूरी व्यवस्था में सुधार होगा।

प्रश्न: क्या यह बहुत उत्सव की बात नहीं होगी कि जो भी आये, उसे अपने साथ शामिल किया जाये, उसे प्रसाद और आश्रय दिया जाये?

उत्तर: यदि आप उत्सव/आनंद/पार्टी में कंजूस रहना चाहते हैं तो आपके लिए अशांति और समस्याओं में रहना उचित होगा, फिर आप समाधान क्यों खोजते हैं?

सवाल: यह त्यौहार कब तक मनाया जाएगा?

उत्तर: जब तक आप खुशी से जीना चाहते हैं, जब आप खुशी से ऊब महसूस करते हैं और आप दुखी, परेशान रहना चाहते हैं या आप किसी के साथ झगड़ा / टकराव करना चाहते हैं तो आप उत्सव मनाना बंद कर सकते हैं।

यह इस प्रकार है कि जहां सुगंध होगी वहां खुशी होगी, जहां दुर्गंध होगी वहां शोर होगा और मूड खराब होगा। त्योहार आनंद से जुड़ा है और विवाद बेचैनी से।

सवाल: अगर हमें ऐसे ही लगातार और लंबे समय तक उत्सव मनाना है, तो हमें इन जगहों पर रहने, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सफाई का प्रबंध करना होगा, तो क्या यह एक वैकल्पिक व्यवस्था नहीं होगी?

इसका प्रबंध कैसे होगा, पैसा और दूसरे संसाधन कहां से आएंगे? जब लोग लंबे समय तक रहेंगे तो वे नौकरी भी मांगेंगे, फिर उनके लिए रोजगार कहां से पैदा होगा?

जवाब: खैर, आज के परिदृश्य में यह एक वैकल्पिक व्यवस्था होगी लेकिन यह एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसे अच्छा कहा जा सकता है।

जहाँ तक धन का प्रश्न है, एक व्यक्ति की आय में बारह दशमलव पाँच प्रतिशत (एक गुणा आठ) उसकी माता, पिता, पुत्र, पुत्री, पति और सरकार के लिए तथा समाज (धर्म) के लिए भी सम्मिलित होता है, जब यह धन जो समाज (धर्म) का हिस्सा है, समाज में आने लगेगा, तब धन की कोई कमी नहीं रहेगी।

इसके अलावा, जब लगातार उत्सव मनाया जाएगा तो बहुत सारे बुजुर्ग और बच्चे आएंगे तो अनाथालय और वृद्धाश्रम पर होने वाला खर्च कम हो जाएगा। फिर जब हम यहां रहने वाले व्यक्ति को नौकरी देंगे तो इससे यहां की अतिरिक्त आय होगी। इस वैकल्पिक व्यवस्था में नए रचनात्मक कार्य किए जाएंगे जिसमें साइकिल जैसी मशीन से आने-जाने का काम हो जाएगा और खर्च भी कम हो जाएगा।

इसका मतलब है कि यहाँ की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर होगी, जो कि अपने खुद के केक को उगाने/उत्पादित करने और खुद ही पकाने और खाने जैसी होगी। यानी यहाँ का आर्थिक सिद्धांत होगा; "समूह के लिए समूह द्वारा और समूह का"। इसके अलावा यह व्यवस्था बैक्टीरिया या वायरस के फैलने से प्रभावित नहीं होगी और इस तरह यह एक आत्मनिर्भर या परस्पर भरोसेमंद व्यवस्था का सबसे अच्छा रूप होगी।

इसके अलावा, वहाँ ऐसे वृद्ध लोग होंगे जिनके पास अपने पूरे जीवन का अनुभव होगा और जो दूसरों को, समाज को सलाह देने के लिए काम कर सकते हैं और ये आशा और संसाधनों का केंद्र होगा। जब ये केंद्र ज्ञान और संसाधन के रूप में काम करेंगे तो ये ज़रूरतमंदों, गरीबों की मदद के लिए भी काम करेंगे और आपदा का प्रबंधन भी कर सकेंगे।

इसके अलावा, जब यह भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य प्रदान करेगा तो भीख मांगना बंद हो जाएगा। शरणार्थियों की समस्या भी हल हो जाएगी (ऐसा कहा जाता है कि जब भी भीख और शरणार्थियों की यह समस्या हल हो जाएगी, तभी हम यह कहने के हकदार होंगे कि हम एक बेहतर समाज हैं)। इसके अलावा ये आस्था केंद्र शोषित लोगों, वेश्याओं, भिखारियों और अन्य निराश्रितों के लिए पुनर्वास केंद्र के रूप में कार्य कर सकते हैं, उन्हें भी किसी के बेटे और बेटा मानते हुए (यदि किसी के नहीं तो निश्चित रूप से वे भगवान के बच्चे हैं)।

वस्तुतः सरकार का कर्तव्य बाह्य सुरक्षा प्रदान करना, संवैधानिक न्याय, विदेशी संबंध बनाए रखना तथा समाज के साथ समन्वय बनाए रखना है, इसके अतिरिक्त व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय से संबंधित सभी कार्य समाज/स्थानीय सरकार/धर्म संस्थान के अधीन आते हैं।

सवाल: क्या ऐसी व्यवस्था का कोई उदाहरण है?

उत्तर: यदि यह प्रणाली तर्कसंगत लगती है तो हम नया करने से क्यों डरते हैं, फिर भी आप इस प्रणाली के बारे में संतों और शैतान दोनों से पूछ सकते हैं; यह प्रणाली श्रुति और स्मृति (कथन और स्मरण) में लोगों के बीच बनी हुई है।

व्यवस्थाओं और स्थितियों में सुधार लाने के लिए विश्व में तीन मुख्य धाराएँ चलती हैं:

- i. अगर शरीर या समाज के किसी अंग में कोई समस्या है तो उसे सुधारें, शरीर और समाज दोनों ही ठीक हो जाएँगे। इसमें कहा गया है कि शरीर के हर अंग या समाज के हर व्यक्ति को ठीक करें तो शरीर/समाज ठीक हो जाएगा। इस पद्धति का इस्तेमाल सभी डॉक्टर और समाज के सभी तथाकथित बुद्धिमान लोग और उपदेशक करते हैं।
- ii. इसमें कहा गया है कि अगर सिस्टम सही है तो लोग ठीक रहेंगे, अगर कोई व्यक्ति ठीक है तो शरीर के सभी अंग निश्चित रूप से ठीक रहेंगे। ये वैज्ञानिक योग और प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और प्रणालियों और उनकी प्रक्रियाओं पर शोध करते हैं।
- iii. इसमें कहा गया है कि शरीर के अंग और संपूर्ण व्यक्ति, समाज और उसकी व्यवस्थाएँ दोनों ही ध्यान देने योग्य हैं। इनका कहना है कि यही मूल है, यही सार है और यही धर्म है।

यदि हम उपरोक्त कार्य पर ध्यान केन्द्रित करें तो वर्तमान व्यवस्था को बदलना आसान हो जाएगा, जिसमें दैवीय शक्ति होगी और वह भी बिना किसी पुरोहिताई के। ऐसा लगता है कि समय आ गया है, इसलिए हमें अपने कर्मों को भगवान को समर्पित कर देना चाहिए और अपना काम पूरा करना चाहिए।

सवाल: क्या यह बहुत कठिन कार्य नहीं होगा, क्या नेता या सरकारी अधिकारी ऐसा करने की अनुमति देंगे, क्या लोकतंत्र इसकी अनुमति देता है?

उत्तर: आप समाधान चाहते हैं और साथ ही डर भी है कि यह कैसे संभव होगा, जबकि समस्या की जड़ ही मौजूदा व्यवस्था है। इसमें सुधार करना सबसे जरूरी है। आप प्रार्थना, मेहनत और जश्न मनाना शुरू करें, संवाद शुरू करें और सब ठीक हो जाएगा। हो सकता है कि आपको देश में इन मुद्दों के लिए एक या दो जनमत संग्रह कराने पड़ें। ***

धार्मिक पर्यटन पर कुछ बातें

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

ए. पर्यटन मुख्य रूप से एक समय बिताने की गतिविधि है जिसमें व्यक्ति अपने घर से दूर किसी बेहतर जगह पर शरण लेने की इच्छा रखता है, कम से कम कुछ समय के लिए ताकि नियमित गतिविधि से बच सके और/या तरोताजा हो सके। आम तौर पर पर्यटन का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र अनुभव को समृद्ध करना होता है, जबकि व्यक्ति नए भूगोल, नए स्थानों, नई संस्कृति और परंपराओं, लोगों और उनकी जीवनशैली से परिचित होता है।

पर्यटन को शिक्षा और प्रशिक्षण का विस्तार भी कहा जा रहा है, जिसमें पूर्वजों को श्रद्धांजलि देना और विशेष स्थानों पर प्रार्थना करना तथा विशेष स्थानों और अस्पतालों में उपचार कराना शामिल है, जिसे अभी तक पर्यटन नहीं कहा जा सकता।

Б. सामान्यतः तीर्थस्थल ऋषियों, साधुओं, फकीरों, संन्यासियों, साधकों, गुरुओं के निवास स्थान होते हैं, न कि स्व-निर्मित ब्रह्मचारियों या मजबूर ब्रह्मचारियों के) और ऐसे लोगों के लिए, क्षेत्र में शांति और सौहार्द अधिक महत्वपूर्ण है, न कि अधिक पर्यटकों को आकर्षित करना।

सी. गंगा नदी से बातचीत,

प्रश्न: कहा जाता है कि आपकी महान् आत्मा माँ गंगा युगों-युगों से लोगों के पाप धोती आ रही हैं; क्या आप सचमुच ऐसा करती हैं?

गंगा: ओह! हाँ।

प्रश्न: यह तो बहुत अच्छी बात है, तो फिर आपके पास ढेरों पाप जमा हो गए होंगे? आप क्या कहते हैं?

गंगा: लोगों को किसी भी चीज को छोड़ने में बहुत कठिनाई होती है और लेने में बहुत आसानी होती है, इसलिए हालांकि लोग यहां अपने पाप धोने के लिए आते हैं, लेकिन ज्यादातर लोग यहां अपने पाप छोड़ने के बजाय अपने खजाने में और पाप जोड़ लेते हैं। वास्तव में ऐसा बहुत कम होता है, जो वास्तव में अपने पापों को धोने की इच्छा रखता हो।

में स्वयं ऐसे सभी पापों को एकत्रित करता हूँ, उन्हें अपने प्रवाह के साथ ले जाता हूँ और सागर में छोड़ देता हूँ। सागर, इन पापों को वाष्पित करके बादल में डाल देता हूँ और फिर बादल वर्षा के माध्यम से इन पापों को छोड़ देता है। इस प्रकार मैं, सागर और बादल पाप से मुक्त रहते हैं।

The real devotee abides by my saying: मन चंगा तो कठोती में गंगा (when the mind is joyous then water in every urn is Ganga water) and in a way maintain my cleanliness,

D. It is said:

तीर्थ चाले दोड़ जन, चित चंचल मन चोर।,

एक पप पोस्तेरैतल्ये ... नहीं , दास नये लाये बन्न ॥

(तीर्थयात्रा मुख्यतः दो प्रकार के व्यक्ति करते हैं - एक जिनका ध्यान डगमगाता रहता है और दूसरे जिनके मन में चोर रहता है, ऐसे लोग जब यात्रा करते हैं तो अपना एक पाप तो धो नहीं पाते लेकिन दस नए पाप ले आते हैं)।

तीर्थयात्राएं भगोड़ों और उन लोगों द्वारा भी की जाती हैं जो बड़े संघर्ष, धर्म-युद्ध (महाभारत के दौरान बलराम द्वारा) के समय भी पक्ष लेने से बचते हैं, लेकिन ये दुर्लभ घटनाएं हैं।

उनका कहना है कि तीर्थयात्राएं अधिकतर उपरोक्त दो प्रकार के लोग ही करते हैं, इसलिए ऐसे लोगों के लिए संपूर्ण बुनियादी ढांचे और सहायता प्रणाली की योजना बनाना और फिर इन पंक्तियों के आधार पर किसी शहर या देश के पूरे बिजनेस मॉडल के बारे में सोचना या तैयार करना उचित नहीं है।

धार्मिक और चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देना एक बीमार और परपीड़क मानसिकता कहा जा सकता है, यह एक मृत्यु-केन्द्रित दृष्टिकोण है जो समाज के पतन का सूचक है, और इस तरह इसे समाज या देश के लिए एक योग्य प्रस्ताव नहीं माना जा सकता है।

ई. पर्यटन मुख्य रूप से एक समय व्यतीत करने वाली गतिविधि है जिसमें कम से कम कुछ समय के लिए किसी बेहतर जगह पर शरण लेने की इच्छा होती है ताकि नियमित गतिविधि से बच सकें और/या तरोताजा हो सकें। आम तौर पर पर्यटन का मतलब अलग-अलग जगहों की यात्रा करके या दूर-दराज के इलाकों से यात्रियों को आकर्षित करके नए भूगोल, नए स्थानों, संस्कृति, परंपराओं, लोगों और उनकी जीवनशैली से परिचित होना होता है।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए, यह अपेक्षा की जाती है कि सोसायटी सभी प्रकार की अवसंरचनात्मक सहायता, स्वच्छ और हरित वातावरण, भीख मांगने और धोखाधड़ी से मुक्त माहौल प्रदान करने की दिशा में प्रयास करेगी।

इस समझ के साथ, यदि पर्यटन को बढ़ावा देना है तो इसके लिए कॉर्पोरेट और उद्योगों की तुलना में वन और वानिकी की अधिक आवश्यकता होगी।

पर्यटकों से होने वाली आय पर निर्भर रहना चर्चों, मस्जिदों, मंदिरों के पुजारियों और इन संस्थाओं के बाहर बैठने वाले भिखारियों के लिए तो अच्छा हो सकता है, लेकिन किसी समाज या देश के लिए नहीं।

विदेशी समुद्र तट, ताज़ा मदिरा, ग्रामीण इलाकों में भांग और ताज़ी पकी हुई मछलियाँ अच्छी लगती हैं लेकिन कई देशों में इस तरह के पर्यटन से बहुत बुरे अनुभव होते हैं। इसके अलावा, पर्यटन पर आधारित अर्थव्यवस्था हमेशा दूसरों पर निर्भर रहेगी, यह कभी भी आत्मनिर्भर नहीं बन सकती।

धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य/चिकित्सा के आधार पर कोई भी पर्यटन विकास एक पाखंडी समाज का निर्माण करने के लिए बाध्य है और ऐसा समाज और देश स्थानीय लोगों में हीन भावना या श्रेष्ठता की भावना उत्पन्न करने के लिए बाध्य है, साथ ही ऐसी स्थिति भी उत्पन्न होती है जिसमें भीख मांगने और तड़क-भड़क वाले व्यापार को जगह मिल जाती है, चाहे वह सारनाथ हो, श्री-सलेम हो, श्रीनगर हो, श्रीलंका हो या स्विट्जरलैंड हो (जैसा कि हम वर्तमान में देख रहे हैं)।

इसके अलावा, पर्यटन और धन प्रेषण पर आधारित अर्थव्यवस्था जल्द ही ध्वस्त होने वाली है। पुराने लोगों का मानना है कि यह सोचना अजीब है कि बजट इस उम्मीद पर बनाया गया है कि हमारे बच्चे दूसरे देश में जाकर हमें पैसे (धन प्रेषण) भेजेंगे और फिर दूसरे देशों के बच्चे हमारे देश में पर्यटक बनकर आएंगे और हमें पैसे देंगे। कई देशों की आर्थिक बर्बादी इसी सोच का नतीजा है, न कि सिर्फ भाई-भतीजावाद, साम्राज्यवाद और कुप्रबंधन का।

जी. हाल ही में, बीते वर्ष दो हजार बीस -2020' ने भारत में देवी-देवताओं, ईश्वर के पुत्र या ईश्वर के दूत या यहां तक कि गया (मुक्तिधाम) जैसे स्थान पर वायरस और बैक्टीरिया का वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश की है, इस तथ्य ने स्पष्ट रूप से स्थापित कर दिया है कि पर्यटन, इसके समर्थित उद्योग और सेवाओं को कभी भी बंद किया जा सकता है और इस पर निर्भर लोगों के जीवन को खतरे में डाला जा सकता है और इस पर निर्मित बुनियादी ढांचे को निष्क्रिय किया जा सकता है।

बम विस्फोट, अपहरण, दुर्यवहार, बीमारियों का फैलना और इसके परिणामस्वरूप पर्यटन आय में कमी आना एक छोटी सी बात है, मुख्य मुद्दा मानसिकता का है जो अर्थव्यवस्था की दिशा तय करती है, जो समाज/देश को आकार देती है और उसकी नियति तय करती है।

प्रश्न यह उठता है कि जब भगवान ने हमें इतना कुछ दिया है तो भीख मांगने को बढ़ावा क्यों दिया जाए। यह हमें पर्यटन और धन प्रेषण पर आधारित अर्थव्यवस्था के बारे में अपनी योजना पर पुनर्विचार करने के लिए कहता है।

ऊपर प्रस्तुत है

भारत और विश्व में क्या गलत हुआ, इस पर कुछ बातें

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुति में शामिल है: (1). व्यापक रूपरेखा,
(2). गोमांस पर काल्पनिक चर्चा (3). समाधान केंद्रित प्रस्तुतियाँ:

1. व्यापक रूपरेखा:

आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि जैसे ही अंधकार छाने लगता है और अंधकार युग या काला युग या कलयुग या मशीन युग (काल- पुर्जा युग) या कलयुग या कल-काली का युग शुरू हो जाता है। कलयुग के आगमन के साथ ही सभी ऋषि-मुनि अपने पैरों को पीछे खींच लेते हैं और अपने आप को एकांत और प्रार्थना में समर्पित कर देते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि अंधकार युग के आगमन के साथ ही अंधकार में काम करने वाले सभी रात्रिकालीन उल्लू, बैटमैन, स्पाइडरमैन, शिकारी, डाकू, चोर, मोहिनी, जादूगर, डार्क वेब के संचालक, धूर्त कलाओं, काले जादू और छद्म विज्ञान के स्वामी तथा जीव-जंतु और उपदेशक सक्रिय हो गए।

अंधकार के प्रभाव में तथा संतों और महात्माओं से उचित संरक्षण और मार्गदर्शन से वंचित आम लोग आसानी से चालाक कलाओं और काले जादू के स्वामियों की ओर आकर्षित हो जाते थे।

अंधकार युग का पहला प्रभाव तब दिखाई दिया जब लोग, दैनिक सुख-सुविधाओं से वंचित, अंधकार युग से अंधे, सड़े-गले फलों और अनाजों से बनी मदिरा के नशे में चूर होकर, स्नेहहीन, अनादरशील हो गए। परिणामतः लोग इतने कमजोर हो गए कि वे अपने से बड़ों के प्रति आदर और कर्तव्यपरायण व्यवहार नहीं रख पाए, पशु-पक्षी, वनस्पति-जंतु, मछलियाँ और जलचर इन सबसे परस्पर सहयोग से वंचित हो गए, अतः सामान्यतः लोग निराश हो गए।

फिर संत के वेश में शैतान आता है जो लोगों को पालतू जानवरों को वश में करने की सलाह देता है, किसी भी तरह से पालतू जानवरों पर नियंत्रण करने की सलाह देता है, चाहे इसके लिए बछड़े को मारना पड़े या बैल को बधिया करना पड़े, उनकी नाक में छेद करके उसमें धागा/रस्सी डालकर उन्हें कैद/कारावास में रखना पड़े।

पर्यावरण का व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग करने की इस सोच ने पशुओं, विशेषकर गौवंश पर बहुत अत्याचार किए हैं। बैलों को बधिया करके उन्हें बैल बना दिया गया है तथा खेती में उन्हें दास पशुओं के रूप में इस्तेमाल किया गया है, जिससे हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन तथा दूध से बने उत्पादों में

बैल तथा गाय का अभिशाप आ गया है, यह भूलकर कि भोजन/दूध ही मूड तय करता है तथा पानी (बीयर/वाइन में सादा या सड़ा हुआ) आवाज तय करता है, हम स्वयं भी पतित/नीचे गिर गए हैं।

जो लोग गाय का दूध पीते हैं और फिर गोमांस खाते हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि वे मशीनों की तरह असंवेदनशील हो गए हैं और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब ये लोग भाई-भतीजावाद और नरसंहार की ओर मुड़ जाएं।

इसके अलावा, गोमांस की बढ़ती खपत ने डेयरी व्यवसाय को बढ़ावा दिया है और डेयरी उत्पादों के बड़े पैमाने पर उपयोग के लिए प्रचार योजनाएं शुरू की हैं ताकि गोमांस की निरंतर मांग को पूरा किया जा सके। इसका नतीजा दूध, चीनी आदि के साथ चाय और कॉफी की बढ़ती खपत में देखा जा सकता है।

इससे समस्या और भी जटिल हो गई है और इसके परिणामस्वरूप सर्वाधिक उपजाऊ भूमि का बीस प्रतिशत हिस्सा घास, गन्ना, चाय और कॉफी की खेती के लिए उपयोग में लाया जा रहा है, जो वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और चौतरफा दुख का प्रमुख कारण है।

2. गोमांस पर काल्पनिक चर्चा: गोमांस खाने वाले देशों की खाद्य सुरक्षा परिषद द्वारा की गई काल्पनिक चर्चा निम्नलिखित है:

सदस्य: प्रश्न: हम अपने लिए गोमांस की निरंतरता के बारे में कैसे आश्वस्त हो सकते हैं, क्योंकि हमारे यहां जलवायु के कारण गोमांस नहीं है और साथ ही गौपालन भी बोज़िल है?

चीफ – जवाब: हम भारतीय उपमहाद्वीप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देशों से इसे आयात करते हैं और इसमें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, बल्कि वे इसे भरपूर मात्रा में निर्यात करना पसंद करते हैं।

प्रश्न: यह तो ठीक है, लेकिन कोई नहीं जानता कि यदि गायों की आपूर्ति कम हो गई, तो क्या होगा, इससे गोमांस का उत्पादन कम हो जाएगा, जिससे एक ओर तो कीमतें बढ़ेंगी और दूसरी ओर हमारे देश में गोमांस की मांग बढ़ेगी, क्या हमने इस दिशा में कोई कदम उठाया है?

उत्तर: यद्यपि हम यहाँ सादी चाय और कॉफी लेते हैं, परन्तु हमने उन देशों में दूध और चीनी के मिश्रण को बढ़ावा दिया है। भारत जैसे देशों में सादी चाय और कॉफी का अर्थ है, चाय जिसमें चाय की पत्ती/दाना, पानी, दूध और चीनी हो तथा विशेष चाय का अर्थ है, उसमें इलायची, अदरक, तुलसी आदि मिलाना, इसी कारण से उन्हें दूध की बड़ी आवश्यकता बनी रहेगी, जिसका अर्थ है कि गाय, भैंस, बकरी आदि की बड़ी संख्या होगी, जब दूध की आपूर्ति कम हो जाती है, तो इन पालतू पशुओं को छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है; ये गाय और भैंस हमारे लिए गोमांस की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त से अधिक हैं। इसके अलावा, गोमांस की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हम यह सुनिश्चित करते हैं कि इन देशों में केवल

दूध वाली चाय और कॉफी का ही विज्ञापन किया जाए, फिर हम डेयरी उद्योग, चीनी उद्योग, चाय और कॉफी के बागानों को बढ़ावा देने के लिए आसान ऋण प्रदान करते हैं, फिर हम इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि चीनी और डेयरी उत्पाद पर सब्सिडी कैसे आवश्यक है, ताकि ये उत्पाद इन देशों के आम लोगों की पहुँच में बने रहें। फिर गायों के लिए चारा और घास सुनिश्चित करने के लिए हम कृषि को बढ़ावा देते हैं, और हम यह सुनिश्चित करते हैं कि जब जंगलों को काटा जाए या जंगलों में आग लग जाए और वे राख हो जाएं तो कोई ज्यादा शोर न मचाए, ताकि कृषि और चारागाह के लिए भूमि बढ़ाई जा सके।

प्रश्न: यदि ऐसा है, तो हम केवल गोमांस खाने के लिए इतना पैसा खर्च कर रहे हैं? क्या हम इस पैसे को वापस करने के लिए कुछ करते हैं?

उत्तर: ओह! हाँ। यह आम बात है कि अगर कोई व्यक्ति चीनी और दूध के साथ चाय और कॉफी पीता रहता है, तो उसे निश्चित रूप से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी, जिसकी शुरुआत मौखिक स्वच्छता और पाचन में गिरावट से होगी। शरीर में ये दो ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ से सभी बीमारियाँ शुरू होती हैं। इसलिए यह निश्चित है कि दूध और चीनी के साथ चाय और कॉफी पीने वाले लगभग सभी लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी और वे डॉक्टरों के पास जाएँगे और दवाइयाँ खरीदेंगे। हमने अपने स्तर पर दवा कंपनियों और अस्पतालों की श्रृंखला का बड़ा स्वामित्व हासिल कर लिया है। इससे हमें बहुत बड़ा लाभ होता है, जो उन देशों में डेयरी और चीनी व्यवसाय को बढ़ावा देने में हमारे द्वारा किए गए निवेश से कहीं अधिक है। इसके अलावा, हमने मीडिया में पर्याप्त निवेश किया है (हमारे पास समाचार पत्रों, समाचार चैनलों और सोशल साइट्स के पर्याप्त शेयर हैं) ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे हमारी आवाज़ और भावनाओं को प्रतिध्वनित करें (न कि वहाँ या किसी और की)। इसने हमें उन देशों में पर्याप्त रूप से शक्तिशाली बना दिया है कि हम अपनी शर्तों को निर्धारित करने की स्थिति में बने रह सकते हैं और साथ ही इन निवेशों से लाभ का अपना हिस्सा कमा सकते हैं।

प्रश्न: ऐसा सुनने में आया है कि कुछ लोग गाय को माता मानते हैं, उन्हें किस प्रकार संबोधित किया जा रहा है?

उत्तर: हमने मदर डेयरी के विचार को बढ़ावा दिया है, और कैसे प्रतिदिन कम से कम एक गिलास दूध पीना अच्छा है, हम अपने बुद्धिजीवियों के माध्यम से उन्हें अपने स्वयं के शास्त्रों और लेखन की पकड़ में अंधा, डरपोक, कायर बनाए रखने के लिए सब कुछ करते हैं, जैसे कि दूध अमृत है- सुधा, इसलिए सुधा डेयरी, दूध अमूल्य है: अमूल्य- अमूल डेयरी, इसलिए अमूल दूध- भारत का स्वाद, इस तरह वे संतुष्ट और संयमित रहते हैं।

आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि कुछ तथाकथित प्रबुद्ध वक्ता गाय को माता कहकर संबोधित करते हैं, लेकिन अपने प्रवचनों के दौरान चाय या कॉफी में दूध और चीनी मिलने से उन्हें कोई आपत्ति नहीं होती, बल्कि उन्हें तो स्वयं भी इसे पीने में कोई आपत्ति नहीं होती।

इनमें से कुछ ने चाय के बुरे प्रभावों का जिक्र तो किया, लेकिन दूध और चीनी के बारे में कुछ भी कहे बिना आयुर्वेदिक चाय पेश की। इसके अलावा, ये उपदेशक हमारे देशों में जाकर और अपने ज्ञान (जिसे वे ज्ञान कहते हैं) को गोमांस खाने वाले समुदायों के बीच बाँटकर खुश महसूस करते हैं, ऐसा लगता है कि वे हमसे मिलने वाले प्रसाद से अंधे हो गए हैं।

फिर अधिकांश पुरुष और महिलाएं अपने जीवन में खालीपन को भरने के लिए चाय और कॉफी में कुछ न कुछ ढूंढते रहते हैं। जब घर में धर्मगुरु और महिलाएं, कर्मचारी और अधिकारी, अनुयायी और नेता गाय को माता मानने के नारे लगाते हुए चीनी और दूध वाली चाय और कॉफी बनाने, पीने और परोसने में व्यस्त हो जाते हैं, तो न केवल गोमांस बल्कि कई अन्य चीजों और सेवाओं की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित हो जाती है। इसके अलावा, उन्होंने स्वागत पेय के रूप में दूध और चीनी मिली चाय और कॉफी देने की संस्कृति विकसित की है, इसलिए हमें इन पाखंडियों से किसी भी चीज की चिंता करने की जरूरत नहीं है।

प्रश्न: इसका मतलब यह है कि हम गोमांस की निरंतरता को बनाए रखते हुए कमाई भी कर रहे हैं, क्या यह हमारी चतुराई और उनकी सरासर मूर्खता नहीं लगती?

उत्तर: हा हा ,

प्रश्न: यदि उन्हें इस तथ्य का एहसास हो जाए तो क्या होगा?

उत्तर: ऐसा नहीं है कि किसी को पता नहीं है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है और जब भी वे अपनी आवाज उठाते हैं, तो उनके अपने साथियों द्वारा उन्हें दबा दिया जाता है, जो चीनी और दूध मिश्रित चाय और कॉफी के आदी हैं, जिन्होंने अस्पतालों और दवा कंपनियों के लोगों के अलावा डेयरी से लाभ का परीक्षण किया है। इसे आसानी से हटाया नहीं जा सकता है, यह इन देशों में आंतरिक युद्ध का कारण बन सकता है, जिसे उनके नेता किसी भी कीमत पर टालना चाहेंगे और यदि वे (उन देशों के नेता) विफल होते हैं तो हम इन देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने में पर्याप्त महारत रखते हैं। हमारे लिए दूसरों को गाली देना, दूसरों को लड़ाई, झड़प, युद्ध के लिए उकसाना खेल/खेल है, जिसे इनमें से कई नेता जानते हैं, इसलिए वे हमसे डरते रहते हैं। इसके अलावा दूध और चीनी मिश्रित चाय और कॉफी से लत छुड़ाने में कम से कम एक महीने का समय लगता है, जिसे पूरे समुदाय और देश के लिए शामिल करना और उसका पालन करना कठिन होता है।

प्रश्न: क्या आप अपने द्वारा किये जा रहे बड़े-बड़े दावों का कोई उदाहरण दे सकते हैं?

उत्तर: हां, वे वहां हैं:

(क) उदाहरण के लिए, राजनीतिक हलकों के माध्यम से यह विश्वास फैलाया गया कि यह मुसलमान हैं जो गायों का वध कर रहे हैं, और मुसलमानों के बीच यह माना जाता है कि ऐसा करना उनका मौलिक अधिकार है, और इस प्रकार गोमांस पर एक वर्ग विभाजित हो गया, जबकि तथ्य यह है कि गोमांस की आपूर्ति करने वाले अधिकांश स्वचालित बूचड़खाने गैर-मुस्लिम समुदाय द्वारा संचालित और स्वामित्व में हैं (उन समुदायों सहित जो हर मानदंड और हर रूप में अहिंसा के लिए पूरी आवाज/शोर मचाते हैं)।

(ख) भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 1998 से 2005 तक अपनी लंबी सुनवाई में 2005 में गाय की रक्षा के लिए एक फैसला सुनाया, लेकिन सरकार में किसी ने भी इस पर ध्यान नहीं दिया।

(ग) प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक संसद में तीन बार लाया गया, लेकिन (i) एक बार सरकार ने वर्ष 2001 के आसपास सुबह विधेयक पेश किया, लेकिन शाम को यह कहते हुए वापस ले लिया कि इस पर बाद में चर्चा की जाएगी, (ii) एक अन्य अवसर पर, गोमांस पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित होने वाला था, जब एक महिला सांसद (जो हिंदू समुदाय से होने का दावा करती हैं) ने कहा कि मैं गोमांस खाती हूँ, इसलिए यदि विधेयक पारित हो जाता है तो मेरी पसंद का भोजन करने के मौलिक अधिकार का क्या होगा, और विधेयक गिर गया (iii) तीसरी बार जब विधेयक पेश किया गया, तो कोलकाता के हिंदू समुदाय से संबंधित एक प्रमुख पत्रकार (जिन्होंने एक बार भारत के राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार खड़ा किया था) ने लिखा कि वे गोमांस खाते हैं और उनका और उनके जैसे लोगों का क्या होगा - इस कथन का फिल्म उद्योग में कुछ हस्तियों (सभी हिंदू) ने समर्थन किया और विधेयक फिर से गिर गया। तब से हम कुछ आवाजें सुनते हैं, लेकिन ऐसा कुछ भी ठोस नहीं है, जिससे यह कहा जा सके कि संसद में गोमांस पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पेश किया जा रहा है। (d) स्पेन में पूर्ण रूप से बैल लड़ाई के सत्र होते हैं, लेकिन भारत में तमिलनाडु में भी इस पर आपत्ति जताई गई है। (e) हम गाय की महिमा पर तो प्रवचन देते हैं, लेकिन बैल पर चुप्पी साध लेते हैं; बढ़ती जनसंख्या के कारण गाय और बैल, भैंस और भैंस के बीच का अंतर, गाय और भैंस के नर बच्चों को छोटी उम्र में ही भोजन देना बंद करके मार देना, बैल और भैंस को छोटी उम्र में ही बधिया कर देना, गाय और भैंस को मल्लिचंग के लिए इंजेक्शन लगाना, गाय और भैंस को मल्लिचंग के लिए मशीनों का उपयोग करना, गाय और भैंस के कृत्रिम गर्भाधान पर कोई बात नहीं करता। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

प्रश्न: क्या ऐसा है? वे किस प्रकार के लोग हैं?

उत्तर: आप अपने निष्कर्ष निकाल सकते हैं, पाखंडी या भावनात्मक रूप से, नैतिक रूप से, नैतिक रूप से मृत या जो भी आप चाहते हैं। ये लोग तब से पतित हो गए जब से उन्होंने अधिकांश बैलों को बधिया करना शुरू कर दिया, जिससे संतान के लिए बहुत कम बचा, फिर ये लोग खेती और बैलगाड़ी में इन बधिया किए गए बैलों का उपयोग करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ग में नपुंसकता, अनाचार, निराशा, लाचारी आ गई। इसके अलावा जब कुछ धर्मों ने आधिकारिक तौर पर मांस खाने को विकल्पहीनता के मूल्य का हवाला देते हुए स्वीकार किया और उपदेश दिया कि ऐसे अनुयायियों को अपने

भोजन का चयन करने का कोई विवेक नहीं होना चाहिए, और एक अन्य धर्म ने कहा कि व्यक्ति को प्रत्यक्ष हत्या से दूर रहना चाहिए, हालांकि व्यक्ति हत्या के फल का आनंद ले सकता है (जैसे कृषि बहुत हिंसा का कारण बनती है इसलिए कृषि से दूर रहें लेकिन कोई कृषि का व्यवसाय कर सकता है) इन लोगों को कमोबेश उपयोगितावादी बना दिया। प्रश्न: दो और प्रश्न हैं, एक हमें प्राप्त होने वाले गोमांस की गुणवत्ता के बारे में, तथा दूसरा, क्या पारिस्थितिकी गड़बड़ी हमें प्रभावित करेगी, जो गन्ना, चाय, कॉफी, घास की खेती के लिए पेड़ों की अत्यधिक कटाई के कारण होती है, इसके अलावा अदरक, इलायची की थोड़ी मात्रा भी नहीं होती, जो उन देशों में दूध, चीनी और मसालों के साथ चाय तैयार करने के लिए आवश्यक है।

उत्तर: यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है जिसके लिए हमने जलवायु परिवर्तन पर चर्चा और अनुवर्ती कार्रवाई को बढ़ावा दिया है, उम्मीद है कि इस अभ्यास से कुछ समाधान निकलेगा, चिंता न करें।

प्रश्न: तो क्या हम गोमांस की निरंतर आपूर्ति के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं?

उत्तर: हां, बिलकुल, जब तक हम अपना आधिपत्य बनाए रखते हैं, तब तक आराम का समय ही सर्वोपरि है।

प्रश्न: एक अंतिम प्रश्न, हम कब तक उन पर बढ़त बनाए रखेंगे?

उत्तर: यह वह प्रश्न है जिसके बारे में उन्हें अधिक चिंतित होना चाहिए। हम सभी मनुष्य हैं और हर जाति अपनी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शक्ति में लगभग समान है। उन पर हमारी बढ़त हमारी अतिरिक्त शक्ति के कारण नहीं बल्कि उनकी कमजोरी के कारण है। यह सरल है कि यदि कोई बैल को मार रहा है तो उसे धमकाया जाएगा, यदि कोई बैल को निर्दयता से नपुंसक बना रहा है तो उसके साथ बैल की तरह निर्दयता से व्यवहार किया जाएगा और इस तरह वह कायर बन जाएगा और जवाब देने की स्थिति में नहीं होगा।

बैल, गाय, भैंस और भैंसों का दुरुपयोग करने वालों की हालत तो देखिए, कितनी दयनीय है। चाहे वे किसान हों, दूधवाले हों या उनके पुजारी, क्या आपको लगता है कि वे कभी अपने तौर-तरीके बदलेंगे? एक तरह से उन्होंने उसी भगवान को नाराज़ किया है जिसकी वे पूजा करते हैं। उनके बारे में हमारी राय के बारे में आप और क्या सुनना चाहते हैं।

3. समाधान केन्द्रित चर्चा: आध्यात्मिक मंडलियों में कहा जाता है कि सभी कंपन, उनकी परिणामी तरंगें, इन तरंगों का उठना-गिरना ईश्वर की कृपा है और परिवर्तनों को पूरी विनम्रता से स्वीकार करना चाहिए। गुरुजन हमारे सामूहिक पतन के निम्नलिखित कारणों और सुधार के तरीकों की ओर संकेत करते हैं:

3.1 . दुनिया के हर धर्म में गाय और बैल के साथ कुछ न कुछ संबंध पाया जाता है, कुछ लोग गाय को अपने बलिदान और शुद्धिकरण की प्रक्रिया का आवश्यक हिस्सा मानते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग गाय और बैल को पवित्र मानते हैं। एक धर्म कहता है कि वर्तमान प्रबुद्ध व्यक्तित्व मुक्ति से पहले अपने पिछले जन्मों में गाय रहे होंगे, इसलिए, उनके धर्म में गाय की पूजा तब की जाएगी जब वह सभी कर्मों को त्याग कर मुक्त हो जाएगी, कुछ लोग तो यह भी कहते हैं कि वर्तमान अवतारों में गाय और बैल देवी-देवताओं के अभिशाप के कारण जी रहे हैं। लेकिन एक बात बहुत दुखद लगती है कि, इन सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर गाय और बैल पर अपराध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, जिसके बदले में हर धर्म को गाय वंश से अभिशाप मिल रहा है। यह कहा जा सकता है कि खेत में सारा दूध और सारी उपज अभिशप्त हो जाती है। ऐसा अभिशप्त दूध पीना और ऐसा अभिशप्त भोजन खाना उन सभी बुराइयों की जड़ कहा जा सकता है जो मानव जाति कर रही है। यह एक समय परीक्षित और सिद्ध तथ्य है, जिसमें कोई संदेह नहीं है कि पेय पदार्थ (पानी, दूध, फलों का रस, सूप) आवाज को प्रभावित करते हैं, भोजन मूड/मन को प्रभावित करता है और नशा स्थिति/भाग्य का निर्धारण करता है।

(जैसा पानी वैसी वाणी, जैसा अन्न वैसा मन, जैसा नशा वैसी दशा ::: *jaisa Pani vaisi Vani, jaisa Ann vaisa man, Jaisa nasha vaisi dasha::* 'As water, so voice', As food, so mood/mind, As intoxication, so condition).

3.2) कहा जाता है कि मनुष्य द्वारा अधिक दूध पीने की सनक ने उसके बच्चों को इतनी छोटी उम्र से ही भ्रष्ट कर दिया है कि बड़े होने पर उन्हें यह (बछड़ों को माँ का दूध पीने से रोकना, नर संतानों की हत्या और बधियाकरण) अपराध ही नहीं लगता। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि दूध देने वाले पशुओं पर होने वाले इस अपराध से उन लोगों को भी कोई फर्क नहीं पड़ता जो गौमाता और शक्तिशाली नंदी की प्रशंसा में नारे लगाते रहते हैं। अफसोस! साधु-साध्वी, सुखी गुरु और सद्गुरु की पूरी नस्ल भी पशुओं पर अपराध करके इकट्ठा किया गया दूध पीकर इतनी भ्रष्ट हो गई है कि अब समाज में उनकी हुकूमत नहीं चलती। यह कहा जा सकता है कि साधु, साध्वी, स्वामी, संन्यासी, संन्यासिन आदि सभी प्रकार के लोगों को आत्म-शुद्धि, गहन ध्यान और सभी सुख-सुविधाओं से दूर रहकर बड़े यज्ञ (निस्वार्थ कार्य) की आवश्यकता होती है, जो उनमें स्वयं के विश्वास और आत्मविश्वास की बहाली के लिए एक आवश्यक पहला कदम है, तथा वे फिर से जनमानस का नेतृत्व करने और गौरव प्राप्त करने के अधिकारी बन जाते हैं।

यह सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता है तथा सभी को इस प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करता है कि वह हमें विवेक और संवेदनशीलता प्रदान करे, ताकि हम गाय और बैल के प्रति अपराध करने से स्वयं को रोक सकें तथा समस्त जीवित प्राणियों और निर्जीवों के सम्मान को बहाल करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करे, इसके बिना कोई भी अर्थव्यवस्था टिक नहीं सकती।

अच्छी बात है, कहते हैं भोर होने वाली है,

ऊपर प्रस्तुत है,

महान चाणक्य के अर्थशास्त्र पर कुछ आलोचक

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

A. आचार्य चाणक्य ने कहा

खुशी की जड़ धर्म : । धर्म का जड़ अर्थ : ।

अर्थ का जड़ राज्य का . राज्य का जड़ इन्द्रियजय :

वह है:

सुख का मूल है, धर्म। धर्म का मूल है, अर्थ।

अर्थ का मूल है, राज्य। राज्य का मूल है, इन्द्रियों पर विजय।

The basis of true pleasure is dharma (religion), basis of dharma is Arth (Arth means, money/wealth and its process). Basis of Arth is Rajya/State, and the basis of the State lies in control over the indriya (sense faculties).

हालाँकि, इस श्लोक में व्यक्त भावनाएँ सनातन धर्म से मेल नहीं खातीं और न ही किसी पवित्र ग्रंथ में इसका उल्लेख मिलता है। पवित्र ग्रंथ के अनुसार, धर्म ही आधार और आधार है।

इस श्लोक के कारण क्या हुआ कि राज्य और उसके प्रधान (राजा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री) में यह भावना आ गई कि वे समस्त अर्थव्यवस्था और धर्म के केंद्र में हैं, जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है या नहीं।

चूँकि, यह जांचने के लिए कोई प्रत्यक्ष तंत्र नहीं है कि राजा/प्रधान नेता ने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है या नहीं, लेकिन इस श्लोक ने निश्चित रूप से यह मिसाल कायम कर दी है कि राज्य में सभी आर्थिक गतिविधियों की देखभाल करना उनका विशेषाधिकार है।

उत्तर: 1. प्रश्न उठता है कि यदि उपरोक्त श्लोक अनुभव की कसौटी पर या गहन चिंतन में सत्य पाया जाता है, तो हम भारत और विश्व की पिछले पच्चीस सौ वर्षों की कुव्यवस्था, व्यापक गरीबी आदि की स्थिति का, विशेषकर महान चाणक्य के बाद, कैसे हिसाब लगा पाएंगे?

इसके अलावा, पिछले पच्चीस सौ वर्षों में हमारे पास शायद ही कोई ऐसा राष्ट्राध्यक्ष हुआ हो जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की हो?

A.2. कई लोग कहते हैं कि यह श्लोक व्यक्ति और समाज की स्वतंत्रता को कमजोर करता है और समाज की सामूहिक बुद्धिमत्ता पर भी सवाल उठाता है, जबकि तथ्य यह है कि यह लोग ही हैं जो समाज का निर्माण करते हैं, और यह समाज ही है जो सबसे पहले राज्य का निर्माण करता है, न कि इसके विपरीत।

भगवान ने राजा/रानी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि को देश नामक फार्म हाउस के मालिक के रूप में नहीं बनाया है और उनके खेल के लिए जनता को बनाया है।

हम इस बात की सराहना कर सकते हैं कि चाणक्य (मगध साम्राज्य के संस्थापक, जिसे इसकी लंबाई और चौड़ाई और अर्थशास्त्र में सबसे बड़ा कहा जा सकता है) द्वारा प्रस्तुत उपरोक्त कथा मुख्य कारणों में से एक है कि क्यों राजा/रानी/राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री अपनी मर्जी और कल्पना के अनुसार कार्य करते रहते हैं, इस तथ्य की अनदेखी करते हुए कि अधिकांश लोग (मालिक) अभी भी गरीब हैं और उन्हें मोबाइल, मोटरसाइकिल और मंगल/बृहस्पति में कॉलोनी से अधिक बुनियादी सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता है।

ऐसा कहा जाता है कि लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व हुए महान आचार्यों का एक संगम, जैसे आदरणीय चाणक्य, कन्फ्यूशियस, प्लेटो, सुकरात आदि, जिनकी लेखनी आज भी चल रही है, ने अपना जीवन जीया है और दो विश्व युद्धों, विश्वव्यापी तालाबंदी, समवर्ती आर्थिक उथल-पुथल और चल रहे युद्धों के बाद यह स्पष्ट है कि इनका समुचित पुनरावलोकन आवश्यक है।

ऊपर प्रस्तुत है,

"सोने की अर्थव्यवस्था या स्वर्णिम अर्थव्यवस्था" पर कुछ

निम्नलिखित प्रस्तुत है (पूर्ण लेख के लिए पुस्तक देखें - वैकल्पिक अर्थव्यवस्था: resurrectionofdharma.com):

1. "एक स्वर्णिम अर्थव्यवस्था या सोने की अर्थव्यवस्था, सुनहरा नियम या अच्छाई का नियम? वर्तमान में दुनिया एक चौराहे पर खड़ी है, स्वतंत्रता, सम्मान, स्वस्थ और खुशहाल जीवन का उपदेश देती है लेकिन पैसा, शहद और सोने का अनुसरण करती है।

क्या हमें सुधार की आवश्यकता नहीं है?

यदि हम अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर डालें तो हमें कहना होगा कि सामान्यतः वह स्थिति आ गई है, जिसमें सभी स्वर्णिम नियम धूल खा रहे हैं और 'सोने का नियम' ही मालिक बन गया है, जबकि सोने की लंका को जलाने के बाद तैयार किए गए भारत के अपने प्रशस्ति-पत्र से पता चलता है कि स्वर्णिम आभा से युक्त प्रकृति के नियम पर आधारित अर्थव्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है।

2. It is said: "कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय,

वा खाये बौराये नर, वा पाए बौराये ।"

(कनक, कनक ते सौगुणी , मदकताधिकाये , ये खाये बौराये नर , तेह भुगतान बौराये - अर्थात्; कनक-स्वर्ण का मादक प्रभाव कनक-धतूरे से सौ गुना अधिक है, क्योंकि मनुष्य केवल कनक- धतूरा खाने से ही पागल हो जाता है , जबकि मनुष्य केवल कनक-स्वर्ण को पाकर ही पागल हो जाता है। यह तथ्य जानने के बाद भी भारत में वर्तमान में कनक (तथाकथित मादक पदार्थ) के सेवन पर प्रतिबंध है, लेकिन कनक (स्वर्ण) को बढ़ावा दिया जाता है, जो विरोधाभासी/पाखंडपूर्ण व्यवहार का मामला है।

ऐसा कहा जाता है कि "रावण ने सोने का नियम प्रदर्शित किया जबकि राम ने केवल स्वर्ण नियमों का पालन किया", और भारत में उन्हें एक आदर्श माना गया। पिछले तीन हजार वर्षों में भारत का व्यवहार हमारे द्वारा सीखी गई बातों के अनुरूप नहीं लगता।

चिड़िया कहलाने में गर्व महसूस करने लगा, जिसे कोई भी पकड़ सकता है, लूट सकता है या आसानी से मार सकता है।

3. यह आश्चर्य की बात है कि कैसे साधारण शब्द सोना का उपयोग भी हमारे साथ छल करता है, जैसे - स्वर्ण पदक (वास्तविक सोने के साथ या बिना), कृत्रिम सोने के आभूषण , सोने का कप, स्वर्ण योजना, स्वर्ण जयंती, सोने की चाय, सोने की कॉफी, सोने की परत वाली सिगरेट, स्वर्ण पर्यटन आदि, क्योंकि

हेरफेर के अलावा कोई भी पैरामीटर नहीं है जो इस अचानक और घातीय मूल्य वृद्धि को उचित ठहरा सके।

* जीवित रहने के लिए भारत जैसे देशों के लोगों के पास एकमात्र रास्ता यह है कि वे इन वस्तुओं से दूर रहें और त्यौहारों और शादियों के दौरान सोना और चांदी खरीदकर उन्हें बैंक लॉकरों में रखने के उत्साह/प्रलोभन से दूर रहें।

*भारत (भा-प्रकाश, + रत-व्यस्त = भारत-दुनिया को प्रकाशित करने और लोगों को ज्ञान देने में व्यस्त) ज्ञात दुनिया में राख से दो बार उठ खड़ा हुआ है और सोने के राज {रावण और दुर्योधन (दुर्यो -गलत दिमाग + धन -धन)} को समाप्त कर दिया है और सुनहरा राज स्थापित किया है (एक राम द्वारा और दूसरा कृष्ण द्वारा) को फिर से अपनी राख से उठने के लिए तैयार होना चाहिए ताकि सोने के इस काले राज को समाप्त किया जा सके और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुनहरा राज स्थापित किया जा सके। ***

ऊपर प्रस्तुत है,

नशे के अर्थशास्त्र या अर्थव्यवस्था के नशे पर कुछ

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. अफ़सोस! कैसी अर्थव्यवस्था है- शराबियों के कंधों पर चल रही है? शराब की बिक्री से एकत्र कर से प्राप्त धन से सरकार इतनी कृतज्ञ और/या मोहित हो गई कि हाल ही में दुनिया भर में लॉकडाउन के बाद सरकार ने सबसे पहला काम बीयर और वाइन बेचने वाली दुकानें खोलने का किया।

जबकि यह सर्वविदित एवं स्थापित तथ्य है कि शराब, सिगरेट एवं अन्य मादक पदार्थों की बिक्री से प्राप्त करों से सरकार को होने वाली आय, इन पदार्थों से होने वाली बीमारियों के उपचार पर होने वाले व्यय से हमेशा कम होती है।

यह आश्चर्य की बात है कि दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी को नार्को सूची में शामिल नहीं किया गया है, जो वास्तव में व्यक्ति, परिवार, देश और पूरे विश्व के लिए किसी भी अन्य नार्को पदार्थ की तुलना में अधिक बुरे पैदा करने वाले पदार्थ हैं, चाहे वह हैश, हेरोइन, कॉक, कोकीन या रासायनिक रूप से निर्मित मादक पदार्थ हों।

त्यौहारों और अन्य विशेष अवसरों पर मादक पदार्थों पर प्रतिबंध लगाने का नारा लगाना मूलतः नशे के प्रचार का विज्ञापन है। गुजरात और बिहार जैसे भारत के क्षेत्रों में आंशिक प्रतिबंध या पृथक प्रतिबंध से क्षेत्र की जनता और साथ ही पूरे देश को जितना लाभ होता है, उससे कहीं अधिक नुकसान (अवैध तस्करी और उससे जुड़े अपराध/जबरन वसूली, कीमतों में वृद्धि आदि) होता है। शराब, सिगरेट और अन्य मादक पदार्थों की बिक्री से एकत्र करों से सरकार की कमाई का विचार ही न केवल घिनौना है, बल्कि शैतानी भी कहा जा सकता है। क्या ऐसी मानसिकता और अर्थव्यवस्था समाज के लिए स्वस्थ और खुशहाल स्थिति ला सकती है?

2. आम तौर पर हर जीव (और मनुष्य भी) स्वतंत्र है (आदर्श रूप से स्वतंत्र होना चाहिए) यह तय करने के लिए कि वह क्या करेगा, खाएगा, पीएगा और कहाँ रहेगा, कहाँ सोएगा, भले ही उसे सामाजिक मानदंडों का पालन करना पड़े। हालाँकि गुलामी और बंधन की परिस्थितियों में, गुलामों को अपने मालिकों के हुक्म का पालन करना होता है और यह मालिक ही तय करता है कि गुलाम क्या करेगा, गुलाम क्या पहनेगा (और क्या पहनेगा), गुलाम क्या खाएगा, पीएगा और धूम्रपान करेगा, गुलाम कहाँ और कब सोएगा।

भारत जैसे देशों में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी उन्हीं नियमों और विनियमों का पालन करना खेदजनक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि ये देश तथाकथित गुलाम मानसिकता पर काबू नहीं पा सके हैं, अन्यथा सरकार को इस बात से कैसे सरोकार है कि कोई व्यक्ति क्या खाता है, क्या पीता है और क्या धूम्रपान करता है?

3. तथाकथित मादक पदार्थ- अफीम, भांग, सींग वाला सेब (जिसे भारत में कच्चे/ताजे रूप में भगवान शिव को अर्पित किया जाता है) न्यूरोन्स को आराम देते हैं जबकि शराब - सड़े हुए फलों और अनाज से बनी वाइन/बीयर इंद्रियों को अंधा कर देती है। यही एक कारण है कि भारत में संत और साधु भांग का सहारा लेते हैं और कभी-कभी त्योहारों (जैसे शिव-रात्रि) पर आम लोगों को प्रसाद के रूप में इसे देते हैं, जबकि परिवार के लोगों को तंबाकू-बीड़ी और हुक्का तक ही सीमित रहने के लिए कहा जाता है।

इसके अलावा, यह कहा जाता है कि शराब उन लोगों की जरूरत है जो मौत की सेवा के लिए नियुक्त किए जाते हैं (जैसे सेना), परिणामस्वरूप शराब काल-भैरव (उज्जैन-भारत में मंदिर, काल-भैरव को भगवान शिव का सेना प्रमुख कहा जाता है) को अर्पित की जाती है और तीर्थयात्रियों को उनके प्रसाद के रूप में भी वितरित की जाती है।

यही मूल कारण है कि शराब पीने के बाद अपराध तो हो सकते हैं, लेकिन भांग या भांग पीने के बाद नहीं। इसी कारण से मौत की सेवा करने वाली सेनाओं को शराब पीने की अनुमति दी गई है, लेकिन पुलिस कर्मियों को नहीं। एक कहावत है: " दारू क् कराती है , गांजा शांति :(क) है । (शराब क्रांति लाती है, भांग शांति लाती है),

4. यह सर्वविदित तथ्य है कि अफ़गानिस्तान और कोलंबिया जैसे देश अफीम और कोकीन के कारण और अपनी सीमाओं की रक्षा करने में असमर्थता के कारण बिगड़ गए। जब सीआईए - भांग/कोकीन आयात करने वाली एजेंसी बन जाती है, और WEF शराब निर्यात करने वाला मंच बन जाता है और कई रक्षा ठेकेदारों को अपने एजेंट के रूप में शामिल कर लेता है, तो क्या ड्रग्स और नार्को पदार्थों की तस्करी में कोई समस्या हो सकती है। उड़ता पंजाब जैसी ड्रग्स पर बनी फिल्म (भारत में) सिर्फ एक ट्रेलर थी, जबकि वास्तविकता यह है कि नशा भी देश, क्षेत्र और दुनिया में सामाजिक- आर्थिक - धार्मिक - राजनीतिक फेरबदल का एक बड़ा कारण है ।

5. बुद्धिमान लोग कहते हैं, अगर आप भ्रष्टाचार को नहीं रोक सकते, तो प्रक्रिया को खत्म कर दीजिए। इसलिए अगर भारत जैसे देश नशीली दवाओं की तस्करी और दुरुपयोग को नहीं रोक सकते, तो भारत जैसे देशों को इन नशीली दवाओं, शराब और अन्य नार्को पदार्थों की जरूरत को खत्म करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए, ताकि लोगों/समाजों को भांग, तंबाकू, अफीम की खेती और सेवन की अनुमति दी जा सके, भले ही वह संतों और साधुओं की निगरानी में हो। क्या आम लोगों के लिए इससे बेहतर कोई विकल्प हो सकता है कि वे अपनी पसंद के केक की खेती करें, उसे तैयार करें, परोसें और खाएं। ऊपर प्रस्तुत है ।

जनसाधारण की गरीबी के अर्थशास्त्र पर कुछ बातें

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुति दो भागों में है: 1. एक कविता, 2. एक अवलोकन,

1. एक कविता: (पुस्तक धार्यते इति धर्म से - डॉ. कल्पना सेंगर):

"लोग गरीब और भूखे क्यों हैं?

क्योंकि धर्म गरीबों और गरीबी का महिमामंडन करता है,
और भावनाओं से छेड़छाड़ करके दान हड़प कर,

क्योंकि सरकार करों में हेराफेरी करके पैसा खा जाती है,
क्योंकि राजनेता विधानसभाओं और चुनावों में पैसा बर्बाद करते हैं,
क्योंकि सरकारी कर्मचारी वेतन और रिश्वत में पैसा खा जाते हैं,
क्योंकि भौतिकवादी नियमों में हेर-फेर करके पैसा खा जाता है,
और व्यापारी और बिचौलिए मांग और आपूर्ति में हेराफेरी करके,
और अंततः लोगों के दिमाग में हेर-फेर करके विद्रोह भड़क उठा,

लोग आत्महत्या क्यों करते हैं या आत्मघाती हमलावर क्यों बनते हैं?
क्योंकि समाज और धर्म जनता की आजीविका को बनाए रखने में विफल रहे हैं,
क्योंकि समाज और धर्म जीवन से बहुत अधिक की मांग करते हैं,
जीने के लिए कुछ नहीं, विश्वास करने के लिए कुछ नहीं,
लोगों को लगता है कि जीवन को बहुत अधिक महत्व देने की अपेक्षा मर जाना बेहतर है।

जब दुनिया में कोई आधिकारिक जल्लाद होगा।

समाज और सरकार को दमनकारी और जल्लाद की भूमिका से बचना होगा।

समाज और सरकार के लिए यह आवश्यक है कि,
स्थानीय रहें, स्थानीय का ध्यान रखें,
पड़ोसी पर नज़र रखें, पड़ोसी का समर्थन करें।
वैश्विक सोचें, वैश्विक के लिए चिंतित रहें।"

शायद हम अपने समग्र व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए कई नियमों को उलटना चाहेंगे या यहां तक कि नियम पुस्तिका को ही पुनः लिखना चाहेंगे।

(बी) जनता की गरीबी ईश्वर की कृपा नहीं है, बल्कि इसे कुछ लोगों द्वारा राज्यों की शक्ति के माध्यम से सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से लागू किया जाता है और बनाए रखा जाता है।

गरीबी को इस चतुराईपूर्ण ढंग से तैयार की गई थीम के तहत बढ़ावा दिया गया कि, "चूंकि अधिकांश लोग गरीब हैं, इसलिए उनकी देखभाल करना राज्य का कर्तव्य है और एक आवश्यक अग्रदूत के रूप में राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दैनिक उपयोग की वस्तुएं और सेवाएं सभी के लिए सस्ती हों, इसलिए उन्हें कम कीमत/सस्ता रखा जाना चाहिए और सभी के लिए आसानी से उपलब्ध होना चाहिए।

यदि हम चारों ओर देखें तो हर कोई इस बात को समझेगा कि सत्तर से अस्सी प्रतिशत समय हमें ऐसी वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है जो बुनियादी और नियमित प्रकृति की हों, और सत्तर-अस्सी प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जो या तो इन वस्तुओं के उत्पादन में या इन सेवाओं को प्रदान करने में लगे होते हैं।

श्रम की अंतिम कीमत/लागत कम/सस्ती रखी जाए, तो ये लोग गरीबी से कैसे बचेंगे?

ये सत्तर-अस्सी प्रतिशत लोग जो इन उत्पादनों या सेवाओं में शामिल हैं, उन्हें गरीब होना चाहिए और बने रहना चाहिए

यदि हम उपरोक्त नियोजित पद्धति को बरकरार रखें तो यह बात मायने नहीं रखती कि प्रधानमंत्री किसी प्रमुख अर्थशास्त्री को वित्त मंत्री नियुक्त करते हैं या स्वयं वित्त मंत्री बनते हैं, सत्तर-अस्सी प्रतिशत आबादी गरीब ही रहेगी।

देश या देश में केवल मंत्रियों या सरकारों को बदलने के स्थान पर इस परिकल्पना को बदलने की आवश्यकता बनी हुई है।

ऊपर प्रस्तुत है,

महिला और समाज पर कुछ बातें

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

हम दूसरों को जो कुछ भी देते हैं, वह कुछ समय बाद प्राकृतिक माध्यमों से हमारे पास वापस आता है, चाहे वह सबसे खराब, बुरा, अच्छा या सबसे अच्छा हो। "अगर दुनिया भर में महिलाओं को सर्वश्रेष्ठ नहीं मिल रहा है, तो यह केवल यह दर्शाता है कि कहीं न कहीं वे समाज को अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे रही हैं" चाहे बेटी, बहन, दोस्त, पत्नी या यहाँ तक कि अपने पुरुष समकक्ष के मुकाबले माँ के रूप में।

1. पिछला औद्योगिकीकरण अधिक यांत्रिक था, जबकि वर्तमान औद्योगिकीकरण यांत्रिक और सॉफ्टवेयर संचालित का मिश्रण है। यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य का औद्योगिकीकरण मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर संचालित होगा, इसलिए सॉफ्टवेयर में अधिक विशेषज्ञ होने के कारण महिलाएं औद्योगिक दुनिया का नेतृत्व करेंगी, और पुरुष इन सॉफ्टवेयर चालक महिलाओं की मदद करेंगे। महिलाएं उत्साहित महसूस कर सकती हैं, जबकि पुरुष इसे एक स्वाभाविक प्रगति के रूप में ले सकते हैं।

2. पुरुष और महिला कई मायनों में भिन्न हैं। दोनों को एक जैसी शिक्षा देना दोनों के साथ अन्याय है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से पुरुष प्रधान है। "महिला शिक्षा - महिला प्रधान" को लागू करने के लिए प्रयास करने होंगे।

3. प्रत्येक धर्म ने महिलाओं की तुलना पृथ्वी से की है, इसलिए सभी सांसारिक मामलों को महिलाओं द्वारा अच्छी तरह से संभाला जा सकता है, और समाज द्वारा उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इस प्रकार महिलाएं अपने घर, समाज और देश में इसकी जिम्मेदारी ले सकती हैं।

4. शादी के साथ ही एक अलग जीवन शुरू होता है, दुनिया में कहीं भी युवाओं को विवाहित जीवन में अपनी यात्रा के लिए सही समय पर प्रशिक्षित नहीं किया जाता है। समाज को यह प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। संस्कृति, लोकाचार, व्यवहार, शिशु देखभाल के अलावा पारिवारिक जीवन पर शिक्षा दोनों को दी जानी चाहिए, लेकिन जैविक कारणों से महिलाओं को अधिक।

5. नारा (स्तोका) "यत्र नार्यस्तु पूजयंते, रमंते तत्र देवता" (जहां महिलाओं का सम्मान किया जाता है वहां भगवान निवास करते हैं) ने अच्छे से अधिक नुकसान किया है, यह सृष्टि के साथ पारस्परिक सम्मानजनक स्तर पर व्यवहार नहीं करता है, यह कभी-कभी लग सकता है, "यत्र पुरुषः पूजयंत, रमंते टाट्रा निशाचरत" (जहाँ मनुष्यों का सम्मान होता है, वहाँ शैतान निवास करता है)।

इस नारे के निरंतर प्रयोग से या तो महिला को मूर्ति बना दिया जाता है या फिर उसे बलि का बकरा मानकर सांत्वना दी जाती है। इस नारे के कारण अक्सर महिला की प्रार्थना करने के बजाय उसका शिकार किया जाता है।

बहन , मां, पत्नी बेटी, भाभी, बहू और सास के बीच लड़ाई को भी उभारा है।

एक नया नारा "यत्र जीवः " पूजयंते , रमंते 'तत्र देवता' (भगवान वहीं निवास करते हैं जहां जीवन का सम्मान होता है) को आदर्श बनाना होगा)

उपरोक्त कार्य दस से बीस वर्षों में परिणाम दिखाना शुरू कर देंगे और अगले चालीस से पचास वर्षों में दृश्य बदल देंगे। इसके लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होगी और हमें इसके लिए खुद को समर्पित करना होगा, क्योंकि यह दुनिया को एक जीवित स्वर्ग बना देगा
ऊपर प्रस्तुत है,

बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट कानून पर कुछ बातें

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

आम तौर पर जीवन की गतिशीलता के लिए भी स्थिर परिभाषाएँ दी जाती हैं, लेकिन सवाल उठता है कि एक स्थिर परिभाषा जीवन की गतिशीलता को कैसे समझा सकती है या उसमें कैसे फिट हो सकती है? जीवन की गतिशीलता को केवल गतिशील परिभाषा द्वारा ही समझाया जा सकता है और इसे निम्नलिखित दो तरीकों से समझा जा सकता है:

A) जो लोग विकासवाद के सिद्धांत और व्यवहार में विश्वास करते हैं, उनके लिए मानव मस्तिष्क हमेशा विस्तारित होता रहता है और भौतिक आकार में बढ़ता रहता है, यहाँ गतिशीलता इस रूप में होती है:

|~~अनुभव ~~~ अभिव्यक्ति ~~|

||

|~~~सुझाव एवं प्रतिक्रिया~~~~|

यहाँ विकास केवल एक पीढ़ी में नहीं होता, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है, हर नया बच्चा अपने माता-पिता के कंधे से देखता है और इस तरह आगे की ओर देखता है। युवा पीढ़ी उस काम को वहीं से शुरू करती है जहाँ पुरानी पीढ़ी ने छोड़ा था, और इस तरह से बड़ों के अनुभव का पूरा लाभ उठाती है।

यह कहा जा सकता है कि युवा की आगे की यात्रा, वृद्ध की पूरी की गई यात्रा पर निर्भर करती है। प्रत्येक नया आविष्कार पुराने आविष्कारों के आधार पर होता है, और इस तरह कोई भी आविष्कार मौलिक नहीं कहा जा सकता।

प्रत्येक वर्तमान उपलब्धि के लिए, यहां तक कि जीवन के लिए भी, हम अपने बुजुर्गों के प्रति ऋणी हैं और इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम अपने माता-पिता और पूरे समाज के प्रति ऋण चुकाएं।

इस सिद्धांत के प्रवर्तक कहते हैं, "मानव सम्पूर्ण विकास प्रक्रिया का फल है और मानवता इस प्रक्रिया का विकास है, अर्थात् इस फल (बीज) में सम्पूर्ण विकास छिपा है"।

(ख) ऋषि-मुनि अपने गुरुओं को, गुरु अपने गुरुओं को, और अंत में गुरु या प्रथम गुरु, बृहस्पति को श्रेय देते हैं , और बृहस्पति कहते हैं कि उन्होंने इसे ब्रह्म के साथ देखा है और 'ब्रह्मा' कहते हैं, उन्होंने इसे स्वयं 'ब्रह्मा' (ब्रह्मांड) से अनुभव किया है - जो गतिशील और निरंतर विस्तारित ब्रह्मांड है।

एक तरह से, इस सिद्धांत के प्रवर्तक का कहना है कि सूर्य के नीचे और ब्रह्मांड में कुछ भी नया नहीं है।

इस संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. दोनों ही तरीकों से, वृद्धों को आधार और बुद्धिमान माना जाता है।

श्रम विभाजन और उसकी उपज/आय तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की सदियों पुरानी पूर्वी अवधारणा को कायम रखना होगा। कुटुम्बकम् (पूरी दुनिया एक हेलमेट है)।

3. सभी तथाकथित नए आविष्कार पुरानी पीढ़ी के ज्ञान, समाज की प्रतिक्रिया, प्रकृति द्वारा प्रदान की गई कल्पना और अंतर्ज्ञान के आधार पर होते हैं; किसी भी नए आविष्कार पर कोई अधिकार और संपूर्ण स्वामित्व का दावा करना पूरी तरह से मूर्खता और बुद्धि की मूर्खता है और ऐसे दावों को स्वीकार करना और भी अधिक मूर्खतापूर्ण है। भारत और पूरा पूर्व अपने स्वर्णिम अतीत और महान निर्माता के साथ किसी भी व्यक्ति या किसी भी देश के किसी भी ज्ञान (बौद्धिक) संपदा अधिकार या कानून पर किसी भी दावे को अस्वीकार करता है।

4. पूरे पेड़ की अनुमति के बिना टहनी नहीं गिर सकती। सभी आविष्कार मानवता द्वारा निर्देशित होते हैं और ऐसे सभी आविष्कारों का परिणाम पूरी मानवता का होता है। संपूर्ण बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट कानून का कोई आधार नहीं है और इन्हें खत्म किया जाना चाहिए।

ऊपर प्रस्तुत है,

नेतृत्व और उसके विकास पर कुछ बातें

नेतृत्व विकास:

1. राष्ट्र छोटे-छोटे बच्चों के पैरों पर चलते हैं और राष्ट्रों का निर्माण संसद और विधानसभाओं में नहीं, बल्कि घरों और स्कूलों में होता है।

इसलिए यदि कोई समाज और राष्ट्र का निर्माण करना चाहता है तो हमें जमीनी स्तर से काम करना होगा, सही प्रकार की शिक्षा और प्रशिक्षण के साथ सही प्रकार के अनुभवी शिक्षकों (जैसे कि सही प्रकार के नेता उभर कर केन्द्रीय भूमिका में आ सकें) के साथ काम करना होगा।

नेतृत्व विकास के लिए शिक्षकों की सूची में उद्योगों/कॉर्पोरेट कंपनियों के सेवानिवृत्त/पूर्व अध्यक्ष, सेना के जनरल, मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राजा और रानी आदि को शिक्षित और प्रशिक्षित करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति माना जा सकता है (उदाहरण के लिए डॉ. एपीजे कलाम और डॉ. राधा कृष्ण (दोनों भारत के पूर्व राष्ट्रपति) और नए पदधारी, जो बाद में कह सकें कि:

"पिछले पच्चीस वर्षों से अध्यापन करने के बाद भी मेरा एक भी शिष्य/अनुयायी नहीं है, ऐसा नहीं है कि लोग मेरे पास नहीं आते थे, वे वहाँ हैं, आम आदमी से लेकर राजकुमार/राजकुमारी तक, लेकिन, चूंकि हमने स्वतंत्रता पर चर्चा की, इसलिए अनुयायी होना यह दर्शाता है कि मैंने स्वयं पाठ अच्छी तरह से नहीं पढ़ाया है"।

1. वे कहते हैं कि किसी भी देश की सर्वोच्चता उसके विश्वविद्यालय पर निर्भर है और वे यूरोप और अमेरिका के ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स और हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालयों का उदाहरण देते हैं और 'महान चाणक्य' को उद्धृत करते हैं जिन्होंने कहा था कि विश्वविद्यालय की तुलना में साम्राज्य का निर्माण करना आसान है, हालांकि, सामान्य तौर पर, यह देखा गया है कि किसी देश और उसके विश्वविद्यालयों की स्थिति एक साथ चलती है, एक दूसरे को शक्ति देता है।

लेकिन, तेजी से आपस में जुड़ती जा रही दुनिया में हमारा अस्तित्व अच्छे नेताओं पर निर्भर करता है, जो बदले में अच्छे विश्वविद्यालय पर निर्भर करता है, एक ऐसा विश्वविद्यालय जो अच्छे शिक्षकों को आकर्षित कर सके और उन्हें बनाए रख सके और दुनिया भर से सही तरह के छात्रों को आकर्षित कर सके और उन्हें अच्छे नेताओं के रूप में विकसित कर सके (संस्कृत में विश्वविद्यालय को विश्व विद्यालय कहा जाता है, जिसका अर्थ है एक वैश्विक स्कूल)।

ऐसा कहा जाता है कि व्यक्तिवाद घृणा उत्पन्न करता है और शैतानी है; क्षेत्रवाद करुणा के साथ-साथ सांप्रदायिकता भी उत्पन्न करता है, जबकि सार्वभौमिकता परोपकार लाती है, और यह विश्वविद्यालय नामक संस्था है, जो सार्वभौमिकता (विश्व एक इकाई है) और अपेक्षित परोपकार की शिक्षा देती है।

* यह एक आम समझ है कि प्राकृतिक हीरे का मूल्य भी उसके कट, शिल्प, कैरेट, रंग में परिष्कार के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है, इसी तरह, नेताओं को भी उचित शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रदर्शन और परीक्षा द्वारा ऊंचा किया जा सकता है, जिसके लिए "पंचतंत्र की कहानी" एक बेहतरीन उदाहरण है कि कैसे एक राजकुमार भी राजा-रानी, राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री आदि की बड़ी चुनौती लेने के लिए तैयार हो सकता है।

2. कहा जाता है कि, अगर किसी व्यक्ति या समाज को तोड़ना है तो उसकी आस्था को तोड़ो, और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है उसके आस्था केंद्रों को तोड़कर उन्हें निष्क्रिय/निष्क्रिय कर दो। इसके विपरीत यह भी सच है कि किसी व्यक्ति और उसके समाज/समुदाय को बनाने के लिए उसके आस्था केंद्रों को सक्रिय और क्रियाशील बनाओ!

ऊपर प्रस्तुत है,

भारत में राज्य सरकारों की अप्रासंगिकता पर कुछ बातें

प्रश्न: क्या भारत को राज्यों और राज्य सरकारों की आवश्यकता है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

[इस विषय पर पॉडकास्ट देखें - क्या हमें राज्य सरकार की आवश्यकता है?

https://youtu.be/SAG6CAvi3eQ?si=GnOUI_8zkTgusoFa ,

(पुस्तक 'शासन, प्रशासन और उसका अनुकूलन - वैकल्पिक अर्थव्यवस्था' विषय के कुछ अंश, निःशुल्क डाउनलोड के लिए देखें: resurrectionofdharma.com ,)

1. वैचारिक रूप से यह गलत धारणा और अनुमान है कि भारत एक संघीय गणराज्य या राज्य संघ है। परंपरागत रूप से प्राचीन काल से यह भौगोलिक क्षेत्र, जिसके पीछे विशाल हिमालय है और एक ओर सिंधु (इंदु-हिंदू) और ब्रह्मपुत्र (ब्रह्मा/भगवान का पुत्र) नदियाँ हैं, तथा दूसरी ओर महासागर है, को हिंदुस्तान या इंडिया के नाम से जाना जाता है और इसके बच्चों को हिंदू और ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा, इस क्षेत्र से जुड़े लोगों द्वारा मानवता के लिए मशाल वाहक बनने के बड़े प्रयास के कारण, इसे भारत की उपाधि भी मिली और फिर इसके निवासियों को भारती, भारतीय के नाम से जाना जाने लगा ।

प्राचीनतम साहित्य में इस क्षेत्र का नाम जम्मु द्वीप , भारत खंड (जम्मु द्वीप) बताया गया है। द्वीप भारतखंडे)" और इसे भारत का सबसे पुराना प्रयोग कहा जाता है और इसे आज भी इस स्थान को संबोधित करने के लिए विशेष प्रार्थना में पढ़ा जाता है, यहाँ भी, इस क्षेत्र को एक माना गया है न कि कई क्षेत्रों/राज्यों का संघ। इसके अलावा जब इस भूमि का कोई नागरिक दुनिया के दूसरे छोर पर जाता है, तो उसे केवल भारत से और हिंदुस्तानी/भारतीय या भारत से और भारतीय के रूप में ही जाना जाता है , अन्यथा नहीं।

यह कहना कि भारत एक संघीय गणराज्य है, कुछ धूर्त कला के महारथियों की चाल प्रतीत होती है, जो जाने-अनजाने इस क्षेत्र को यथासंभव विभिन्न बहानों से विभाजित रखने की नीति पर काम कर रहे हैं, ताकि उनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वर्चस्व बना रहे और वे तथा उनके अनुयायी इस क्षेत्र से लाभ उठाते रहें।

2. स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में यानी 15.08.1947 से पहले देश में पाँच सौ पचास से ज़्यादा रियासतें थीं, जिनमें से लगभग सभी ने अपनी मर्जी से विलय करके आज का भारत बनाया। अगर स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में कोई कहता कि भारत रियासतों का संघ है तो इसकी सराहना की जा सकती थी, लेकिन अन्यथा नहीं। यह स्वतंत्र भारत ही है जिसने विभिन्न कारणों से कुछ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण किया है, न कि इन राज्यों की आज्ञाओं/इच्छाओं या सहमति के कारण कि भारत अस्तित्व में आया और इसलिए इसे संघीय गणराज्य घोषित करने के लिए बाध्य किया गया।

3. भाषा/जातीयता के आधार पर राज्य का निर्माण उसी प्रकार की गलती है, जैसे धर्म के आधार पर देशों का निर्माण (जिसे भारत ने विभाजन से प्रेरित स्वतंत्रता के दौरान देखा था)।

क्षेत्र और धर्म, जाति, पंथ और रंग, भाषा और लिपि के आधार पर कोई भी विभाजन उन लोगों की वृद्धि और विकास के लिए अवरोध है जिनके विचार से यह विभाजन किया जा रहा है (पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि की स्थिति को देख सकते हैं जो धर्म के आधार पर अलग हो गए, जबकि वर्तमान भारत ने अपने यहां धर्म-निरपेक्षता (धार्मिक स्वतंत्रता) को बनाए रखा है। कोई भी विभाजन नकारात्मक परिणाम लाने के लिए बाध्य है, सिवाय उन परिणामों के जो कनेक्टिविटी और संचालन में आसानी के लिए किए गए हैं।

4. भारत का राष्ट्रीय परिदृश्य फटी हुई पैंट और शर्ट, बिना बनियान, कटे हुए बाल, चेहरे पर बहुत सारी क्रीम और निश्चित रूप से सोने और हीरे के आभूषणों जैसा हो गया है, जिसमें हर किसी की आंखें विस्मय में घूम रही हैं। यह विसंगति केवल राज्य सरकार के कारण हुई है (देश ने अपने अस्सी करोड़ लोगों को, जो कि साठ प्रतिशत आबादी है, इतना गरीब घोषित कर दिया है कि वे लगभग हजार रुपये प्रति माह मुफ्त राशन के हकदार हैं, और फिर देश के विभिन्न राज्यों में चार करोड़ मामले लंबित हैं)।

5. एक बार एक प्रधानमंत्री (श्री राजीव गांधी) ने अपनी सादगी और शालीनता में कहा था कि जब हम (केंद्र सरकार) जनता को एक रुपया देते हैं, तो उसके पास केवल पंद्रह पैसे ही पहुंचते हैं। इस पर सभी ने टिप्पणी की, कुछ लोग आश्चर्यचकित हुए, कुछ ने उनका मजाक उड़ाया और कुछ ने तो उनकी सरकार को पूरी तरह से भ्रष्ट सरकार तक करार दे दिया, बिना इस बात पर विचार किए कि आखिर ये अस्सी-पांच पैसे यानी अस्सी-पांच प्रतिशत जनता का पैसा कहाँ जाता है? कौन लोग हैं जो लेन-देन में इस पैसे को खा जाते हैं?

एक साधारण अवलोकन से यह कहा जा सकता है कि जब भी प्रधानमंत्री (केन्द्र सरकार) को किसी योजना के रूप में प्रत्यक्ष नकद अनुदान या पुरस्कार/आजीविका भत्ता देना होता है, तो वह पैसा मुख्यमंत्रियों (राज्य सरकार) को दे देते हैं, जो (राज्य सरकार की व्यवस्था) जनता तक पहुंचाने के चक्कर में इस अस्सी-पचास पैसे (प्रतिशत) को खा जाते हैं। ऐसा भी लगता है कि प्रधानमंत्री को इस तथ्य की जानकारी तो है, लेकिन वे इसे रोकने में असमर्थ/असक्षम हैं और इसलिए कुछ भी करने या इस बर्बादी/लूट को रोकने में अपनी लाचारी जताते हैं।

एक अन्य प्रधानमंत्री ने कहा कि चूंकि 85 प्रतिशत धन का लेन-देन (भ्रष्टाचार) में नुकसान होता है, इसलिए केंद्र सरकार के लिए उचित होगा कि वह राज्य सरकार को दरकिनार करके केंद्र की सब्सिडी/पुरस्कार/बोनस आदि सीधे लाभार्थी के खाते में भेजे। इससे एक बुनियादी सवाल उठता है: अगर राज्य सरकार और उसकी व्यवस्था ही दोषी है, तो राज्य सरकार और इतनी सारी संवैधानिक संस्थाओं की क्या जरूरत है? हमें इन सबसे क्यों नहीं छुटकारा पाना चाहिए?

ये राज्य सरकारें पहले क्यों थीं? इन राज्य सरकारों के अस्तित्व का कोई वैध कारण नहीं है। अगर कोई देश चाहता है कि 85 प्रतिशत लेन-देन में नुकसान न हो तो देश (भारत) को इन सभी राज्य सरकारों से दूर होना होगा।

6. हम देख रहे हैं कि स्वतंत्रता के बाद भारत में विदेशी शासकों के स्थान पर भारतीय शासकों का अत्याचार है, ऐसा इसलिए है क्योंकि शासन की संरचना (पुलिस और प्रशासन, नियम और विनियमन, न्यायपालिका प्रणाली, शिक्षा, स्वास्थ्य प्रणाली और बिचौलिया) स्वतंत्रता-पूर्व युग के समान ही बनी हुई है, तथा राज्य सरकार के अधीन समान या समान मानसिकता है।

यह एक खुला रहस्य है कि एक विधायक (विधानसभा सदस्य) के चुनाव का खर्च लगभग 'पचास करोड़' (वर्ष 2023-24) है, जो चार हजार से अधिक विधायकों के लिए हर पांच साल में देश को दो लाख करोड़ रुपये बैठता है और वह भी कालेधन में। क्या हमें राज्य सरकार और उसकी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए वास्तव में इतना खर्च करने की जरूरत है, वह भी कालेधन में?

संवैधानिक निकायों की संख्या को तर्कसंगत बनाने की तत्काल आवश्यकता प्रतीत होती है - हो सकता है कि कई संस्थाओं को पूरी तरह से त्यागना पड़े, जैसे सभी राज्य सरकारें और विधान परिषदें, नगर निगम, पंचायत और सरकार नियंत्रित सहकारी समितियाँ।

7. बदलाव की जरूरत है, ऐसा लगता है कि अब समय आ गया है कि समाज आगे आए और जिम्मेदारी अपने हाथ में ले। समाज को स्थानीय सुरक्षा, सभी प्रकार के न्याय (जुरी प्रणाली द्वारा), रोजगार, स्थानीय योजना और राष्ट्रीय योजना में भागीदारी, धार्मिक आवश्यकता, स्वास्थ्य और शिक्षा, मीडिया और मनोरंजन, पर्यावरण और स्थानीय आर्थिक गतिविधि, करों का संग्रह, अपने आसपास के उद्योगों को चलाने में भागीदारी और अन्य स्थानीय मुद्दे।

दूसरी ओर राष्ट्रीय सरकार स्वयं को संवैधानिक न्यायालय, रिजर्व पुलिस और सेना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क (एक ओर सड़क, रेल, जल और वायु तथा दूसरी ओर ऑडियो, वीडियो और डेटा), आपदा प्रबंधन और राहत कार्य, राष्ट्रीय त्योहार और उत्सव, अनुसंधान और विकास में योगदान, विदेशी मामले और अंतर्राष्ट्रीय विकास के विभागों के साथ-साथ जांच और संतुलन, फीडबैक और सुधारात्मक तंत्र के लिए प्रणाली तक सीमित रखेगी।

देश का प्रबंधन राष्ट्रीय सरकार (निर्वाचित संसद सदस्यों के माध्यम से) द्वारा कुछ क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों और समाज द्वारा संचालित जिला केंद्रों (स्थानीय सुविधा-सह-संसाधन केंद्रों सहित) के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से किया जा सकता है।

8. कहा जाता है कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है, जबकि सच यह है कि जब कोई जिम्मेदार होता है, तभी वह स्वतंत्रता का आनंद ले सकता है। हमें एक व्यक्ति के रूप में, एक परिवार के सदस्य के रूप में, एक आम नागरिक के रूप में, एक अर्थशास्त्री, न्यायाधीश, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आदि के रूप में अपने हर कार्य (गलत काम या कृत्य) के लिए जिम्मेदार होना चाहिए और जिम्मेदार बने रहना चाहिए।

तभी हम स्वतंत्रता का आनंद ले सकते हैं और स्वतंत्रता को बनाए रख सकते हैं तथा स्वस्थ और खुश रह सकते हैं।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, यह कहा जा सकता है कि भारत में इतनी अधिक राज्य सरकारों का अस्तित्व उस राज्य के लोगों और पूरे देश के दीर्घकालिक विकास के लिए हानिकारक है और इसलिए इसे समाप्त कर दिया जाना चाहिए और यदि संसद स्वयं को ऐसा करने में सक्षम पाती है, तो यह आवश्यक है कि हम (देश) जनमत संग्रह कराएं।

उपरोक्त पुस्तक 'वैकल्पिक अर्थव्यवस्था' से लिए गए अंश हैं, जो निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है: reviverctionofdharma.com)।

भाग-1 /3, इस विषय पर कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए और यह कैसे किया जा सकता है:

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुति में पुस्तक (हिंद स्वराज या भारतीय होम रूल, अध्याय संख्या -11, भारत की स्थिति: श्री एमके गांधी के वकील | www.mkgandhi.org) के अंश शामिल हैं,

न्याय ही यह निर्धारित करता है कि परिवार, समाज, देश और/या दुनिया नर्क है या स्वर्ग या परित्यक्त। अगर किसी भी जगह न्याय से इनकार किया जाता है या देरी की जाती है या उसका व्यवसायीकरण किया जाता है तो वह जगह रसातल की ओर गिर जाएगी। भारत जैसे देशों में न्याय को कम से कम पिछले पच्चीस सौ सालों (या उससे भी ज़्यादा) से पीछे धकेल दिया गया है और इसे भारत और हमारी पूरी सभ्यता के पतन का मुख्य कारण कहा जा सकता है।

विचार-विमर्श हेतु निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. "यदि हमारे बीच कोई भी व्यक्ति जीवन में किसी भी समय/क्षण में कमजोर हो जाए, मारा-पीटा जाए, लूटा जाए और फिर अपने घर/मकान से निकाल दिया जाए और हम धनहीन और असहाय, हताश और बेसहारा हो जाएं तो उस समय समाज और/या सरकार से हमारी क्या अपेक्षा होगी, यदि मुफ्त और निष्पक्ष और त्वरित न्याय (जिसमें बुनियादी भोजन, पानी, कपड़ा, आश्रय, चिकित्सा उपचार, सुरक्षा आदि का प्रावधान शामिल है) बीच की अवधि के लिए यानी न्याय मिलने तक नहीं?

2. क्या किसी व्यक्ति को न्याय की उचित सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित करना एक स्वस्थ और खुशहाल समाज की निशानी माना जा सकता है? क्या किसी नागरिक, अतिथि या आगंतुक के पास वित्तीय उपलब्धता या अनुपलब्धता के कारण इन तीनों सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा और समय में कोई अंतर उचित ठहराया जा सकता है? क्या इस तरह का अंतर एक अस्वस्थ और दुखी समाज के निर्माण का कारण नहीं बनेगा?

दुर्भाग्य से, वर्तमान में लगभग सभी धर्म, सभी क्षेत्र और सभी आर्थिक प्रणालियाँ न्याय की उचित सेवाओं के प्रावधान के प्रति उदासीन पाई जाती हैं या इस सबसे आवश्यक सेवा से लाभ कमाने के विचार के आगे झुकी हुई पाई जाती हैं। कुछ धर्म और कुछ तथाकथित अग्रणी अर्थव्यवस्थाएँ तो न्यायिक सेवाओं का उपयोग अपनी प्रमुखता फैलाने के लिए करती पाई गईं और आधिकारिक तौर पर इसमें शामिल भी हो गईं, जबकि तथाकथित पिछड़े और विकासशील देश अभी भी इस उलझन में हैं कि क्या करें और इस मुद्दे को कैसे सुलझाएँ।

3. ऐसा कहा जाता है कि न्याय में देरी करने वाली एजेंसियां न केवल न्याय से इनकार कर रही हैं, बल्कि भविष्य में अपराध में भी शामिल हो सकती हैं। जहां न्याय में देरी होती है (चाहे किसी भी कारण से) वहां लोग दंड से बचकर कानून तोड़ते हैं और लोगों में सामान्य सौम्यता खत्म हो जाती है। जहां न्याय में देरी होती है, वहां बच्चे अपने घरों में डरे हुए रहते हैं और सभी लोग अपने समाज में डरे हुए जीवन जीते हैं और ये सब मिलकर किसी भी देश को दुखी बना देते हैं।

4. एम.के. गांधी, जिन्होंने इंग्लैंड से वकालत की डिग्री प्राप्त की थी और दक्षिण अफ्रीका में तथा एक समय भारत (चंपारण) में बैरिस्टर के रूप में काम किया था, के विचार निम्नलिखित हैं | उनकी पुस्तक (हिंद स्वराज या भारतीय होम रूल (पूरी पुस्तक के लिए: www.mkgandhi.org) से अध्याय संख्या-11, 'भारत की स्थिति (जारी): वकील',
(यहां पाठक का तात्पर्य प्रश्न से है और संपादक का तात्पर्य गांधी जी द्वारा उत्तर से है)

पाठक: आप कहते हैं कि जब दो आदमी झगड़ते हैं तो उन्हें अदालत नहीं जाना चाहिए। यह बात तो आश्चर्यजनक है।

संपादक: आप इसे आश्चर्यजनक कहें या न कहें, यह सत्य है। और आपका प्रश्न हमें वकीलों और डॉक्टरों से परिचित कराता है। मेरा पक्का मत है कि वकीलों ने ही भारत को गुलाम बनाया है, हिंदू-मुसलमानों के बीच मतभेद को बढ़ाया है और अंग्रेजी हुकूमत को पुष्ट किया है।

पाठक: ये आरोप लगाना तो आसान है, लेकिन इन्हें साबित करना आपके लिए मुश्किल होगा। लेकिन वकीलों के बिना हमें आजादी का रास्ता कौन दिखाता? गरीबों की रक्षा कौन करता? न्याय कौन दिलाता? उदाहरण के लिए, स्वर्गीय मनमोहन घोष ने कई गरीबों की मुफ्त में पैरवी की। कांग्रेस, जिसकी आपने इतनी प्रशंसा की है, अपने अस्तित्व और सक्रियता के लिए वकीलों के काम पर निर्भर है। ऐसे सम्मानित वर्ग के लोगों की निंदा करना अन्याय है और वकीलों की निंदा करके आप प्रेस की स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रहे हैं।

संपादक: एक समय में भी आपकी तरह ही सोचता था। मैं आपको यह समझाने की इच्छा नहीं रखता कि उन्होंने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया। मैं श्री घोष की स्मृति का सम्मान करता हूँ। यह बात बिल्कुल सच है कि उन्होंने गरीबों की मदद की। यह बात सच है कि कांग्रेस वकीलों के प्रति कुछ न कुछ ऋणी है। वकील भी मनुष्य हैं और हर मनुष्य में कुछ न कुछ अच्छाई होती है। जब भी वकीलों द्वारा अच्छे काम करने के उदाहरण सामने आएँगे, तो यह पाया जाएगा कि अच्छाई वकील के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में ही उनकी है।

में आपको यह दिखाने के लिए चिंतित हूँ कि यह पेशा अनैतिकता सिखाता है; यह प्रलोभनों के संपर्क में है, जिनसे बहुत कम लोग बच पाते हैं। हिंदू और मुसलमान झगड़ते रहे हैं। एक साधारण आदमी उनसे कहेगा कि वे सब कुछ भूल जाएँ; वह उनसे कहेगा कि दोनों की ही कमोबेश गलती रही होगी, और उन्हें सलाह देगा कि वे अब झगड़ना बंद करें। लेकिन वे वकीलों के पास जाते हैं। वकीलों का काम अपने मुवक्किलों का पक्ष लेना और मुवक्किलों के पक्ष में तरीके और तर्क ढूँढ़ना होता है, जिनसे वे (मुवक्किल) अक्सर अनजान होते हैं। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो माना जाएगा कि उन्होंने अपने पेशे को नीचा दिखाया है। इसलिए, वकील, एक नियम के रूप में, झगड़ों को दबाने के बजाय उन्हें बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, लोग उस पेशे को दूसरों की मदद करने के लिए नहीं, बल्कि खुद को समृद्ध करने के लिए अपनाते हैं।

यह धनवान बनने का एक तरीका है और विवादों को बढ़ाने में उनकी रुचि है। मेरी जानकारी में यह बात है कि जब लोगों के बीच विवाद होता है तो वे खुश होते हैं। तुच्छ वकील वास्तव में विवाद पैदा करते हैं। उनके दलाल, बहुत सी जोंकों की तरह, गरीब लोगों का खून चूसते हैं। वकील ऐसे लोग हैं जिनके पास करने के लिए बहुत कम काम है। आलसी लोग, विलासिता में लिप्त होने के लिए, ऐसे पेशे अपनाते हैं। यह एक सत्य कथन है। कोई भी अन्य तर्क केवल दिखावा है।

वकील ही हैं जिन्होंने पाया है कि उनका पेशा सम्माननीय है। वे कानून भी उसी तरह बनाते हैं जैसे वे अपनी प्रशंसा करते हैं। वे तय करते हैं कि उन्हें कितनी फीस लेनी है और वे इतना ज़्यादा खर्च करते हैं कि गरीब लोग उन्हें स्वर्ग में जन्मा हुआ मानने लगते हैं। वे आम मज़दूरों से ज़्यादा फीस क्यों चाहते हैं? उनकी ज़रूरतें ज़्यादा क्यों हैं? वे मज़दूरों से ज़्यादा देश के लिए किस तरह से फ़ायदेमंद हैं?

क्या अच्छे काम करने वालों को ज़्यादा पैसे मिलते हैं? और अगर उन्होंने पैसे के लिए देश के लिए कुछ किया है, तो उसे अच्छा कैसे माना जाएगा? जो लोग हिंदू-मुसलमानों के झगड़ों के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं, वे जानते हैं कि वे अक्सर वकीलों के हस्तक्षेप के कारण होते हैं। उनके कारण कई परिवार बर्बाद हो गए हैं; उन्होंने भाइयों को दुश्मन बना लिया है। वकीलों के कब्जे में आकर रियासतें कर्ज में डूब गई हैं। कईयों का सब कुछ लूट लिया गया है। ऐसे कई उदाहरण हैं।

लेकिन उन्होंने देश को जो सबसे बड़ा नुकसान पहुंचाया है, वह यह है कि उन्होंने अंग्रेजों की पकड़ मजबूत कर दी है। क्या आपको लगता है कि अंग्रेजों के लिए बिना अदालतों के अपनी सरकार चलाना संभव होगा? यह सोचना गलत है कि अदालतें लोगों के लाभ के लिए स्थापित की गई हैं। जो लोग अपनी सत्ता को कायम रखना चाहते हैं, वे अदालतों के माध्यम से ऐसा करते हैं।

अगर लोग अपने झगड़े खुद ही सुलझा लें, तो कोई तीसरा पक्ष उन पर कोई अधिकार नहीं जता पाएगा। सच में, जब लोग अपने झगड़े या तो लड़कर या अपने रिश्तेदारों से फैसला करवाकर सुलझाते हैं, तो वे कम मर्दाना होते हैं। जब वे अदालत का सहारा लेते हैं, तो वे ज़्यादा मर्दाना और कायर हो जाते हैं। जब वे अपने झगड़े लड़कर सुलझाते हैं, तो यह निश्चित रूप से बर्बरता की निशानी है। अगर मैं किसी तीसरे पक्ष से आपके और मेरे बीच फैसला करने के लिए कहूं, तो क्या यह कम है? निश्चित रूप से, तीसरे पक्ष का फैसला हमेशा सही नहीं होता। केवल पक्ष ही जानते हैं कि कौन सही है।

हम अपनी सरलता और अज्ञानता के कारण यह कल्पना करते हैं कि कोई अजनबी हमारा पैसा लेकर हमें न्याय दे देता है। लेकिन, याद रखने वाली मुख्य बात यह है कि वकीलों के बिना अदालतें स्थापित या संचालित नहीं हो सकती थीं और वकीलों के बिना अंग्रेज शासन नहीं कर सकते थे। मान लीजिए कि केवल अंग्रेज न्यायाधीश, अंग्रेज वकील और अंग्रेज पुलिस होती, तो वे केवल अंग्रेजों पर शासन कर सकते थे। अंग्रेज भारतीय न्यायाधीशों और भारतीय वकीलों के बिना काम नहीं कर सकते थे।

पहले कैसे वकील बनाए गए और कैसे उनका पक्ष लिया गया, यह आपको अच्छी तरह से समझना चाहिए। तब आपको भी इस पेशे से वैसी ही घृणा होगी जैसी मुझे है। अगर वकील अपना पेशा छोड़ दें और इसे वेश्यावृत्ति की तरह ही अपमानजनक मानें, तो अंग्रेजी शासन एक दिन में खत्म हो जाएगा। वे हम पर यह आरोप लगाने में सहायक रहे हैं कि हम झगड़ों और अदालतों से उतना ही प्यार करते हैं जितना मछली को पानी से। वकीलों के संदर्भ में मैंने जो कहा है, वह जरूरी तौर पर न्यायाधीशों पर भी लागू होता है; वे चचेरे भाई हैं; और एक दूसरे को ताकत देता है।

ऊपर प्रस्तुत है,

भाग 2/3 – इस विषय पर कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए – पुराने बुद्धिमान लोगों के विचार:

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. दूरदर्शन (भारत) पर शक्तिमान नाम का एक धारावाहिक प्रसारित होता था, इसकी शुरुआती पंक्ति थी:

“अंधेरा कायम रहे, सम्राट किलविष की जय हो, उजाले का नाश हो, अँधेरे का राज हो ! (“Andhera kayam rahe, Samrat Kilvish ki jai ho, Ujale ka Nash ho, Andhere ka raj ho) :: “Let the darkness prevail, let Emperor Kilvish(killer with poison) be victorious, let the light be destroyed, let darkness reign.”

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्याय का अभ्यास इस तरह किया जा रहा है जैसे कि यह उन लोगों का समर्थन कर रहा है जो जारी रखना चाहते हैं – "अंधकार को हावी होने दो, राजा हत्यारों का जहर महान है। प्रकाश को लुप्त होने दो, अंधकार के साम्राज्य को हावी होने दो। अफसोस! यह सब कानून और व्यवस्था और न्याय के प्रावधान के नाम पर है।

वर्तमान में भारत में (वर्तमान में यानी 2024 में) पांच करोड़ से अधिक (5.1 करोड़ – 510, 00,000) मामले भारत के विभिन्न न्यायालयों में लंबित हैं, जिनमें से अस्सी हजार से अधिक (80,221) मामले भारत के सर्वोच्च न्यायालय में हैं। लगभग एक लाख अस्सी हजार (180,000) से अधिक मामले ऐसे हैं जो पिछले तीस वर्षों से लंबित हैं। इसके अलावा, CAT (केंद्रीय अपीलीय न्यायाधिकरण) सहित अर्ध-न्यायिक न्यायालय/एजेंसियों/न्यायाधिकरणों आदि में भी पर्याप्त संख्या में मामले लंबित हैं।

अफसोस! इतने बड़े पैमाने पर लंबित मामलों के बावजूद सुप्रीम कोर्ट और सरकार में कोई चिन्ता नहीं दिखती, जैसा कि बुद्धिमानों के सम्मेलन/सेमिनार, सत्ता के गलियारे में चर्चा आदि से जाहिर होता है। समाधान के प्रति चिंता और उसका पता (चाहे वह व्यवस्था में हो या न हो) किसी भी वरिष्ठ वकील, न्यायाधीश, सांसद, कानून मंत्री और यहां तक कि अगर पहुंच हो तो प्रधानमंत्री से भी आसानी से पूछा जा सकता है। क्या यह उपरोक्त कथन को प्रमाणित नहीं करता और यह नहीं दर्शाता कि वर्तमान न्याय व्यवस्था न्याय देने में सक्षम नहीं है?

2. There is a saying –कहावत है – “अंधेर नगरी, चौपट राजा-टके सेर भाजी, टके सेर खाजा, "Andher Nagri, Chaupat Raja–Take ser Bhaji, Take ser Khaja (Take ser = One paisa/rupees a kilo)" – इसका मतलब है कि जहां अन्याय होगा वहां किसी भी चीज़ की

कोई कीमत नहीं होगी. This means that where there is injustice, nothing will have any value.

(अंधेर नगरी: इस भाग का अनुवाद "अंधकार नगरी" होता है, जो स्पष्टता, न्याय या व्यवस्था की कमी वाले स्थान का प्रतीक है, जिसका परिणाम समाज में अराजकता और भ्रम है, जिसमें मिठाइयाँ और सब्जियाँ एक ही दर पर बेची जाती हैं।

इसका अर्थ यह भी है: "एक ऐसा संगठन या स्थान जहाँ पूरी तरह से 'दमित/दमित/उत्पीड़ित लोग हों जो भोले-भाले, झुकने वाले और गैर-प्रतिक्रियाशील हों, वस्तुतः आवाज़हीन और घोर अन्याय के प्रति निर्दयी हों; मानो वे एक वास्तविक अंधकार और अज्ञानता में रह रहे हों और एक बेतुके सनकी मुखिया/शासक के साथ अजीब न्याय की विरोधाभासी भावना रखते हों/न्याय का उपहास करने के लिए प्रवृत्त हों"

आज भी अगर हम समाज और देश की पूरी स्थिति पर नज़र डालें तो बड़े ही अफसोस के साथ कहा जा सकता है कि न्याय व्यवस्था भी ऊपर बताए गए तरीके से अलग नहीं है, जिसका सीधा मतलब है कि न्याय व्यवस्था स्वस्थ नहीं है और प्राथमिक तौर पर काम नहीं कर रही है। अगर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है, अगर सज्जनों की बात नहीं सुनी जा रही है, बदमाशों को कोई डर नहीं है, तथाकथित ताकतवर लोग जो चाहें कर सकते हैं, तो यह माना जा सकता है कि उचित न्याय और शायद न्याय देने की उचित व्यवस्था नहीं है।

वर्तमान व्यवस्था में न्याय पाने के लिए न्यायालय जाने की लागत, न्याय मिलने में लगने वाले समय के बारे में अनिश्चितता इतनी अधिक हो गई है कि लोग पुलिस स्टेशन जाकर शिकायत करने के बजाय अन्याय सहना पसंद करने लगे हैं। इस परिदृश्य के कारण, सरकारी अधिकारियों (न्यायाधीशों सहित) द्वारा रिश्वतखोरी, पुलिस द्वारा जबरन वसूली, तथा विनिर्माण और सेवा उद्योगों और मकान मालिकों द्वारा लोगों (कार्यबल) का शोषण बड़े पैमाने पर हो रहा है। इसके अलावा, अपहरण, मानव तस्करी, जबरन भीख मंगवाना और वेश्यावृत्ति अन्य ऐसी गतिविधियाँ हैं जो अनुचित न्याय वितरण प्रणालियों के कारण फल-फूल रही हैं। आश्चर्य की बात यह है कि इस परिदृश्य में भी यदि कोई किसी प्रशासक से पूछे तो वह उत्तर देता है कि स्थिति नियंत्रण में है और सामान्य है तथा सब कुछ ठीक चल रहा है?

3). यह कहा जा रहा है कि यदि शासक निरंकुश हो जाता है तो जनता अपने आप ही नियंत्रण में आ जाती है और बनी रहती है, यही रावण और दुर्योधन की शासन व्यवस्था का मूल सिद्धांत था, जिसमें कुछ लोगों को नियमित रूप से पूरी जनता की मौजूदगी में फांसी पर लटका दिया जाता था, जिसमें सभी रिश्तेदार शामिल होते थे, यहां तक कि किसी भी छोटी सी गतिविधि पर भी जो सरकार के खिलाफ कार्रवाई के रूप में दिखाई देती हो (या व्याख्या की जा सकती हो) ताकि जनता/नागरिकों में भय और

आतंक भरा माहौल पैदा हो ताकि वे आज्ञाकारी और अधीन बने रहें। ब्रिटिश गुलामी के दौरान भारत में यही आदर्श था।

इसके अलावा, यह सिद्ध है कि अगर कोई पूरे देश को लंबे समय तक गुलाम रखना चाहता है तो वैवाहिक धार्मिक पवित्रता को नष्ट कर देता है और सरकारी मशीनरी और उसकी न्यायिक प्रणाली को इसमें हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर करता है, वह भी इसके शोधन के नाम पर, और भारत जैसे देश में यह बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से किया गया। महिलाओं की सुरक्षा के लिए वर्तमान कानून महिलाओं को यौन संतुष्टि की वस्तु के रूप में देखता है और इसलिए यह बहन, माँ, बेटी और अन्य महिला रिश्तेदारों का ख्याल नहीं रखता है।

स्वतंत्रता के बाद, यह कहा जा सकता है कि कई चुनावों के कारण, प्रत्येक नेता के मन में परिणामी असुरक्षा ने इन नेताओं को भारत की न्याय व्यवस्था को अपनी परंपरा और परीक्षण (यानी धर्म सनातन के अनुसार) के अनुसार सुधारने के बारे में सोचने की अनुमति नहीं दी। स्वतंत्र भारत में सरकार ने केवल एक ही काम किया है, वह है स्थानीय ब्रांड नाम जैसे भारतीय न्याय संहिता आदि के तहत गुलामी बढ़ाने वाले ब्रिटिश शासन पर अपनी मुहर लगाना।

यह आश्चर्य की बात है, लेकिन यह कहा जा रहा है कि प्रधानमंत्री बनने वाले नेताओं ने एक राय विकसित की कि यदि वे न्यायिक प्रणाली में सुधार (सही) करते हैं तो लोग सवाल पूछेंगे और कई योजनाओं पर अदालत जाएंगे, जिन्हें सरकार शुरू करती है (कई बार अपने राजनीतिक दल के सहयोगी, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मित्रों को लाभ पहुंचाने के लिए जो चुनाव को वित्तपोषित करते हैं और अन्य तरीकों से बाध्य करते हैं) गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम को दरकिनार करते हुए यानी ये नेता (विशेष रूप से प्रधान मंत्री, सत्तारूढ़ राजनीतिक दल या गठबंधन के अध्यक्ष) अपने व्यक्तिगत या राजनीतिक एजेंडे पर बड़ी रकम खर्च नहीं कर पाएंगे, इसलिए यह कहा जाता है कि इन सभी शीर्ष नेताओं ने भारत जैसे देशों की न्यायिक प्रणाली को सही करने की जहमत नहीं उठाई।

4. व्यवस्था भ्रष्ट हो चुकी है और यह भ्रष्ट व्यवस्था भीतर से सड़ भी चुकी है और यह लंबे समय से चल रही है - इसका परिणाम यह हुआ है कि जनता ने भी इसे स्वीकार कर लिया है और कहीं न कहीं जनता ने भी अपने आप को भ्रष्ट कर लिया है।

यह समझने के लिए कि यह सब अन्याय कितने समय से चल रहा था, नीचे दी गई कविता को पढ़ना अच्छा लगेगा जो चीनी गुरु लाओ त्जु द्वारा पच्चीस सौ साल पहले लिखी गई "ताओ ते चिंग" का पुनरावलोकन है: (पुस्तक "धार्यते इति धर्म" देखें: resurrectionofdharma.com):

“जब धर्म (मूल) भूला जाता है,

***इस्म उत्पन्न होता है और विभिन्न संप्रदाय और वर्ग उत्पन्न होते हैं, ***

जब ऋषियों की उपेक्षा होती है, तब ब्रह्मचर्य उत्पन्न होता है,
जब बूढ़े और बुद्धिमान लोग किनारे कर दिए जाते हैं, तो जानकारी सामने आती है,

जब स्वास्थ्य को भुला दिया जाता है, तब औषधि उत्पन्न होती है,
जब तालमेल टूट जाता है, तब योग उत्पन्न होता है,
जब नैतिकता की अनदेखी की जाती है,
भ्रम और अराजकता उत्पन्न होती है और न्याय उत्पन्न होता है,

जब सामंजस्य और लय टूट जाती है,
कूटनीति और संक्षिप्तता उत्पन्न होती है और वफादार बलों और मंत्रियों के समूह उत्पन्न होते हैं।
क्या विभिन्न गुणों की उपस्थिति है?
क्या यह बड़े पैमाने पर गायब होना नहीं है?

वाद का प्रयोग हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, शिया, सुन्नी, कैथोलिक, साम्यवाद और पूंजीवाद आदि में किया जाता है।

यदि हम स्वस्थ और खुशहाल रहना चाहते हैं तो भारत और दुनिया भर में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक शासन व्यवस्था और उसकी न्यायिक, स्वास्थ्य और शिक्षा व्यवस्था के पूरे प्रतिमान की समीक्षा की जानी चाहिए। हालाँकि, बढ़ती बातचीत और अभिसरण के साथ, दूरियाँ और मतभेद तेजी से मिट रहे हैं, इसलिए सभी धर्मों और कार्य प्रणालियों का अध्ययन करना तेजी से आवश्यक होता जा रहा है ताकि हम अपने आगे के उपयोग (और निश्चित रूप से दुरुपयोग) के लिए उनसे अमृत प्राप्त कर सकें।

5. आध्यात्मिक गुरु/लोग जो जनता को जागृत/ज्ञान देने में व्यस्त हैं उन्हें भरत कहा जाता है और उन्हें विश्व का प्राकृतिक नेता (भारत (भा + रत), भा- प्रकाश, ज्वाला, ऊर्जा, रत- व्यस्त, अर्थात् ज्ञान प्राप्ति में व्यस्त, इसकी सफेद आभा में जीवन के हर रंग समाहित हैं) माना जा सकता है।

यह आवश्यक माना जाता है कि भारत अपनी सम्पूर्ण जीवंतता और गतिशीलता के साथ विश्व का स्वाभाविक नेता बनकर व्यवहार करे, ताकि हम सभी स्वस्थ, प्रसन्न और पवित्र रह सकें।

सामान्यतः अराजकता पैदा हो जाती है और यहां तक कि तबाही भी हो जाती है यदि ये (भारत) एक स्वाभाविक नेता की तरह व्यवहार नहीं करते, क्योंकि ये वे लोग हैं जो समझते हैं कि नेतृत्व का मार्ग हृदय से मस्तिष्क तक, मानसिक बनावट से शारीरिक क्रिया तक, तथा शब्दों, कृत्यों और कर्मों में एकरूपता के माध्यम से होता है।

सर्वोच्च नियोजन, क्रियान्वयन और समन्वय निकाय को लगातार ऐसे सभी ऋषियों, संतों और सूफियों (अलग-थलग या परिवार में रहने वाले) का आशीर्वाद लेना होगा और समग्र कल्याण के लिए व्यवस्थित तरीके से कार्य/व्यवहार करना होगा। ऋषियों, संतों और सूफियों के आदेशों को सभी मौजूदा कानूनों से अधिक शक्ति प्राप्त करनी होगी, क्योंकि उनके आदेश सीधे प्रकृति से पहले से आते हैं और आपदाओं, युद्ध और उत्सवों में भिन्न होते हैं)।

हम अपने दैनिक क्रियाकलापों में जो देखते हैं और जिसे हम नेता मानते हैं, उसे एक संस्था कहा जा सकता है, जो परिस्थितियों से आकार लेती है, ऋषियों द्वारा आशीर्वादित होती है, गुरुओं द्वारा समर्थित होती है, बुद्धिजीवियों द्वारा प्रचारित होती है, अनुयायियों के माध्यम से आगे बढ़ती है और कैनवास के सामान्य भाग्य के लिए काम करती है। यह एक संरचित घटना है और इसी तरह से काम करती है।
ऊपर प्रस्तुत है,

भाग 3/3 – इस विषय पर कि हमें भारत जैसे देश की समवर्ती न्यायिक प्रणाली को क्यों त्यागना चाहिए – और यह कैसे किया जा सकता है – एक समाधान केंद्रित प्रस्तुति

निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है: प्रस्तुति में शामिल है – 1. समाधान के लिए कार्रवाई की ओर, 2. न्याय (शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं भी) के प्रावधान के प्रति विभिन्न आख्यान/दृष्टिकोण, 3. सनातन धर्म क्या तैयार करता है,

1. समाधान हेतु कार्यवाही की ओर:

1.A, आश्चर्य की बात है कि भारत के आदिवासी (आदिवासी) अपने समुदाय के भीतर न्याय के संबंध में और अन्य आदिवासी समुदायों के साथ व्यवहार में किसी भी तरह का विवाद नहीं रखते हैं। शायद आदिवासियों की निंदा करने के बजाय हम उनसे न्याय का पाठ फिर से सीखना चाहेंगे।

1.बी), सरकारी कर्मचारियों द्वारा किराए के वकीलों की दलीलों पर न्याय करना हास्यास्पद है और इसे केवल गुलाम देश या गुलाम/अधीन या उपनिवेश बने रहने की चाहत रखने वाले देश के लिए ही सराहा जा सकता है। कागजों के आधार पर न्याय का कारोबार और न्याय देना किसी भी सभ्यता के पतन की पराकाष्ठा कही जा सकती है।

वर्तमान में (2024 में) भारत सरकार के अनुसार सभी प्रकार और सभी स्तरों पर लंबित मामलों की कुल संख्या 5.1 करोड़ (5,10,00,000) है, जिसमें जिला और उच्च न्यायालयों में 30 वर्षों से अधिक समय से लंबित 180,000 से अधिक अदालती मामले और सर्वोच्च न्यायालय में 80,221 मामले (जनवरी 2024) लंबित हैं। अफसोस! अदालती मामलों की इतनी बड़ी संख्या के लिए किसी को भी यह पता नहीं है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है? क्या यह निर्णायक रूप से साबित नहीं करता है कि वर्तमान न्यायिक प्रणाली न्याय प्रदान करने में सक्षम नहीं है?

अगर देश की न्याय व्यवस्था की अक्षमता से हर कोई वाकिफ है और लगातार इसकी वजह से परेशान है, अपना संयम खो चुका है, खुद को असहाय और निराश महसूस कर रहा है, तो क्या यह सीधे तौर पर देश (भारत) में सर्वोच्च सत्ता पर काबिज लोगों की जिम्मेदारी नहीं है कि वे इसे ठीक करें? वैसे इस मुद्दे को देश में केवल जनमत संग्रह से ही सुलझाया जा सकता है, संसद, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, विधानसभाएं और सुप्रीम कोर्ट मिलकर भी इसे सुलझा नहीं सकते, जिसके लिए चुनाव आयोग को जनमत संग्रह करवाने के लिए पर्याप्त सक्षम कहा जा सके।

2. न्याय (शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं भी) के प्रावधान के प्रति विभिन्न आख्यान/दृष्टिकोण:

(2.ए), प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में आम तौर पर ऐसी स्थिति का सामना करता है, जिसमें उसे न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन-सह-शिक्षा जैसी उचित सेवाओं की निश्चित रूप से आवश्यकता होती है। यदि यह सही है, तो सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली ये सेवाएं यदि पूरी तरह से निःशुल्क और आसानी से सुलभ नहीं रखी गईं, तो इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि जरूरतमंद और योग्य उम्मीदवार इन बुनियादी सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाएं।

ऐसे व्यक्तियों, उनके परिवारों और समूह/समाज की स्थिति की कल्पना की जा सकती है जो न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन/शिक्षा जैसी बुनियादी सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाते हैं, चाहे उनके पास धन/संसाधनों की कमी हो या कोई और कारण। यह निश्चित है कि यह स्थिति स्वस्थ और खुशहाल देश और समाज की निशानी नहीं मानी जा सकती।

इसके अलावा, हाल ही में दुनिया भर में महामारी के प्रकोप और उसके परिणामस्वरूप लॉकडाउन ने हर किसी के दिमाग में एक बात बहुत स्पष्ट रूप से स्पष्ट कर दी है कि कैसे एक मरीज पूरे परिवार, कॉलोनी, शहर, देश और शायद पूरी दुनिया में बीमारी फैलाने के लिए पर्याप्त है, इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि गुणवत्तापूर्ण उपचार (मूलभूत सामाजिक सुरक्षा) सभी को उपलब्ध हो, चाहे उनकी जाति, पंथ, रंग, लिंग, बीमाकृत या गैर-बीमाकृत और धनवान या गरीब कोई भी हो। इसलिए यह वकालत की जाती है कि इन सेवाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा और न्यायिक सेवाओं) को अतिथि और आगंतुक सहित सभी के लिए मुफ्त और उच्चतम मानक रखा जाना चाहिए।

यह समझ आस्था के मूल सिद्धांतों के साथ जुड़ गई कि "जो देता है, उसे मिलता है (जो देता है, वह पैदा करता है)" इसलिए न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा की ये तीन बुनियादी सेवाएँ समाज द्वारा दिए गए योगदान से चलती रहीं और लाभार्थी द्वारा दिए गए आभार के संकेत के रूप में भुगतान के बाद। सुदूर अतीत में ये तीनों (न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा) सेवाएँ इसी तरह रखी जाती थीं और न केवल भारत में बल्कि लगभग पूरी दुनिया में समाज का आदर्श थीं।

उपरोक्त मनोवृत्तिपरक सेवाओं के अभ्यास ने व्यक्तियों, परिवारों और समाज को ऐसा व्यक्ति बना दिया है जो विश्व को अपना सर्वश्रेष्ठ देता है और दूसरों पर विश्वास करता है तथा बदले में उसे सर्वश्रेष्ठ मिलता है तथा सर्वश्रेष्ठ बने रहने का आशीर्वाद मिलता है।

(2.बी), दुनिया में एक और नस्ल है, जो सोचती है कि ये (स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय) केवल तीन सेवाएं हैं जिनकी हर किसी को अपने जीवनकाल में निश्चित रूप से आवश्यकता होगी और जब किसी को आवश्यकता होती है तो वह (अन्य सेवाओं की तुलना में) अधिक भुगतान करने में भी संकोच नहीं करता है, इसलिए यदि कोई व्यक्ति या कोई समूह/समाज अधिक कमाना चाहता है, तो इन क्षेत्रों को सबसे अच्छा भुगतानकर्ता और लाभ कमाने वाला कहा जा सकता है।

यह समझ और हर किसी के मन में यह बुनियादी संदेह कि कोई भी पैसे वापस नहीं करेगा, इसलिए, इन तीनों सेवाओं का पूरी तरह से व्यवसायीकरण कर दिया गया, जो कभी-कभी अनैतिक, धोखाधड़ी, लूटपाट, धोखाधड़ी और यहां तक कि दिनदहाड़े डकैती भी प्रतीत होता है। उपरोक्त मनोवृत्तिगत व्यवहार के अभ्यास ने व्यक्तियों, परिवारों और समाज को इस तरह की सोच वाला बना दिया है, जो दुनिया से सर्वश्रेष्ठ लेना चाहता है और दूसरों पर संदेह और अविश्वास करता है।

(2.सी), दुनिया में अभी भी एक और नस्ल है, जो जरूरतमंदों और गरीबों को ये तीन सेवाएं मुफ्त प्रदान करने का दावा करती है और निजी पेशवरों को सरकारी सहायता या बीमा के माध्यम से धनी लोगों की सेवा करने की अनुमति देती है।

ये सभी देश (भारत सहित, जहां स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय के क्षेत्र में मुफ्त और अधिक शुल्क लेने की समानांतर व्यवस्थाएं हैं) रोगग्रस्त प्रतीत होते हैं और उनके नागरिक और राजनीतिक नेता दुखी, निराश और असहाय प्रतीत होते हैं।

(2.डी), लोग अपनी मूल आस्था के आधार पर वैसा ही बनना चाहते हैं जैसा कि ऊपर (2.ए) में बताया गया है, लेकिन वर्तमान में वे (2.बी) में बताई गई प्रवृत्ति का अनुसरण करने और (2.सी) में बताई गई तरह जीने के लिए बाध्य हैं, क्या सही है या नहीं, यह व्यक्तिगत निर्णय का विषय होगा, लेकिन पूरे समाज और देश को इनका चयन करने और इनका पालन जारी रखने के लिए, हमें सचेत और सामूहिक निर्णय लेने होंगे (या तो हमारी आस्था के अनुरूप या वर्तमान बाजार प्रवृत्तियों के अनुरूप) जो संसद और अदालत में नहीं बल्कि देशव्यापी जनमत संग्रह द्वारा ही लिए जा सकते हैं।

3. सनातन धर्म किस धर्म की रचना करता है,

(3.A), आस्था/धर्म वह आधार है जिस पर किसी भी समाज, उसकी संरचना या अधिरचना का निर्माण किया जा सकता है और उसे टिकाऊ बनाया जा सकता है। व्यवस्था और व्यवहार जो सतत टिकाऊ रहने

के लिए बनाए गए थे, उन्हें आधारशिला (आधार) कहा जा सकता है जिस पर प्रकृति और मानव समाज की गतिविधियों को चलाने और चलाने के लिए धर्म संस्थान (धार्मिक संस्था) बनाए गए थे (समाज में समस्याएं तब शुरू हुईं जब समाज ने इस मूल आधार की उपेक्षा या अनदेखी की या उसे छोड़ दिया कि आस्था/धर्म आधार है और राजनीति (राजनीति) उस पर निर्मित अधिरचना है। लोग यह भूल गए हैं कि आधार के बिना अधिरचना न तो बनाई जा सकती है और न ही खड़ी हो सकती है यानी अधिरचना (राजनीति-राजनीति) आधारहीन हो जाती है और संरचना के बिना आधार एक बंजर भूमि, बर्फीली चोटियां, शांत समुद्र और बेशर्म हवा की तरह रह जाता है।

(3.बी) जब से मूल धर्म को भुला दिया गया है और इसके क्षेत्रीय मतभेदों ने धर्म के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, तब से समस्याएँ उभरने लगी हैं। यह देखकर आश्चर्य होगा कि प्रत्येक धर्म के सभी धार्मिक गुरु अपने कुल, अनुयायियों और समर्थकों को ये बुनियादी सेवाएँ (स्वास्थ्य, न्याय और शिक्षा) प्रदान करने के बजाय मृत्यु के बाद जीवन के सपने दिखाने, अपने अनुयायियों में भय पैदा करने, अपने धर्म की श्रेष्ठता और दूसरों की हीनता दिखाने में व्यस्त रहे और समाज में शांति और सद्भाव की जगह नफरत और दुश्मनी को बढ़ावा दिया।

यह देखा गया है कि इन तथाकथित धार्मिक गुरुओं ने "अपने मालिक स्वयं बनो, अपना प्रकाश स्वयं बनो" जैसे उपदेशों द्वारा व्यक्ति की व्यक्तिगतता और सफलता के बारे में लगातार और निरंतर बयानबाजी करके, जाने-अनजाने में दो सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं, अर्थात् परिवार और समाज को पीछे धकेल दिया है। इससे परिवारों और समाजों में सामूहिकता और एकरूपता खराब हुई है।

इन सभी धार्मिक गुरुओं ने मिलकर अपने लगभग सभी अनुयायियों के साथ-साथ पूरे समाज की आस्था को हिलाकर रख दिया है। चिकित्सा डेटा पुष्टि करता है कि बीमारियाँ बहुत ही खतरनाक दर से बढ़ रही हैं जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज में इन सेवाओं को प्रदान करने वाली एजेंसियाँ (धार्मिक संस्थाएँ) बुरी तरह विफल हो रही हैं। समाज के लिए इससे बदतर स्थिति और क्या हो सकती है कि कम से कम अपने चुने हुए धर्म/ईश्वर के धार्मिक व्यक्ति और स्थान से इन सेवाओं को पाने की उम्मीद न हो।

चूंकि आस्था/धर्म प्रत्येक जीव के लिए जन्मजात और केंद्रीय (हृदय) है, इसलिए जब आस्था डगमगाती है/टूटती है/टुकड़ों में विभाजित होती है तो यह स्पष्ट है कि केंद्र (हृदय) अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो यह अंततः व्यक्ति के आंतरिक संतुलन और प्रतिरक्षा को बिगाड़ देती है, जिससे जाहिर तौर पर शुगर लेवल (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग), असहायता (कैंसर) होती है और वह सभी प्रकार की अन्य बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

(3.सी), खुशी को जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति कहा जा सकता है और प्रकृति को बनाए रखने के लिए धर्म का एकमात्र उद्देश्य कहा जा सकता है। कोई व्यक्ति, परिवार, समाज और देश खुश है या नहीं, इसे आर्थिक रूप से कुछ व्यय पैटर्न द्वारा भी मापा जा सकता है और इसे सकल खुशी अनुपात द्वारा दर्शाया जा सकता है।

जब प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है (धर्म का हास), तो स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी और उपदेश (चिकित्सा, शिक्षा और न्यायपालिका) और यहां तक कि शवगृहों के व्यवसाय में वृद्धि होती है। जबकि जब प्रवृत्ति ऊपर की ओर होती है (धर्म की रक्षा और उसका पालन किया जाता है), तो बुनियादी ढांचे, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट आदि में वृद्धि होती है। (सकल खुशी अनुपात (जीएचआर) को = ए/बी जैसे अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें, ए: बुनियादी ढांचे, शक्ति निर्माण और रखरखाव, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट, परोपकार आदि पर सरकार और जनता का कुल व्यय और बी: स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी और तथाकथित नैतिक उपदेश, संकट प्रबंधन और शवगृह व्यवसाय पर सरकार और जनता का कुल व्यय

(3.डी), धर्म को आधार मानने की परिभाषा को देखते हुए कहा गया है कि धर्म को अपने धर्म संस्थान के माध्यम से सम्पूर्ण समाज के सम्पूर्ण आधारभूत एवं स्थानीय कार्यों का सम्पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए। अर्थात् धर्म को सम्पूर्ण जीवन शैली का निर्देशन करना चाहिए तथा सम्पूर्ण सुरक्षा (शारीरिक, आर्थिक एवं भावनात्मक), रोजगार एवं व्यस्तता के सम्पूर्ण आयाम, शिक्षा एवं स्वास्थ्य, ऊर्जा एवं मनोरंजन, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, प्रशासन एवं न्याय के साथ-साथ अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयारी का ध्यान रखना चाहिए।

इसके अलावा राजनीति (सरकार) जो एक अधिरचना है, को सामूहिक सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय विकास, सुरक्षा (रिजर्व पुलिस और सेना), इंटरकनेक्टिविटी, अनुसंधान और विकास, सुझाव और प्रतिक्रिया के लिए सुविधा, राष्ट्रीय त्योहारों के उत्सव के साथ-साथ संविधान (दृढ़ता से स्थापित और लचीली प्रणाली) और संवैधानिक न्यायालय के माध्यम से देश के मार्गदर्शक और विवेक के रक्षक का ध्यान रखना चाहिए (यह परिभाषा यह भी बताती है कि भारत में राज्य सरकारों और सहयोगी कार्यालयों जैसी किसी भी मध्यस्थ संरचना की कोई आवश्यकता नहीं है, और इसे समाप्त किया जा सकता है)।

यह समय समाज के लिए उठकर जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने का है। भारत स्थानीय धार्मिक निकायों, जिला परिषदों, कुछ क्षेत्रीय कार्यालयों और राष्ट्रीय सरकार (निर्वाचित सांसदों द्वारा संचालित) के माध्यम से खुद को बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित कर सकता है।

(3.E), किसी भी समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए न्याय की प्राप्ति सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए उच्चतम स्तर की न्याय व्यवस्था बनाए रखना समाज का विशेषाधिकार और जिम्मेदारी है। न्याय को प्रलय के लिए छोड़ देने से पूरा समाज बर्बाद हो जाता है, जिसकी सराहना नहीं की जा सकती। इसके अलावा हाल ही में देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान, सभी धार्मिक संस्थानों के साथ-साथ सभी अदालतें बंद रहीं, इसलिए कहा जा सकता है कि आम लोगों और देश में आने वाले आगंतुकों को सांत्वना और न्याय प्रदान करने के लिए इसकी प्रासंगिकता खत्म हो गई है।

न्याय समाज का उत्तरदायित्व है और माना जाता है कि इसका रखरखाव वरिष्ठ नागरिकों के एक समूह के साथ-साथ लोकपाल द्वारा किया जाना चाहिए, जो इस बात पर भी विचार कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति चोर या डाकू क्यों बनता है, तथा उसके बाद उसके लिए उपचारात्मक उपाय सुझा सकते हैं, क्योंकि जो समाज स्वस्थ और खुशहाल रहना चाहता है, उसे केवल अपराध के दंडात्मक भाग पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि क्षमा और पुनर्वास के मुद्दों पर भी ध्यान देना चाहिए।

न्याय प्रदान करना उन सम्मानित व्यक्तियों का विषय है जो पर्याप्त आयु और अनुभव प्राप्त कर चुके हैं, पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुके हैं, सभी प्रकार की स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं ताकि वे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के समाज के सभी सदस्यों को समान दृष्टि से देख सकें।

ऊपर प्रस्तुत है,

महामहिम द्रौपदी मुर्मू के समक्ष एक खुला निवेदन

को

महामहिम द्रौपदी मुर्मू

भारत के राष्ट्रपति,

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली, 110001, भारत,

दिनांक: 20.06.2024

विषय : एक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र विश्व व्यवस्था के लिए एक वैकल्पिक आर्थिक मॉडल के संबंध में एक खुला निवेदन, जिसमें आपके देश के कुछ जिलों में पायलट परियोजनाएं शुरू करने का अनुरोध है, ताकि सकल खुशी सूचकांक/अनुपात को समयबद्ध तरीके से अपने इष्टतम स्तर तक बढ़ाया जा सके, ताकि आपके पूरे देश और दुनिया भर में इसके कार्यान्वयन के लिए एक आधार तैयार किया जा सके।

यह पत्र संक्षेप में अवधारणा प्रस्तुत करता है और संलग्न अनुलग्नक में मुद्दों, तर्कों और उनके समाधान और प्रयोज्यता की समझ को आसान बनाने के लिए चयनात्मक लेखन शामिल है (दस्तावेज/पुस्तक – "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था – प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था", वेबसाइट से मुफ्त में डाउनलोड की जा सकती है: resurrectionofdharma.com), :

आदरणीय महामहिम द्रौपदी मुर्मू

निम्नलिखित प्रस्तुत है:

इस युग में (लिखित इतिहास के पिछले तीन-चार हजार वर्षों में) इस धरती पर हुए सभी ईश्वरीय अवतारों और भगवान या ईश्वर के पुत्र या पुत्री के रूप में जनता द्वारा आदरणीय लोगों तथा ईश्वर या देवताओं/पवित्र पुस्तक की बात करने वाले लोगों और आंतरिक इंजीनियरिंग, तालमेल, उपदेश, प्रेरणा, अच्छे दिनों का वादा करने आदि में शामिल लोगों के प्रति सम्मान के साथ तथा उन लोगों के प्रति कोई अपराध न करते हुए जो अपने स्वयं के आनंद के लिए पृथ्वी का शोषण करने और दूसरों के जीवन को दुखी बनाने तथा समाजों और देशों की संपूर्ण स्थिति को कमजोर बनाने में शामिल हैं, निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. यह पत्र विशेष रूप से आपके लिए लिखा जा रहा है, ताकि हम सबकी सामूहिक भलाई के लिए दुनिया में एक बेहतर आर्थिक व्यवस्था लाने में आपका सहयोग मिल सके। उपर्युक्त दस्तावेज़/पुस्तक - "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था" में परिकल्पित आर्थिक प्रणाली को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में हम जो गड़बड़ी देख रहे हैं, उसे सुचारु करने के लिए एक ग्रंथ बनाने के लिए विकसित किया गया है।

खुले तौर पर एक तथ्य का उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि इस युग में अब तक विकसित सभी आर्थिक सिद्धांत, अर्थात् पिछले तीन-चार हजार वर्षों में "वस्तु विनिमय प्रणाली से लेकर साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद, शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांतों से लेकर नवीनतम - नव शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांतों तक, सिद्धांत के रूप में और व्यवहार के रूप में विफल रहे हैं, इसलिए इस परिदृश्य में यह बहुत अच्छी तरह से कल्पना की जा सकती है कि सभी देशों के आर्थिक/वित्त/वाणिज्य मंत्रालय निर्धारित सिद्धांतों और सिद्धांतों पर नहीं बल्कि सनक और कल्पना, हिट एंड ट्रायल, पूर्वाग्रहों और व्यक्तिगत प्राथमिकताओं या धनी राजघरानों, धार्मिक प्रमुखों या प्रधान मंत्री/राष्ट्रपति के कार्यालय या आईएमएफ, डब्ल्यूबी, डब्ल्यूईएफ और संयुक्त राष्ट्र के हुक्म के अनुसार टुकड़ों में चल रहे हैं।

हम जो तात्कालिकता देख रहे हैं, उसे देखते हुए यह उचित होगा कि हम अपने विश्व को एक बेहतर स्थान बनाने के लिए आवश्यक परिवर्तन लाने में सक्रिय रूप से शामिल हों।

2. दस्तावेज़/पुस्तक - वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था", एक गहन शोध किया गया दस्तावेज़ है, जो अब तक विकसित सभी आर्थिक प्रणालियों, पवित्र ग्रंथों, हमारे छह आंतरिक प्रकाशनों और पिछले बीस वर्षों में हुए अन्य लेखों, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मूल प्रणालियों अर्थात् जनजातियों - आदिवासी - अबोरिजिन (जिन्हें हमारी संपूर्ण सभ्यता का आधार और मूल कहा जाता है) की प्रणालियों से प्रेरणा लेता है।

यद्यपि दस्तावेज़/पुस्तक- "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था-प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था" को बहुत ही कच्चे रूप में प्रस्तुत किया गया है, फिर भी यह अपनी शर्तों और नियमों में सभी बुनियादी आर्थिक मुद्दों के उत्तर देने के लिए काफी स्पष्ट है और हमारी तेजी से परस्पर जुड़ी हुई वैश्विक दुनिया में मानव जाति के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। इस दस्तावेज़ ने अर्थव्यवस्था पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो हमेशा/सदा के लिए टिक सकता है (अर्थात् संस्कृत में सनातन/शाश्वत और उर्दू में जावेद/द्वमी आदि)। इस पुस्तक में संदर्भ/उदाहरण/डेटा जहाँ भी आवश्यक समझा गया है, भारत से लिया गया है।

इसके अलावा, पायलट परियोजना की सराहना करने के लिए, कुछ सामान्य प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर, जो उत्पन्न हो सकते हैं, अनुलग्नकों में दिए गए हैं (ए से एम तक तेरह विषय)।

3. अधोलोक में इस बात पर खुले तौर पर सहमति व्यक्त की जा रही है कि वर्तमान समस्या का समाधान नई विश्व व्यवस्था के निर्माण में निहित है, जबकि आध्यात्मिक जगत में यह कहा जा रहा है कि मानव जाति के समक्ष उपस्थित समस्याओं का समाधान धर्म (मूल धर्म) और उसकी संस्थाओं के पुनरुत्थान में निहित है, यद्यपि युद्धरत/विरोधी गुटों के बीच उनके विचारों और दृष्टिकोणों पर समुचित मंथन के बाद ही ऐसा किया जाएगा।

इस प्रकार, 'नई विश्व व्यवस्था' के संबंध में समाचार-विचार सभी जगह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, लेकिन धर्म और धर्म संस्थान के पुनरुत्थान के संबंध में कोई उपलब्ध नहीं है, इसलिए हमारे लिए यह समझदारी होगी कि हम इस पर कुछ शब्द कहें कि, 'पुनरुत्थान की आवश्यकता क्यों है?', यह कैसे किया जा सकता है? और, पुनरुत्थान से हमें क्या हासिल होगा?

इन तीन मूल प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर नीचे दिए गए हैं:

3.1. पुनरुत्थान की ज़रूरत क्यों है?

3.1.1 . समाज में जिस चीज की कमी है, वह है बुनियादी सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता, अर्थात् यदि हम जीवन में किसी भी समय असहाय, धनहीन हो जाएं और देश या दुनिया में किसी भी स्थान पर अकेले रह जाएं, तो हमें बुनियादी सुविधाएं जैसे शारीरिक सुरक्षा, भोजन, पानी, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य, मार्गदर्शन और न्याय मिलने के बारे में निश्चित नहीं हैं। यह दर्शाता है कि मूल धर्म और उसकी संस्था जो समाज के सभी लोगों की बुनियादी जरूरतों का ख्याल रखने वाली थी, वह समाप्त हो गई है और उसे सुधार/पुनरुत्थान की आवश्यकता है।

3.1.2. यदि हम भारत को देखें तो एक ओर तो इसके आधिकारिक आंकड़ों (वर्ष - 2024) के अनुसार इसके अस्सी करोड़ लोग इतने गरीब हैं कि सरकार उन्हें मुफ्त राशन (प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना - पीएमजीकेवाई के माध्यम से) प्राप्त करने के योग्य मानती है, और दूसरी ओर भारत के धनी, राजघराने और धार्मिक प्रमुख एक ओर तो समाज को नियम-कायदे बताते हुए पाए जाते हैं, और दूसरी ओर या तो देश छोड़कर भाग जाते हैं, या अकेलेपन में मर जाते हैं या जेल में कष्ट भोगते हैं, जो दर्शाता है कि बुनियादी व्यवस्था गड़बड़ा गई है और इसमें सुधार/पुनरुत्थान की आवश्यकता है।

3.1.3. धार्मिक घृणा, शत्रुता और संघर्षों का मुकाबला करने तथा सभी युवाओं को रोजगार और सभी वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानजनक रोजगार प्रदान करने के लिए धर्म (मूल धर्म) का पुनरुत्थान और धर्म संस्थान (सामाजिक संस्था) की स्थापना आवश्यक है।

जबरन भीख मांगने, मानव तस्करी और जबरन वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी को बढ़ावा देने, गरीबी, प्रदूषण और जनसंख्या के व्यवस्थित निर्माण और वृद्धि को रोकने के लिए भी पुनरुत्थान की आवश्यकता है। डिजिटल बाजार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीनों के इंटरफेस, सड़कों (ऑटोमोबाइल), रेलवे, विमानन, शिपिंग सड़कों और उपग्रहों में वृद्धि और विकास को सुव्यवस्थित करने के लिए भी पुनरुत्थान की आवश्यकता है।

3.1.4. यदि कोई सज्जन/महिला यह देखना और सुनिश्चित करना चाहे कि समाज में कोई भी व्यक्ति बुनियादी सुविधा और सुख-सुविधाओं से वंचित न रहे, जो उसे स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र तरीके से अपना जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं, तो वह निश्चित रूप से यह देखेगा कि अमेरिका या भारत सहित किसी भी देश में किसी को भी सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने से पहले अनगिनत समस्याएं हल होने का इंतजार कर रही हैं।

इसके अलावा यदि कोई राजनेताओं, सार्वजनिक हस्तियों, समाजसेवियों, धार्मिक गुरुओं और आम लोगों के साथ बातचीत करता है, तो वह यह भी जानना चाहेगा कि इनमें से कई सार्वजनिक हस्तियां और राजनेता समाज में स्वास्थ्य और खुशी देखने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए तैयार हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि वास्तव में क्या किया जाना चाहिए, ये सभी इच्छा, वासना और लालच के भंवर में फंस गए हैं और सामाजिक संस्थाओं और सरकारों के गठन, स्थिरीकरण और अस्थिरता में अपने विभिन्न कार्यों और भागीदारी के माध्यम से परिणामी चतुराई, अहंकार, भ्रष्टाचार, भय, लड़ाई या उड़ान में घूमते पाए जाते हैं।

3.1.5. यदि हम विश्व में घटित हो रही घटनाओं पर बारीकी से नजर रखें तो पाएंगे कि पुराने और बुद्धिमान लोगों के सभी सुसंगत और निरंतर प्रयास विश्व के शीर्ष नेतृत्व को यह समझाने में लगभग असफल रहे हैं कि समाज और देश के उचित आचरण और सुचारु संचालन के लिए प्रणालियां और प्रक्रियाएं तुच्छ मुद्दों, बाजार में हेरफेर/कब्जा करके नाम और प्रसिद्धि, धन और सामग्री में अल्पकालिक लाभ की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं और हमें (नेतृत्व को) जाति, पंथ और रंग के बावजूद सभी के लिए बुनियादी सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान को सुनिश्चित करने के लिए समय और ऊर्जा समर्पित करनी चाहिए।

उपरोक्त बातें यह संकेत करती हैं कि समाज और धर्म की भूमिका शून्य हो गई है और यह अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति आगे आए और समाज/धर्म को पुनर्जीवित करें।

3.2. पुनरुत्थान कैसे किया जा सकता है?

3.2.1. संदर्भित दस्तावेज/पुस्तक जिसका शीर्षक "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था (एई) - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था (एनएसई)" है, (इसके अध्याय -16, 17 और 18 में) मोटे तौर पर कार्रवाई शुरू करने और परिणाम प्राप्त करने के विभिन्न तौर-तरीकों सहित ऐसे सभी प्रश्नों के उत्तर शामिल करता है। इसलिए, जो लोग इस प्रक्रिया में भाग लेने के इच्छुक हैं, उनके लिए यह उचित होगा कि वे दस्तावेज/पुस्तक - वैकल्पिक अर्थव्यवस्था को पढ़ें, उस पर विचार करें, उस पर मनन करें और फिर अपने स्तर पर कार्रवाई शुरू करने से पहले दोस्तों और परिवार, भागीदारों और सहकर्मियों के साथ उस पर चर्चा करें और यदि किसी भी समय आवश्यकता होती है, तो हमारी ओर से हमेशा स्पष्टीकरण मांगा जा सकता है।

यह महसूस किया गया है कि इस संबंध में पहले कुछ कदम स्वयं और परिवार के सदस्यों को राहत प्रदान करने की दिशा में हैं, जो परिवार के सदस्यों के बीच आय का उचित वितरण सुनिश्चित करके (जैसा कि अनुलग्नक-एफ में प्रस्तुत किया गया है), भोजन, पानी, संगीत, मादक पदार्थों के सेवन में सुधार और पेशाब और शौच के तरीके (शौच/शौच के दौरान मुद्रा - पश्चिमी शौचालय या स्थानीय शौचालय शीट) द्वारा किया जा सकता है।

3.2.2. यह भी महसूस किया गया है कि समाज द्वारा दैनिक आधार पर समाज के सभी सदस्यों के लिए जीवंत और स्वस्थ मनोरंजन की व्यवस्था/उपलब्धता करके किसी भी देश के किसी भी गांव, कस्बे और शहर में इस पूरी प्रक्रिया की शुरुआत की जा सकती है। जीवंत मनोरंजन की व्यवस्था होने से अन्य परिवर्तनों पर चर्चा के लिए उचित माहौल उपलब्ध हो सकेगा।

3.2.3. ऐसा कहा जाता है कि किसी भी स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन की नींव तभी रखी जा सकती है जब हम किसी भी ऐसे अभिशाप से मुक्त हों जो हमें अन्य मनुष्यों, जानवरों, पक्षियों, मछलियों, पेड़ों आदि से विरासत में मिला हो या मिलता रहा हो।

ऐसा कहा जाता है कि किसी को भी मूल स्वतंत्रता से वंचित करना सबसे बड़ा अपराध है और वास्तव में मानव जाति कम से कम पिछले तीन हजार वर्षों से लगातार अपराध कर रही है, खासकर तोते, पक्षी और जानवर, मछली और पेड़ को शोपीस बनाकर या तो पिंजरे, चिड़ियाघर, मछलीघर में रखकर या जानवरों को बधिया करके (बैल, भैंस आदि) उनके सामान्य कामकाज को रोककर या पेड़ों को बोनसाई बनाकर उनके विकास को प्रतिबंधित करके। ऋषियों का कहना है कि समाज में ट्रांसजेंडर की उपस्थिति और जेल/कारावास की अवधारणा इन प्रजातियों द्वारा दिए गए श्राप का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह सुझाव देता

हैं कि हमें सभी सार्वजनिक चिड़ियाघरों को बंद कर देना चाहिए, पक्षियों के लिए पिंजरों का उपयोग कम करना चाहिए, मछलियों के लिए मछलीघर, और बैल (पशु)

3.2.4. यह सिद्ध हो चुका है कि शोर दिमाग को धुंधला कर देता है, दिल की धड़कन को बढ़ा देता है और व्यक्ति की सामान्य सोच और कामकाज को बाधित करता है। इसे देखते हुए, समाज को शोर के सभी स्रोतों (धार्मिक, राजनीतिक, फेरीवाले, कबाड़ी, भिखारी आदि) का विनियमन/प्रतिबंध सुनिश्चित करना चाहिए, साथ ही साथ जब समाज स्वस्थ और जीवंत मनोरंजन की दैनिक खुराक प्रदान करने के बारे में सोचता है। इसके बाद समाज को अपने सभी सदस्यों को बुनियादी नैतिकता और शिष्टाचार के बारे में उचित पालन के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण सुनिश्चित करना चाहिए।

3.3. पुनरुत्थान से हम क्या हासिल करेंगे?

3.3.1. यह कहा जा सकता है कि धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना से हम व्यक्तिगत रूप से पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करेंगे (अर्थात् स्थानीय समाज और राष्ट्रीय सरकार से समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए पूर्ण गारंटी जिसमें वैध अतिथि और आगंतुक भी शामिल हैं - भोजन, पानी, आश्रय, कपड़े, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, काम करने का अवसर (रोजगार), व्यक्तिगत स्थान और व्यक्ति की रचनात्मक गतिविधियों के लिए समर्थन आदि)।

3.3.2 . यह ध्यान देने योग्य है कि यहाँ प्रस्तुत अभ्यासों को अपनाकर हम विकसित देशों में अकेलेपन की समस्या तथा अन्य सभी देशों में बेरोजगारी की समस्या को पूरी तरह से समाप्त/उन्मूलन/खत्म कर सकते हैं, हम न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और धार्मिक स्वच्छता और सफाई बनाए रखने में सक्षम होंगे। हम अपने द्वारा खाए जाने वाले भोजन, पीने वाले पानी और साँस लेने वाली हवा की गुणवत्ता में सुधार करने में सक्षम होंगे, और साथ ही समाज, देश और दुनिया में समग्र स्वास्थ्य और खुशी में सुधार करने में सक्षम होंगे।

4. एक बार फिर यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति आय/उपज संसाधनों के वितरण के पैटर्न को अपनाता है और उसका पालन करता है जैसा कि यहाँ (**अनुलग्नक-एफ**) में बताया गया है, तो उसका पूरा परिवार निश्चित रूप से स्वस्थ और खुश रहेगा, और यदि कोई व्यक्ति अपने इलाके और समुदाय में ऐसा करने में सक्षम है तो उसका इलाका और समुदाय स्वस्थ और खुश रहेगा। इसी तरह यदि हम अपने समाज, देश और दुनिया में ऐसा करने में सक्षम हैं तो यह निश्चित है कि हमारा समाज, देश और पूरा विश्व स्वस्थ और खुश रहेगा।

अतः अंत में यह कहा जा सकता है कि जो लोग अपने क्षेत्रों में इन गतिविधियों को शुरू करने में संलग्न होंगे, उन्हें निश्चित रूप से समाज में सम्मान मिलेगा, उनके नाम और प्रसिद्धि में वृद्धि होगी, उन्हें विभिन्न सामाजिक और संवैधानिक निकायों में निर्वाचित/नामांकित होने में लाभ होगा, और यह सभी

नेताओं के लिए आश्चर्य की बात होगी कि यह कार्य उनकी लोकप्रियता और संसद का चुनाव जीतने के लिए सामान्य रूप से किए जाने वाले खर्च की तुलना में बहुत कम लागत में शुरू किया जा सकता है।

उपर्युक्त के मद्देनजर, आपसे एक बार फिर अनुरोध है कि आप अपने देश के कुछ जिलों में पायलट परियोजनाएं आरंभ करें, ताकि सकल खुशी सूचकांक/अनुपात को समयबद्ध तरीके से उसके इष्टतम स्तर तक बढ़ाया जा सके, जिससे आपके पूरे देश और पूरे विश्व में इसके समग्र कार्यान्वयन के लिए आधार तैयार हो सके।

सादर प्रणाम एवं शुभकामनाओं सहित,
भगवान हमें आशीर्वाद दें,

सादर,

बंदना चौधरी

लेखक - "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था"

ईमेल: bandanachaudhari2016@gmail.com,

ब्लॉग: <https://tbandana.blogspot.com>,

नरेंद्र

मार्गदर्शक एवं संपादक - "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था",

ईमेल: narendrakumara134@gmail.com,

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com ,

लिंकडइन: <https://www.linkedin.com/in/narendra-agarwal-52325421b> ,

दिनांक: 20.06.2024

स्थान: भारत

अनुलग्नक: ए से एम तक, मुद्दों, तर्क और उनके समाधान को समझने में आसानी के लिए तेरह चुनिंदा लेख।

प्रश्न: 'सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) बनाम सकल खुशी अनुपात/सूचकांक (जीएचआर या जीएचआई)' में मूल अंतर क्या है और समाज और देश के लिए उनकी स्थिति मापने के लिए कौन सा अधिक प्रासंगिक हो सकता है?

उत्तर : इस प्रकार, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) गलत शब्द है, आठ प्रतिशत की वृद्धि के लिए यह इस प्रकार का प्रभाव देता है:

आठ प्रतिशत की वृद्धि: गरीबों की गरीबी में।

आठ प्रतिशत वृद्धि: विकसित देशों के विकास में।

आठ प्रतिशत की वृद्धि: अविकसित का कोई विकास नहीं।

आठ प्रतिशत की वृद्धि: लूटपाट, अपराध, नक्सलवादी और उग्रवादी गतिविधियों में, साथ ही दलितों की विनम्रता और अच्छाई में।

जीडीपी पर अत्यधिक जोर देने से असंतुलन बढ़ा है, समाज में गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ी है। चोरी और डकैती, लूटपाट और नक्सली गतिविधियों में वृद्धि आदि को जीडीपी के अत्यधिक महत्व के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। पारिस्थितिकी या अर्थव्यवस्थाओं में इस तरह की वृद्धि अशांति/असंतुलन का संकेत है। ऐसे में जीडीपी शब्द को सकल खुशी अनुपात से बदलने की जरूरत है, जहां जीएचआर को अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है

सकल खुशी अनुपात (जीएचआर) = ए/बी

उत्तर: बुनियादी ढांचे, शक्ति निर्माण और रखरखाव, भोजन, फिटनेस, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व, अनुसंधान, विकास और सजावट, परोपकार आदि पर कुल व्यय।

बी: स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, तथा तथाकथित नैतिक उपदेश, संकट प्रबंधन और शवगृह व्यवसाय पर कुल व्यय।

सकल प्रसन्नता अनुपात में वृद्धि से हम सभी को अधिक मात्रा में जीवनदायी शक्ति प्राप्त होगी।

जब रुझान ऊपर की ओर होता है, तो बुनियादी ढांचे, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट में वृद्धि होती है। जब रुझान नीचे की ओर होता है, तो स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, और उपदेश और शवगृह व्यवसाय में वृद्धि होती है।

प्रश्न: किसी भी समाज में सामाजिक सुरक्षा का प्रावधान क्यों आवश्यक है और इसे देश के प्रत्येक नागरिक, जिसमें वैध आगंतुक और अतिथि भी शामिल हैं, के लिए कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. जो भी हो, चाहे यह सच हो या सिर्फ आशंका हो, लेकिन हाल ही में दुनिया भर में लॉकडाउन और महामारी के कहर ने एक बात बहुत साफ कर दी है कि एक भी संक्रमित व्यक्ति न केवल अपने परिवार को बल्कि आस-पड़ोस के लोगों को, फिर इलाके के कई लोगों को, अपने कार्यस्थल, शहर और देश को संक्रमित कर सकता है। इसके अलावा, चूंकि हवा और पानी के प्रवाह की कोई सीमा नहीं है, इसलिए वायरस से संक्रमित एक भी व्यक्ति जीवित या मृत होने पर पूरी दुनिया में बीमारी फैलाने की क्षमता रखता है।

इस मैट्रिक्स को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ/रोगमुक्त रहना चाहता है तो यह उसके अपने हित में है कि वह अपने घर, भवन, मोहल्ले, शहर, देश और पूरी पृथ्वी के अन्य लोगों को स्वस्थ/रोगमुक्त बनाए। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि यदि कोई (व्यक्ति, परिवार, समाज, देश आदि) दूसरों को स्वस्थ और रोगमुक्त बनाने में मदद कर रहा है तो वह दूसरों पर उपकार नहीं कर रहा है बल्कि अपने स्वार्थ (और इसे स्वार्थी समाज भी कहा जा सकता है) की सेवा कर रहा है।

इस बिंदु पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दुनिया को एक बड़े परिवार की तरह समझना केवल उदारता/करुणा या परोपकार के कारण नहीं आया है, बल्कि भय/खतरे/मजबूरी और पूर्ण स्वार्थ के कारण भी आया है, ताकि स्वयं को स्वस्थ और रोगमुक्त रखा जा सके।

2. उपरोक्त परिदृश्य से पता चलता है कि बीमारियों के फैलने के संभावित खतरे को दूर करने के लिए हमें (समाज और सरकार को) सभी बीमार लोगों को भोजन, पानी, कपड़े और आश्रय जैसी अन्य आवश्यकताओं के साथ-साथ सभी संभव उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए, चाहे उनकी पहचान कुछ भी हो (जैसे, कोई नागरिक, अतिथि या आगंतुक हो, उसके पास पैसा/संसाधन/बीमा हो या न हो आदि)। यह दर्शाता है कि न केवल बीमारियों का उपचार बल्कि अन्य सभी चीजें जो किसी व्यक्ति की प्रतिरक्षा को कम कर सकती हैं और बीमार पड़ सकती हैं या बीमार/संक्रमित हो सकती हैं जैसे भोजन, पानी, हवा, कपड़े, आश्रय, शारीरिक सुरक्षा, उचित जानकारी, सलाह और मार्गदर्शन, मनोरंजन, व्यायाम सह फिटनेस सेंटर और न्याय आसानी से, समय पर और उच्चतम मानक के साथ सभी को बिना किसी पूर्व शर्त या बाध के बंधन के सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

3. इसके अलावा, यह एक सर्वविदित और सिद्ध तथ्य है कि, पक्षी और पशु, मछलियाँ और मत्स्यपालन, वनस्पति और जीव भी संक्रमण और परिणामी बीमारियों का स्रोत हो सकते हैं, इसलिए यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि सभी मनुष्यों, पक्षियों और जानवरों, मछलियों और मत्स्यपालन, वनस्पति और जीव-जंतुओं को सभी आवश्यक जीवनदायी शक्तियां और स्रोत जैसे भोजन और चारा, हवा और पानी के साथ-साथ किसी भी बीमारी और आकस्मिक चोटों के खिलाफ उपचार की सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।

उपरोक्त को देखते हुए, यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त की व्यवस्था आवश्यक है और इसे समाज और सरकार के संयुक्त प्रयास से ही प्रदान किया जा सकता है।

प्रश्न: कई लोगों का कहना है कि देश में हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं, उसका कारण लोगों/नेताओं की राजनीति (भारत में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला संस्कृत शब्द) और राजनीति (अंग्रेजी बोलने वाले देशों में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला लैटिन शब्द) के प्रति बुनियादी समझ है? सुशासन के लिए इसका क्या परिप्रेक्ष्य हो सकता है?

उत्तर:

राजनीति: राजनीति शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है पुलिस करना, मूल रूप से पुलिसिंग गतिविधि: यह किसी व्यक्ति द्वारा तय किए गए मानदंडों (कानून) के तहत काम करती है, और मुश्किल में भी कानून की पवित्रता पर सवाल नहीं उठाती। गतिशील दुनिया में यह स्थिर है, या यह कानूनों के एक सेट के साथ सरकार चलाने जैसा है, जो शायद मृत हो चुके हैं। तथाकथित राजनीति कानून की किताब को पवित्र मानती है और इसमें कानून की किताब या संविधान की शपथ लेने के बाद काम शुरू होता है। ऐसी स्थिति में न्यायपालिका या तो अपंग या बहुत चालाक महसूस करती है, और जनता; क्या कहें- खुद को एक भीड़ की तरह महसूस करती है, कुछ भी करने में असमर्थ, और सबको कोसते हुए अपना जीवन बिताती है।

राजनीति, राजनीति के विपरीत, (राज) सरकार की नैतिकता है, और यहां नैतिकता पारिस्थितिकी, पर्यावरण, प्रकृति से प्रवाहित होती है, (नीति, नियम से आती है) और इस तरह स्वाभाविक कार्रवाई करती है, गतिशील, जीवंत और जीवंत रहती है।

हम सभी जानते हैं कि शब्द में ऊर्जा तरंगें होती हैं (शब्द, ब्रह्म/विश्व/ब्रह्मांड है) और हम वर्तमान राजनीति की अनेक बुराइयों के लिए इसी सरल कारण को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं

प्रश्न: परिवार क्या है? सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में इसका क्या महत्व है? यह अवधारणा कहाँ से आई कि दुनिया एक बड़ा परिवार है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत हैं:

A. आमतौर पर परिवार को कई देशों में एक इकाई के रूप में परिभाषित और स्वीकार किया जाता है – पति और पत्नी तथा उनके अविवाहित पुत्र और पुत्री (पच्चीस वर्ष की आयु तक)।

B. भारत में कहा जाता है कि – रक्त संबंध वाले लोग (पिता, चाचा, दादा, बेटा और बेटी, पोता और बेटी) के साथ-साथ एक ही वंश के लोग जिन्होंने रक्त संबंध के निर्माण में भाग लिया है (माता, दादी, पत्नी और बहू) जिन्हें कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल में देख सकता है, उसे परिवार कहा जाता है।

आश्रम व्यवस्था में परिवार की स्पष्ट परिभाषा दी गई है। इसमें कहा गया है कि एक व्यक्ति के जीवन में चौबीस वर्ष के चार आश्रम होते हैं (मान लें कि मानव जीवन छियानबे वर्ष का है, मान लें कि सौ वर्ष का है) और इस प्रकार एक व्यक्ति अपने सौ वर्ष के जीवन में जितने लोगों को रक्त संबंधियों और एक ही गोत्र के रूप में देख सकता है, उन्हें परिवार कहा जा सकता है। इसे और विस्तृत रूप से कहें तो जन्म के समय व्यक्ति अपने माता-पिता (पिता या परदादा) से सौ वर्ष तक की आयु वाले रक्त संबंधियों को देख सकता है, अर्थात् तीन पीढ़ी पहले और फिर सौ वर्ष की आयु तक पहुंचने पर वही व्यक्ति अपने से आगे की तीन पीढ़ियों (पुत्र/पुत्री या पौत्र) को देख सकता है। इस प्रकार सात पीढ़ी के लोग, तीन पहले के तीन आगे के और स्वयं व्यक्ति की एक वर्तमान पीढ़ी के लोग मेरा परिवार हैं।

C. इसके साथ ही मेरे या मेरे माता-पिता या मेरी संतान द्वारा शपथ द्वारा बनाए गए रिश्ते भी मेरे परिवार का हिस्सा हैं जैसे बहन, भाई, बेटा या बेटी जिन्हें शपथ द्वारा स्वीकार किया गया है।

D. भारत में कहा जाता है कि मेरी माँ के पैतृक घर के सदस्य, मेरी दादी के पैतृक घर के सदस्य और मेरी पत्नी के पैतृक घर के सदस्य इत्यादि मिलकर कुटुम्ब (कुटुम्ब - बड़ा परिवार) बनाते हैं। अगर हम इस तरह से देखें, तो हम पाएंगे कि हम में से प्रत्येक किसी न किसी तरह से जुड़े हुए हैं और इसलिए यहीं से वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा और भावना विकसित हुई – कि पूरी दुनिया सापेक्ष है।

ई. आय/उपज और संबंधित जिम्मेदारियों के वितरण के अनुसार, यह कहा जाता है कि प्रत्येक सौ युवा की कमाई में से 25% माता-पिता (माता-पिता) को बचपन और किशोरावस्था के दौरान उनके द्वारा की

गई वित्तीय और सेवाओं के प्रतिपूर्ति के रूप में मिलता है, 25% बच्चों (बेटा और बेटी) को, 25% खुद को (पति-पत्नी) को और 25% समाज (स्थानीय और राष्ट्रीय सरकार) को मिलता है, जो अन्य बातों के अलावा बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के अलावा दादा-दादी की देखभाल भी करेगा। उपरोक्त वितरण पैटर्न फरार होने या मृत्यु जैसी विपत्तियों के मामले में भी लागू होता है।

उपरोक्त से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि घटकों की संख्या में वृद्धि (जैसे अधिक बच्चे, एक से अधिक विवाह, तथा दो से अधिक शासकीय निकाय) या किसी घटक की हिस्सेदारी (जैसे अधिक कर) के साथ परिवार/समाज/देश का अच्छा संतुलन बिगड़ जाता है और दुख लाता है।

अनुलग्नक: ई

प्रश्न: क्या दुनिया में जो भी गड़बड़ियाँ हम देख रहे हैं, उसका कारण अर्थशास्त्र की हमारी बुनियादी समझ की कमी है? अगर ऐसा है तो ऐसा क्यों है? इसे ठीक करने के लिए क्या-क्या करना होगा और एक अच्छी आर्थिक व्यवस्था कैसे बनाई जा सकती है?

उत्तर : निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है:

क्या किसी भी देश का कोई भी अर्थशास्त्री, किसी भी आर्थिक मॉडल का समर्थक, किसी भी सभ्य समाज में एक भी गुलाम, भिखारी, बेसहारा और वेश्या की मौजूदगी को उचित ठहरा सकता है और फिर पक्षियों और जानवरों को पिंजरे में बंद करके और फिर पेड़ों की वृद्धि को बोनसाई बनाकर कमतर आंक सकता है। इसके अलावा, क्या कोई अर्थशास्त्री वन क्षेत्र के कम होने, जल निकायों के भूमि से भर जाने और वृक्ष क्षेत्र में कमी आने से वायु और जल में प्रदूषण बढ़ने और भोजन की शुद्धता प्रभावित होने को उचित ठहरा सकता है?

प्रचलित आर्थिक सिद्धांतों की स्थिति:

अब तक विकसित हुए सभी आर्थिक सिद्धांत, प्राचीनतम 'वस्तु-विनिमय प्रणाली' से लेकर पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत से लेकर नवीनतम 'नवशास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत' तक, टिक नहीं सके और किसी न किसी स्तर पर विफल रहे।

अर्थशास्त्र सिद्धांतों की असफलता का कारण:

ये सभी सिद्धांत विफल हो गए हैं, क्योंकि इनमें से किसी ने भी अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांतों अर्थात् पारिस्थितिकी तंत्र और उसकी शाश्वतता का ध्यान नहीं रखा है।

अर्थव्यवस्था की मूल परिभाषाएँ:

'ऑक्सफोर्ड शॉर्टर' और संस्कृत शब्दकोष में इन शब्दों की मूल परिभाषा दी गई है:

इको, नोमी, नॉमिक्स, अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र, और संस्कृत में: अर्थ, व्यवस्था, शास्त्र और नीति, अर्थ शास्त्र, अर्थनीति, और अर्थ – व्यवस्था नीचे दिए गए अनुसार:

इको: पर्यावरण की ध्वनि या पारिस्थितिकी-पारिस्थितिकी तंत्र का संक्षिप्त रूप।

नोमी: कानून, प्राकृतिक कानून – जो पारिस्थितिकी से उत्पन्न होते हैं।

नॉमिक्स – लिखित रूप में विधियों, प्रक्रिया, योजना और परिणामों का संग्रह।

अर्थव्यवस्था: पर्यावरण में सामग्री (धन) स्थानांतरण की प्रक्रिया, योजना और विधियों का संग्रह।
अर्थशास्त्र: धन और वस्तुओं के सम्पूर्ण अर्थ-अर्जन और अर्जन के तरीकों का विज्ञान है जो किसी वस्तु या सेवा के मूल्य का निर्धारण करता है, उसे बेकार, मूल्यवान या अमूल्य बनाता है।

अर्थ: अर्थात् साधन/विधि/प्रक्रिया, अर्थ/प्रासंगिकता/उद्देश्य तथा धन/सामग्री/संपत्ति आदि।
नीति (नैतिकता): आचार संहिता, नीति वह है जो नियम (प्रकृति) से आती है, या नैतिकता की तरह वह आचार संहिता है जो पर्यावरण/पारिस्थितिकी तंत्र से निकलती है।

व्यवस्था: समाज या राज्य द्वारा सुविधा, प्रबंधन और प्रशासन की प्रणाली।

शास्त्र: किसी निश्चित समय, स्थान और ऊर्जा के विभिन्न क्रियाकलापों के पथ, विधियों और परिणामों का संग्रह, लिखित रूप में तथा साथ ही श्रुति और स्मृति (कथन और स्मरण) के माध्यम से।

उपरोक्त शब्दों को संयोजित करने पर अर्थनीति, अर्थ शास्त्र और अर्थ व्यवस्था बनती है।

महान चाणक्य ने सूत्र-15.1 में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है – मनुष्य की वृत्ति को अर्थ कहते हैं । मनुष्य से संयुक्त भूमि ही अर्थ है। इसकी प्राप्ति और पालन के तरीकों पर चर्चा करने वाले शास्त्र को अर्थ शास्त्र कहते हैं।

पुस्तक/दस्तावेज: – "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था – प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था " को एक आर्थिक ग्रंथ कहा जा सकता है जो इन सभी असफल आर्थिक सिद्धांतों की सभी बुराइयों का ध्यान रखते हुए भविष्य की कार्यवाही का सुझाव देता है और शाश्वत और पवित्र ग्रंथों से प्रेरणा लेता है।

प्रश्न: परिवार, देश और समाज में सदस्यों के बीच आय के वितरण का पैटर्न क्या होना चाहिए, जो तर्कसंगत प्रतीत हो और दीर्घकालिक अधिकार बनाम जिम्मेदारी चार्ट में अच्छी तरह से फिट हो और एक स्वस्थ, खुशहाल और टिकाऊ सामाजिक व्यवस्था का आधार हो सके?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. ऐसा कहा जाता है कि दुनिया में कोई भी भोजन मुफ्त नहीं होता है, और हर किसी को अपने दोपहर के भोजन के लिए भुगतान करना पड़ता है, या तो पोस्टपेड, प्रीपेड या सेवा प्रदाता को डिलीवरी के बदले में, जो इस मामले में परिवार के चुनिंदा सदस्य, स्थानीय समाज और राष्ट्रीय सरकार है। जो लोग इस कथन से सहमत नहीं हैं, उनके लिए यह सवाल उठता है कि किस बाध्यता के तहत कोई और व्यक्ति अपने दोपहर के भोजन का भुगतान करेगा और वह भी कई सालों तक या फिर पूरी ज़िंदगी के लिए? यह सवाल भी उठता है: वह सबसे अच्छी प्रणाली क्या हो सकती है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन यानी बचपन, वयस्क, युवा, वरिष्ठ नागरिकों और बुढ़ापे के दोपहर के भोजन का भुगतान कर सकता है?

सामान्य ज्ञान के अनुसार, यह कहा जा सकता है कि बचपन की अवधि की राशि भविष्य में केवल तभी चुकाई जा सकती है, जब वह माता-पिता, समाज/धर्म/धर्म और सरकार के प्रति ऋण के रूप में रहेगी। इसके अलावा वृद्धावस्था की राशि केवल परिवार के सदस्यों, समाज और सरकार को अग्रिम के रूप में ही चुकाई जा सकती है। इसके अलावा, वयस्कता/युवावस्था के दौरान खर्च की गई राशि का भुगतान उसी समय किया जा सकता है और इसके अलावा यह वह अवधि है जब व्यक्ति अपने बचपन का पिछला भुगतान अपने परिवार के सदस्य को और अपने भविष्य के भोजन के लिए परिवार के सदस्यों (भविष्य की पीढ़ी - बेटा और बेटी), समाज/धर्म (स्थानीय सरकार) और राष्ट्रीय सरकार को अग्रिम भुगतान कर सकता है।

2 उपरोक्त को एक दिशानिर्देश मानते हुए, तथा मनुष्यों की औसत आयु सौ वर्ष मानते हुए, किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त या दी गई धनराशि/सेवाओं का सर्वोत्तम वितरण पैटर्न क्या हो सकता है, जिसके अनुसरण के आधार पर कहा जा सकता है कि उसने अपने पूरे जीवन के भोजन का भुगतान कर दिया है?

क्या धर्म के अनुसार ऐसी वितरण प्रणाली की पेशकश या उसका होना धर्म/धर्म या स्वयं धर्म द्वारा पूजनीय नहीं हो सकता?

यह लैंगिक समानता और समाज/धर्म द्वारा संचालित स्थानीय प्रबंधन तथा शेयरधारिता में राष्ट्रीय सरकार द्वारा व्यापक प्रबंधन को समानता प्रदान करता है। क्या इस वितरण प्रणाली को भूल जाना हम सभी के लिए समस्याओं को निमंत्रण देना नहीं है?

3. यदि हम अपनी इष्टतम आयु 100 वर्ष मान लें और इसे प्रतिशत के रूप में लें तो गणना आसान हो जाती है, 25 वर्ष तक की आयु के बच्चों (पुत्र-पुत्री) को परिवार की आय का 25% ऋण के रूप में मिलेगा, 51-75 वर्ष की आयु के माता-पिता को ऋण चुकौती के रूप में 25%, स्वयं और जीवन-साथी (26-50) को 25% तथा समाज और सरकार को 76-100 वर्ष की आयु के लोगों की देखभाल के लिए 25% कर के रूप में मिलेगा। (विवरण के लिए वैकल्पिक अर्थव्यवस्था का अध्याय-17 देखें)।

प्रश्न: समाज में स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय की समस्याओं से निपटने के लिए सबसे अच्छा अर्थशास्त्र क्या हो सकता है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है; प्रस्तुति मुख्य रूप से चार भागों में है – ए, बी, सी और डी।

उत्तर: "प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में आमतौर पर ऐसी स्थिति का सामना करता है, जिसमें उसे न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन/शिक्षा जैसी उचित सेवाओं की आवश्यकता होती है।"

हाल ही में दुनिया भर में महामारी के प्रकोप और लॉकडाउन ने एक बात बहुत स्पष्ट कर दी है, कि कैसे एक अकेला मरीज न केवल अपने परिवार, तत्काल पड़ोसियों में बल्कि पूरे देश और शायद पूरी दुनिया में बीमारी फैला सकता है, इससे पता चलता है कि अगर हम स्वस्थ और खुश रहना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि देश/समाज यह सुनिश्चित करे कि सभी रोगियों को (चाहे उनकी उत्पत्ति, जाति पंथ, रंग, लिंग, बीमाकृत या गैर-बीमाकृत, अमीर या गरीब, नागरिक या आगंतुक आदि कुछ भी हो) समय पर और गुणवत्तापूर्ण उपचार मिले।

अगर यह सही है तो बेहतरीन गुणवत्ता वाली ये सेवाएं अगर पूरी तरह से निःशुल्क और आसानी से उपलब्ध नहीं कराई गईं तो इस बात की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि जरूरतमंद और योग्य उम्मीदवार इन बुनियादी सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाएं, जिसे स्वस्थ और खुशहाल समाज और देश की निशानी नहीं माना जा सकता। न्याय, मार्गदर्शन/सलाह/शिक्षा जैसी उचित सेवाओं के मामले में भी यही स्थिति है।

उपर्युक्त से पता चलता है कि उच्चतम मानक की ये सेवाएं मेहमानों और आगंतुकों सहित समाज के सभी लोगों के लिए आसानी से पहुंचने योग्य स्थानों पर चौबीसों घंटे उपलब्ध कराई जानी चाहिए (बिना किसी शर्त के)।

यह समझ विश्वास के मूल सिद्धांतों के साथ संयुक्त है कि "जो देता है, वह जन्म देता है" इसलिए न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा की ये तीन बुनियादी सेवाएं समाज द्वारा योगदान किए गए धन से चलती रहती हैं और लाभार्थी द्वारा दिए गए कृतज्ञता के संकेत के रूप में भुगतान किया जाता है।

सुदूर अतीत में इन तीनों (न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा) सेवाओं को इसी प्रकार रखा जाता था और ये न केवल भारत में बल्कि दुनिया के अधिकांश हिस्सों में समाज का आदर्श थीं।

B. ऐसे भी लोग हैं जो सोचते हैं कि लोग तभी देते हैं जब उन्हें किसी चीज की आवश्यकता होती है और जब जरूरतें अत्यावश्यक और बड़ी हो जाती हैं तो लोग अधिक कीमत चुकाने में भी संकोच नहीं करते।

स्वास्थ्य, मार्गदर्शन/शिक्षा और न्याय तीन मूलभूत सेवाएं मानी जाती हैं जिनकी हर किसी को अपने जीवनकाल में निश्चित रूप से आवश्यकता होगी, इसलिए, यदि कोई (व्यक्तिगत समूह, समाज या देश) अधिक पैसा कमाना चाहता है, तो इन तीन क्षेत्रों को सबसे अच्छा वेतन देने वाला और लाभ कमाने वाला कहा जा सकता है।

इस समझ के साथ ही हर किसी के मन में यह बुनियादी संदेह था कि कोई भी वापस भुगतान करने के लिए नहीं आएगा, इसलिए, इन तीन सेवाओं का व्यावसायीकरण किया गया।

C. दुनिया में अभी भी एक और प्रजाति है, जो जरूरतमंदों और गरीबों को या तो सरकारी सहायता या बीमा के माध्यम से ये सेवाएं मुफ्त प्रदान करने का दावा करती है, लेकिन साथ ही इन क्षेत्रों में व्यवसाय को चलने देती है और खुद एक दुखी, निराश और असहाय समूह बन जाती है।

D. क्या सही है या नहीं, यह व्यक्तिगत निर्णय का विषय हो सकता है लेकिन देश के लिए हमें सामूहिक निर्णय लेने होंगे, शायद देशव्यापी मतदान के माध्यम से।

अनुलग्नक – एच

प्रश्न: क्या धर्म (मूल धर्म) उन समस्याओं के व्यापक समाधान प्रस्तुत करता है जिनका हम मानव जाति सामना कर रही है?

उत्तर: हाँ,

निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है:

इसमें कहा गया है कि धर्म ही एकमात्र विकल्प है। धर्म (मूलभूत, प्राकृतिक और शाश्वत धर्म, यानी बिना किसी ब्रांड या उपसर्ग और प्रत्यय के धर्म) में सभी तरह के समाधान मिल सकते हैं और धर्म के अनुसार बनाए गए धर्म संस्थानों (धार्मिक संस्थानों) से सांत्वना मिल सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि धर्म आस्था है और आस्था शाश्वत है।

यद्यपि धर्म और धर्म संस्थान की स्थिति खराब हो गई है, लेकिन यदि कोई अपने आस-पास के वातावरण पर बारीकी से नजर डाले तो अभी भी कुछ अवशेष (जैसे कि विपत्ति में प्रार्थना करना, आपदा में सहायता प्राप्त करना) मिल सकते हैं, जो इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि, धर्म ही मानव जाति के पास उपलब्ध एकमात्र विकल्प है, केवल एक ही बात है कि, हमें धर्म को पुनर्जीवित करना है और धर्म संस्थान को क्रियाशील बनाना है।

यह कहा जा रहा है कि, यदि हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ हमारे दैनिक व्यवहार में) तो आश्वस्त हो सकते हैं कि बड़े पैमाने पर मंथन/परिवर्तन आने वाले हैं।

गीता में कहे गए उपरोक्त कथनों की प्रामाणिकता के संबंध में किसी के मन में तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए:

" कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत । अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूँ ॥4 – 7॥

मोक्ष के लिए संतों का विनाश की ओर एफ शैतानी दस्तावेज . धर्म की स्थापना के लिए असंभव युगे युगे ॥ ॥4-8 ॥ "

हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, संपूर्ण विश्व), जब-जब धर्म की ग्लानि होती है , तब-तब मैं धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, साधुओं की रक्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए स्वयं को पुनः उत्पन्न करता हूँ तथा युगों-युगों में धार्मिक संस्थाओं की स्थापना को संभव बनाता हूँ।

यहाँ एक और बात भी ध्यान देने योग्य है कि श्लोक में धर्म की बात की गई है, बिना किसी उपसर्ग या प्रत्यय के (अर्थात् बिना किसी नाम के जैसे कि हिंदू, सनातन आदि) जिसका अर्थ है मूल धर्म जो शाश्वत/शाश्वत है।

2. Faith/Dharma is innate and central to every being is being reflected by following words on our creation: –जन्म मृत्यु की परंपरा को बनाये रखने के लिए प्रत्येक जीव ममतामयी भवों के गहरे गर्त में गिराया गया है , अध्यात्म रामायण –बाल्मीकि ", ("To maintain the tradition of birth and death, every living being has been thrown into the deep vortex of the affectionate world, "Valmiki- Adhyatma Ramayana".

3. सबसे अच्छी शासन प्रणाली क्या हो सकती है? इस विषय पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक प्रख्यात वक्ता ने कहा था: "यदि हममें से कोई भी व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षण में कमजोर और असहाय, निराश्रित या हताश हो जाए, तो उस समय हमारी सरकार से क्या अपेक्षा होगी? कोई भी सरकार जो उस समय हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो, उसे एक अच्छी सरकार कहा जा सकता है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो लोग अपनी गहरी निराशा और लाचारी में भगवान को याद करते हैं। कहा जा रहा है कि अगर उस जगह की सरकार उस व्यक्ति का पूरा खयाल रख सकती है तो वह सरकार सबसे अच्छी कही जा सकती है, जिसमें ईश्वरीय (दिव्य) गुण हों और धर्म के सभी तत्व मौजूद हों। ऊपर पुस्तक: "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" के कुछ अंश दिए गए हैं।

ऐसा कहा जाता है:

जब धर्म को भुला दिया जाता है तो वाद उत्पन्न होता है।

जब ऋषियों की उपेक्षा होती है, तब ब्रह्मचर्य उत्पन्न होता है,

जब बूढ़े और बुद्धिमान लोग किनारे कर दिए जाते हैं, तो जानकारी सामने आती है,

जब स्वास्थ्य को भुला दिया जाता है, तब औषधि उत्पन्न होती है,

जब तालमेल टूट जाता है, तब योग उत्पन्न होता है,

जब नैतिकता की उपेक्षा की जाती है, तो भ्रम और अराजकता पैदा होती है,

जब सामंजस्य और लय टूट जाती है, तो कूटनीति और संक्षिप्तता पैदा होती है,

और वफादार बलों और मंत्रियों के समूह उठ खड़े हुए,

क्या विभिन्न गुणों का प्रकट होना, बड़े क्रम का लुप्त होना नहीं है?

प्रश्न: हम रामराज्य (ईश्वरीय शासन) के लिए बहुत शोर-शराबा सुनते हैं, खासकर आध्यात्मिक क्षेत्रों में। कहा जा रहा है कि रामराज्य (राम का शासन, राम द्वारा शासन और राम जैसा शासन) सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, अगर ऐसा है तो इसका व्यापक परिप्रेक्ष्य क्या है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. कहते हैं कि जब भगवान समझ लेते हैं तो शैतान भी मान लेता है। आगे कहा जाता है कि अगर कोई सच्चे मन से मंदिर में प्रार्थना करना चाहता है तो शैतान भी रास्ता बता देता है। प्रकृति में कुछ भी आकस्मिक, आकस्मिक या आकस्मिक नहीं है; सब कुछ परिणामजन्य है।

यद्यपि, राम राज्य (देवताओं का शासन या दैवीय अभिजात वर्ग) की स्थापना के लिए हर किसी के पास अपनी-अपनी कहानी होगी, लेकिन यह हमारी सामूहिक चेतना का परिणाम कहा जा सकता है।

2. इस तेजी से परस्पर जुड़ते विश्व में यह कहना अपरिपक्व होगा कि कोई भी प्रणाली, विशेषकर 'राम-राज्य', केवल भारत जैसे एक देश में स्थापित की जा सकती है तथा उसे अलग से काम करने की अनुमति दी जा सकती है, जिसका अर्थ यह है कि राम-राज्य की प्रणाली विश्व के अधिकांश भागों में एक साथ लागू होगी।

स्वाभाविक है कि ऐसी व्यवस्था तभी लागू हो सकती है जब राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सत्ता केंद्रों की आड़ में काम करने वाले अनगिनत माफिया समूहों (मीडिया, हथियार, ऊर्जा, फार्मसी, शिक्षा, प्राकृतिक और नवीकरणीय संसाधन, धर्म आदि) को शांत किया जाए। इसलिए यह तय है कि राम राज्य की स्थापना की दिशा में उठाया गया पहला कदम देश और दुनिया में उथल-पुथल लाएगा, (चाहे कोई इसे पसंद करे या न करे)।

3. राम राज्य में ऐसी क्या विशेषता है कि लगभग सभी बुद्धिमान, प्राचीन काल के सभी संत और धर्मपरायण व्यक्ति (पुरुष और महिला दोनों) राम राज्य की अच्छी बातें करते हैं और आज भी वैसा ही चाहते हैं, इसलिए स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि क्या राजा (राज्य/देश के मुखिया) के रूप में स्वयं राम महत्वपूर्ण हैं या शासन प्रणाली?

4. राम राज्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी आय/उपज का वितरण प्रणाली [(प्रत्येक को 12.5% की राशि) परिवार के सदस्यों (पुत्र और पुत्री, स्वयं और जीवनसाथी, माता और पिता) और समाज (धर्म-

संस्थान अर्थात् स्थानीय प्रबंधन का केंद्र) और राज्य/देश (राष्ट्रीय प्रबंधन का केंद्र) के बीच] और परिवार, समाज और देश में कार्य/जिम्मेदारी के वितरण की प्रणाली।

इस विशेषता ने लैंगिक समानता, व्यक्ति की आयु और रुचि के अनुसार कार्य का स्पष्ट सीमांकन लाया, जो किसी भी अच्छे शासन के लिए प्राथमिक है, इसलिए राम राज्य स्वयं को सर्वश्रेष्ठ शासन के एक मॉडल के रूप में स्थापित कर सका, और कोई भी इसके बारे में सोच सकता है, इच्छा कर सकता है और आकांक्षा कर सकता है।

5. उपरोक्त के लिए धर्म का पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना की आवश्यकता है, जो राम के अभिषेक समारोह के पूरा होने के साथ ही पहले भारत में और फिर पूरे विश्व में होने की उम्मीद की जा सकती है।

6. अब तक ज्ञात किसी भी पुनरुत्थान में, समाज की भौतिक सुरक्षा की व्यवस्था पुलिस और सेना के बजाय समाज द्वारा ही करने को पहली प्राथमिकता दी गई है, तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था समाज के साथ-साथ पुलिस और सेना द्वारा की गई है (वर्तमान सुरक्षा काफी अपर्याप्त है, शास्त्रों द्वारा अनुशंसित छः प्रतिशत के मुकाबले जनसंख्या का एक प्रतिशत भी नहीं है)।

इस गणना का मूल विवरण, यह भारत में आठ करोड़ युवाओं को पर्याप्त मानदेय के साथ प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान कर सकता है, इस विषय पर पुस्तक – वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के विषय – युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध में जानकारी दी गई है।

7. यह सर्वविदित तथ्य है कि जब हम कमजोर थे, तब अनेक बैक्टीरिया, वायरस, लुटेरे, धोखेबाज, डाकू, गुंडे, हमलावर, राज्य विस्तारवादी और धर्मांतरणवादी मिशनरी आदि हमारा फायदा उठाते हैं, हमें गुलाम बनाते हैं और हमें किसी न किसी कारण, जैसे क्षेत्र, धर्म, जाति, वर्ग, जनजाति, भाषा, लिंग आदि के आधार पर विभाजित और आपस में लड़ाते रहते हैं, ताकि वे हमारा फायदा उठाते रहें और हमें गुमराह करते रहें, ताकि हम कभी भी सही रास्ते पर खड़े न हो सकें।

यहाँ आश्चर्य की बात यह है कि हम सभी जानते हैं कि भारत पर आक्रमण करने वाले विदेशियों ने यहाँ के कुछ बच्चों को जबरन ईसाई और मुसलमान बना दिया और अब वे हाथ मिलाने, उनके साझा विकास और खुशहाली के लिए तरीके खोजने के बजाय ईर्ष्या, घृणा और यहाँ तक कि आपसी झगड़े बढ़ाने में व्यस्त हैं? क्या तत्कालीन अंग्रेजों के पास बदला लेने के लिए इससे बेहतर कोई उपाय हो सकता है?

8. कहा जाता है कि जैसा अन्न वैसा भाव, जैसा जल (द्रव्य) वैसा स्वर और जैसा नशा, वैसी ही दशा। भारत के पतन में, इसके भोजन, जल और मादक द्रव्यों की गुणवत्ता में गिरावट ने प्रमुख भूमिका निभाई और दुर्भाग्य से आज भी उन्हें नकारात्मक भूमिका निभाने की अनुमति है (विवरण के लिए, विषय देखें: गोमांस की तेजी वाली अर्थव्यवस्था और गाय और बधिया बैल की अर्थव्यवस्था)।

9. आध्यात्मिक जगत में कहा जा रहा है कि वर्तमान युग कलियुग है, जिसे अंधकारमय/काला युग भी कहा जाता है, जिसमें चालाक कलाओं और काले जादू के सभी स्वामी प्रकट होते हैं, इसलिए स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर अधिकतम सुरक्षा रखना हमेशा विवेकपूर्ण होता है।

अब चूंकि अयोध्या में धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना की नींव रखी जा चुकी है और भगवान राम ने अपना कार्यभार पुनः संभाल लिया है, इसलिए हमें अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए चिंता करने की कोई बात नहीं है।

प्रश्न: उपरोक्त से यह प्रश्न उठता है कि यदि उपरोक्त को सत्य कहा जा सकता है, तो क्या हमें धर्म (मूल धर्म) और धर्म संस्थान (धार्मिक संस्था) के पुनरुत्थान की आवश्यकता है?

उत्तर: समाज में जिस चीज की कमी है, वह है बुनियादी सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता, अर्थात् समाज द्वारा सुरक्षा का आश्वासन, भले ही व्यक्ति को दूरस्थ स्थान पर अकेला छोड़ दिया जाए, जो तब मिलता है जब समाज उसे शारीरिक सुरक्षा, भोजन, पानी, आश्रय, कपड़े, स्वास्थ्य, मार्गदर्शन और न्याय आदि की सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम हो। कहने का तात्पर्य यह है कि मूल धर्म और उसकी संस्था, जो समाज की बुनियादी जरूरतों का ख्याल रखने वाली थी, समाप्त हो गई।

1. कुछ लोग कहते हैं कि सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता में यह कमी इस युग के आरम्भ के साथ ही शुरू हो गई थी और यही इसकी मुख्य विशेषता है; इसी कारण इसे 'अंधकार युग - काला युग - अंधा युग या मशीन युग या कलियुग' के नाम से जाना जाता है।

ऐसा कहा जाता है कि, यह युग पूरा होने वाला है और प्रकाश का एक नया युग प्रकट होने वाला है, इसलिए ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है, हालांकि नेताओं और योद्धाओं को सर्वनाश के किसी भी अवसर को रोकने के लिए बहुत सावधान रहने की जरूरत है, जिसे वर्तमान विश्व शक्तिशाली ब्लॉक द्वारा गलत तरीके से सोचा जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे परिदृश्य में केवल वे ही जीवित रहते हैं जिनका सामाजिक सुरक्षा जाल बरकरार है,

2. उपरोक्त के अतिरिक्त यह भी कहा जा रहा है कि प्रत्येक युग/सभ्यता की प्रत्येक यात्रा धार्मिक कोने से शुरू होती है, अथवा किसी भी सभ्यता का बीज उसके धार्मिक पालन-पोषण में देखा जा सकता है, और इस प्रकार सभी द्वारा सामाजिक सुरक्षा के प्रति यह घोर उपेक्षा धर्म के ह्रास का कारण बन सकती है।

यह आसानी से देखा जा सकता है कि वर्तमान धार्मिक उपदेशक, शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षक और प्रेरक वक्ता व्यक्तिगत भागीदारी और सामूहिक कल्याण दोनों के बजाय व्यक्तिवाद को बढ़ावा देते पाए जाते हैं।

3. अगर हम भारत को देखें तो इसके आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार इसके अस्सी करोड़ लोग गरीब हैं, जिन्हें प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेवाई) से मुफ्त राशन मिल रहा है, दूसरी ओर, अमीरों, राजघरानों और धार्मिक प्रमुखों की स्थिति उनके उत्थान और पतन की एक अलग कहानी कहती है, एक समय वे समाज को निर्देश देते पाए गए और दूसरे समय वे या तो देश छोड़कर भाग गए, या अकेलेपन में मर गए या जेल में यातनाएं भुगत रहे थे।

उपरोक्त दोनों बातें इस बात का संकेत हैं कि समाज और धर्म की भूमिका शून्य हो गई है, इसलिए यह हममें से प्रत्येक के हित में है कि हम आगे आएँ और धर्म के पुनरुत्थान की प्रक्रिया में सहयोग करें।

ऊपर प्रस्तुत है,

प्रश्न: हम (समाज और सरकार) सभी युवाओं को रोजगार और सभी बुजुर्गों को सम्मानजनक रोजगार कैसे प्रदान कर सकते हैं, ताकि बेरोजगारी के साथ-साथ अकेलेपन की समस्या का भी समाधान हो सके?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

रोजगार उपलब्ध कराना समाज की जिम्मेदारी है, सरकार की नहीं, क्योंकि समाज ने ही सरकार का गठन किया है, न कि समाज ने ही सरकार का गठन किया है।

1. समाज में समस्या तब शुरू हुई जब समाज ने इस मूल आधार को नजरअंदाज कर दिया कि आस्था (धर्म) ही वह आधार है जिस पर राजनीति-शासन का ढांचा खड़ा है।

चूंकि धर्म एक आधार है, इसलिए धर्म को ही सम्पूर्ण समाज की अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण आधारभूत एवं स्थानीय कार्यों का ध्यान रखना चाहिए।

2. बदलाव की जरूरत है, यह समय समाज के लिए उठ खड़े होने और एक बार फिर से अपने हाथ में जिम्मेदारी लेने का है। भारत जैसे देश को राष्ट्रीय सरकार और समाज द्वारा संचालित/प्रबंधित स्थानीय सरकार द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित किया जा सकता है।

3. निम्नलिखित कुछ क्षेत्र हैं जहां बड़ी संख्या में रोजगार सृजित किया जा सकता है:

अवशेष /अपशिष्ट तथा खाने के बाद बचा हुआ पका हुआ भोजन मूलतः पशुओं और पक्षियों के लिए भोजन है, बशर्ते कि उसे दो-तीन घंटे के भीतर उन्हें परोसा जाए, अन्यथा यह कचरा बन जाता है (केवल मक्खियों, कीड़ों, मच्छरों, बैक्टीरिया और वायरस के लिए उपयुक्त)।

इससे यह संकेत मिलता है कि यदि हम प्रत्येक घर से दिन में तीन बार पहले से पका हुआ और बाद में बचा हुआ भोजन एकत्रित करने की व्यवस्था करें तो हम न केवल कूड़े के ढेर और निपटान की समस्या को हल कर सकेंगे बल्कि पालतू पशुओं, पक्षियों और मछलियों के लिए भी काफी हद तक भोजन की व्यवस्था कर सकेंगे। इससे स्वच्छता और स्वास्थ्य में भी सुधार आएगा और किसी भी शहर के चिकित्सा बिल में भी कमी आएगी।

दिन में तीन बार पका हुआ और पका हुआ भोजन इकट्ठा करने के इस काम के लिए अतिरिक्त जनशक्ति की आवश्यकता होगी। मोटे तौर पर गणना से पता चलता है कि अगर एक व्यक्ति दो सौ घरों से खाद्य अपशिष्ट एकत्र कर सकता है, तो 130 करोड़ भारतीयों के लिए हमें ~ जनसंख्या की आवश्यकता होगी - $130/6$ व्यक्ति प्रति घर $\times 200$ (घरों के लिए एक व्यक्ति पर्याप्त है) = 1.05 करोड़ लोगों की आवश्यकता होगी जो इस ज़रूरत को पूरा करने के लिए अभी उपलब्ध लोगों के अतिरिक्त होंगे।

B. किसी भी सार्वजनिक स्थान पर लड़के-लड़कियों, युवा पुरुषों-महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वच्छ और स्वास्थ्यकर मूत्रालय, शौचालय और स्नानघर ढूँढना एक वास्तविक समस्या है। इस मुद्दे को इन सभी स्थानों पर उपयोग और भुगतान मॉडल पर आधारित समाज द्वारा संचालित/अनुरक्षित बहुस्तरीय मूत्रालय, शौचालय और स्नानघर खोलकर सुलझाया जा सकता है, जिनमें क्लॉक रूम, धूम्रपान कक्ष, पीने के लिए ताजा पानी, हाथ धोने के लिए साबुन, सैनिटरी नैपकिन, तौलिया आदि की सुविधा हो सकती है। यह क्षेत्र अच्छे व्यावसायिक अवसर प्रदान करता है (बड़े ब्रांडों के लिए भी) और पर्याप्त रोजगार पैदा करेगा।

C. पुस्तक "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" के अनुसार, विषय - मीडिया की अर्थव्यवस्था और मीडिया द्वारा अर्थव्यवस्था का प्रबंधन, यह समझा जा सकता है कि समाज में मनोरंजन सुरक्षा प्रदान करने के लिए कम से कम छह प्रतिशत लोगों को मनोरंजन के विभिन्न पहलुओं (गायन, नृत्य संगीत, नकल, स्थान का प्रबंधन, रसद, अन्य सामान आदि) में पूरी तरह से संलग्न होना चाहिए, इसका मतलब है कि लगभग आठ करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष जुड़ाव / रोजगार की व्यवस्था समाज द्वारा अपने संसाधनों के माध्यम से की जानी चाहिए (भारत में वर्ष 2024 में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार)।

केवल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से मनोरंजन पर निर्भरता/लत से बचने के लिए मनोरंजन सुरक्षा की आवश्यकता है।

D. विषय - पारिस्थितिकी तंत्र का अर्थशास्त्र के अनुसार, यह समझा जा सकता है कि वनीकरण और वृक्ष आवरण का प्रबंधन करने और समाज में पीने के पानी की सुरक्षा प्रदान करने के लिए कम से कम एक प्रतिशत लोगों को इन गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए, अर्थात् इस क्षेत्र में, अर्थात् समाज को अपने स्वयं के संसाधनों के माध्यम से एक करोड़ तीस लाख लोगों (भारत में वर्ष 2024 के आंकड़ों के अनुसार) को रोजगार की व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

E. रोजगार उपलब्ध कराना समाज की जिम्मेदारी है, सरकार की नहीं, क्योंकि समाज ही सरकार बनाता है, न कि समाज ही सरकार बनाता है।

E.1. वे कहते हैं कि व्यापार कुछ और नहीं बल्कि फोटोकॉपी है (किसी एजेंसी द्वारा विकसित कुछ मूल उत्पाद, सेवाओं और प्रक्रियाओं की)। आम तौर पर ऐसा होता है, जब व्यापार फलता-फूलता है तो हम मूल का ध्यान रखना भूल जाते हैं और मूल के प्रति इस उपेक्षा के कारण ही बड़ी समस्या तब उत्पन्न होती है जब व्यापार में चूक हो जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में, यह सलाह दी जाती है कि मूल बातों पर गौर करें और व्यवसाय को फिर से स्थापित करें, बजाय इसके कि पागल हो जाएं या व्यवसाय बंद कर दें। यही बात सोसायटी और उसके व्यवसाय और लेन-देन के मामले में भी लागू होती है।

ई.2. जब व्यापार में ऋण, बंधक, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां और दिवालियापन की बात की जाती है और जब समाज में वेश्यावृत्ति, अश्लीलता, शराब, भिक्षा, दान, परोपकार और भीख मांगने की बात की जाती है, तो यह कहा जा सकता है कि समाज ठोकर खा गया।

यह स्थिति तब और पुष्टा हो जाती है जब भारत अपनी साठ प्रतिशत आबादी (80 करोड़) को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेवाई) से हर महीने मुफ्त राशन देने के लिए बाध्य है। ऐसी स्थिति में हमें समाज के मूल लोगों पर गौर करना चाहिए कि उन्होंने किस तरह से व्यवस्था को डिजाइन किया।

ई.3. यह कहा जाता है कि आदिवासी जिन्हें आदिवासी भी कहा जाता है, मूलनिवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर निर्मित या इन मूलों से प्रेरणा लेकर निर्मित एक अधिरचना है।

ई.4. यह आज भी ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि प्रत्येक जनजाति को संपूर्ण कार्य की देखभाल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, लेकिन कार्य को मोटे तौर पर चार श्रेणियों में विभाजित किया जाता है (जनजाति की आवश्यकता और व्यक्ति की रुचि के अनुसार) जिन्हें व्यक्ति की आयु के अनुसार चार समूहों में आगे उपश्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

E.5. सभ्य समाज ने यहीं से आगे बढ़कर समाज के कार्यों को चार श्रेणियों में विभाजित किया – सुरक्षा, शिक्षा और प्रशिक्षण, सामग्री का संग्रह, उसका भंडारण और वितरण तथा सहायक सेवाओं सहित अन्य सभी कार्य इन तीन श्रेणियों में रखे गए।

इसके अलावा, इसे देखते हुए, सभ्य दुनिया (समाज) ने मानव की औसत आयु सौ वर्ष मानते हुए प्रत्येक समूह को आयु के अनुसार चार श्रेणियों में विभाजित किया।

ई.6. यदि हम सुरक्षा का एक उदाहरण लें तो यह कहा जा सकता है कि भारत की एक चौथाई आबादी को सुरक्षा के प्रावधान में शामिल किया जाना चाहिए और इसमें से एक चौथाई को फील्ड वर्क का प्रभार दिया जाना चाहिए, जैसा कि समाज में पुलिस कर्मी करते हैं, यानी 130 करोड़ लोगों में से 1/16 को सुरक्षा में रोजगार दिया जाना चाहिए।

ई.7. यदि हम भारत के 22-23 के बजट, समानांतर अर्थव्यवस्था और निजी सुरक्षा कर्मियों के वेतन से इसके वित्तीय पक्ष को देखें तो यह देश में एक वर्ष में होने वाले कुल व्यय का मात्र 18.25% ही निकलता है (विस्तृत जानकारी के लिए ऊपर दिए गए लिंक को देखें)।

यानी आठ करोड़ युवाओं को रोजगार आसानी से दिया जा सकता है (भारत में वर्ष 2024 तक)।

एफ. औद्योगीकरण के लिए औद्योगीकरण ने कई देशों को बर्बाद कर दिया है और मनुष्यों को उनकी बुनियादी गतिविधियों से वंचित कर दिया है और समाज के निचले आय वर्ग में उन्हें बेरोजगार और अकेला बना दिया है, और समाज के उच्च आय वर्ग में लोगों को मोटा, अस्वस्थ, अपंग, अकेला और यहां तक कि संगरोधित बना दिया है।

एफ.1. समाज में विद्युत/बैटरी/गैसोलीन चालित मशीनों के उपयोग के संबंध में कुछ बुनियादी और दृढ़ सीमांकन की आवश्यकता है, उदाहरण के लिए, समग्र स्वच्छता के लिए खाद्य पदार्थों को पीसने, काटने, टुकड़े करने का काम केवल मैनुअल तरीकों से किया जाना चाहिए और विद्युत/गैसोलीन चालित मशीनों द्वारा किए जाने वाले काम को प्रतिबंधित/त्याग दिया जाना चाहिए।

F.2. बुद्धि सुझाव देती है, "प्राथमिक कार्य शारीरिक होना चाहिए, द्वितीयक कार्य अर्ध/आंशिक रूप से यंत्रिकृत होना चाहिए, तृतीयक कार्य तकनीकी रूप से संचालित होना चाहिए और अन्य उन्नत चरण स्वचालित होना चाहिए (स्वयं और समाज के लिए भोजन बनाना, कपड़ों के लिए धागा बनाना शारीरिक होना चाहिए, भोजन का प्रसंस्करण अर्ध यांत्रिक होना चाहिए, पैकिंग तकनीकी रूप से संचालित होनी चाहिए। जबकि कोई भी विशेष और उन्नत परीक्षण जैसे मिट्टी परीक्षण), निष्कर्षण, मिश्रण, संचार स्वचालित हो सकता है।

एफ.3. यह आसानी से स्थापित किया जा सकता है कि विद्युत और गैसोलीन संचालित मशीनरी के उपयोग में चयनात्मक प्रतिबंध लगाने तथा पारंपरिक तरीकों के लिए क्षेत्रों को फिर से खोलने के हमारे सचेत और सामूहिक निर्णय से, हम युवाओं के लिए बड़ी संख्या में रोजगार और अकेलेपन से पीड़ित लोगों के लिए सम्मानजनक जुड़ाव पैदा कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए: पीटीआई के दिनांक 09.05.22 के आंकड़ों के अनुसार, गेहूं के आटे - आटा के लिए मूल गणना (वर्ष 2021-22 के लिए) निम्नलिखित इंगित करती है:

*सरकारी खरीद दर - ₹.19.75/किग्रा

* बाजार में आटे का औसत मूल्य: 32.91 रुपये प्रति किलोग्राम, जबकि आटे का अधिकतम खुदरा मूल्य: 59 रुपये प्रति किलोग्राम, (2021-22)

* न्यूनतम अंतर ~ $32.92 - 19.75 = ₹.13/$

अधिकतम अंतर ~ $59 - 19.75 = ₹ 39/$

* हाथ से पीसने वाला व्यक्ति औसतन 20 किलोग्राम गेहूं प्रतिदिन पीस सकता है, इसके लिए उसे प्रतिदिन पांच घंटे काम करना होगा।

* प्रति व्यक्ति प्रति माह औसत कमाई ~ $20 \text{ किलो} \times 13 \text{ रुपये} \times 30 \text{ दिन} = 7800 \text{ रुपये/}$

**भारत में गेहूं की खपत -103.5 एमएमटी, 103.5 एमएमटी पीसने के लिए आवश्यक मानव दिवस ~ $103.5 \times 1000000 \times 1000 \text{ किग्रा} \div 20 \text{ किग्रा} \times 365 \text{ दिन} = 141780822 \text{ मानव दिवस}$

*** मानव शक्ति की मासिक आवश्यकता ~**

$141780822 \text{ मानव दिवस} \div 12 = 11815068 /$, अर्थात् एक करोड़ अठारह लाख से अधिक लोगों को नियमित रोजगार, जिनकी औसत आय प्रति व्यक्ति सात हजार आठ सौ रुपये प्रतिमाह आसानी से दी जा सकती है।

F.4. रोजगार के अलावा, बिजली से चलने वाले गेहूं को पीसने की बजाय हाथ से पीसने की प्रक्रिया से करने वाले और खाने वाले दोनों को कई अन्य स्वास्थ्य लाभ होते हैं, क्योंकि हाथ से पीसने की प्रक्रिया कम दबाव, कम तापमान और कम RPM वाली होती है। रोजगार के बारे में ऊपर संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

प्रश्न: सुशासन में स्वच्छता एवं सफाई के मार्गदर्शक सिद्धांत क्या हो सकते हैं?

उत्तर: निम्नलिखित जानकारी अवलोकनार्थ तथा हम में से प्रत्येक द्वारा व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से की जाने वाली संभावित कार्रवाई हेतु प्रस्तुत है:

1. ईश्वर स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर व्यक्ति, परिवार, समाज, देश के हृदय में निवास करता है, यह बात सत्य है, लेकिन आधी बात यह है कि अच्छाई गंदे एवं अस्वास्थ्यकर परिवेश (चाहे वह व्यक्ति, परिवार, देश एवं समाज का हो) को त्यागने, टालने एवं उससे दूर रहने की कोशिश करती है।

यह कहा जा सकता है कि यदि कोई व्यक्ति जीवन की समृद्धि, विलासिता और सुख-सुविधाओं से ऊब गया है, और व्यक्तिगत स्तर पर सफाई और स्वच्छता को त्यागना शुरू कर देता है तथा परिवार और उसके आस-पास सफाई और स्वच्छता को कम महत्वपूर्ण मामला बना देता है, तो बीमारियां, असुविधाएं, उसके बाद गरीबी और यहां तक कि गुलामी भी अपने आप आ जाएगी, इसके लिए प्रयास करने की जरूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि वह अपने आप आ जाएगी।

में स्वस्थ, सुखी और वैभवपूर्ण जीवन जीना चाहता है तो उसे पाखंड (अर्थात् सफाई और स्वच्छता के संबंध में किसी धर्मग्रंथ का उपदेश रटना या रटना) त्यागना होगा, लेकिन वास्तव में उसे व्यक्तिगत स्तर पर स्वयं को साफ करना होगा, सफाई को प्राथमिकता देनी होगी, सुविधाएं जुटानी होंगी, सम्मान देना होगा तथा परिवार, पड़ोस और समाज में दूसरों के साथ सहयोग करना होगा।

2. स्वच्छता और सफाई को बनाए रखने के लिए बुनियादी और विशेष शिक्षा की व्यवस्था, समाज के अन्य कार्यों के समान वेतन और भत्ते के साथ स्वच्छता और सफाई की एक अलग धारा के बारे में सोचना होगा। अगर हम स्वच्छता और सफाई में सुधार करना चाहते हैं तो शासन प्रणाली में सुझाव और प्रतिक्रिया की व्यवस्था, अनुवर्ती सुधार तंत्र, शोध और विकास में वित्त पोषण, शोध परियोजना के मूल्यांकन तंत्र को शामिल किया जाना चाहिए।

3. 5S प्रणाली, जिसमें "हर चीज अपनी जगह पर और हर चीज के लिए हर समय और हर समय जगह और उसका रिकॉर्ड किया गया मानकीकरण" है, को केवल औद्योगिक दुनिया तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे हमारे अन्य कार्यों तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए।

4. प्रकृति में, चील ताजा भोजन खाती है जबकि गिद्ध मृत भोजन खाता है, समस्या तब शुरू होती है जब गिद्धों का सफाया हो जाता है और शव सड़ने के लिए खुले पड़े रहते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि गिद्ध मृत भैंसों/गाय का मांस खाने से विलुप्त/मृत हो गए, जिनके शरीर में ऑक्सीटोसिन (जिसे आमतौर पर हर दूधवाला गाय चराते समय इंजेक्ट करता है) की अधिक मात्रा के कारण धीरे-धीरे जहर हो गया।

5. प्रकृति में प्रत्येक व्यक्ति जब एक दूसरे के साथ व्यवहार करता है तो हमारी प्रार्थना, विचार और क्रिया हमारी स्थिरता की ओर निर्देशित होनी चाहिए, उदाहरण के लिए: जब हम कपड़े सुखा रहे होते हैं, तो हमारी प्रार्थना हो सकती है: "नदी का पानी नदी में चला जाए, हमारे कपड़े सूख जाएं", कहने का तात्पर्य यह है कि – "पांच तत्वों अर्थात् अंतरिक्ष, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी का सम्मान करते हुए उपचारक को उपचारित करना, पर्यावरण और पारिस्थितिकी के साथ हमारी बातचीत का आधार होना चाहिए।

6. चूंकि शोर दिल को परेशान करता है और दिमाग को धुंधला कर देता है, इसलिए समाज को शोर पैदा करने वाले सभी लोगों और संस्थाओं पर नियंत्रण रखना होगा।

7. समाज को पारिस्थितिकी तंत्र का उचित रखरखाव सुनिश्चित करने और उचित मनोरंजन की व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

यह उम्मीद की जाती है कि उपरोक्त कार्य करके समाज और देश स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे, जिससे सुशासन की स्थापना होगी।

प्रश्न: "इंडिया – हिंदुस्तान – भारत" शब्द की वास्तव में क्या व्याख्या की जा सकती है, अच्छे शासन के लिए इन शब्दों/शब्दों की क्या प्रासंगिकता है?

उत्तर: निम्नलिखित प्रस्तुत है:

1. इंडिया, जिसे भारत के नाम से भी जाना जाता है, एक संप्रभुता संपन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक देश है जिसमें संसदीय प्रणाली वाली सरकार है।

2. उपरोक्त व्यापक विवरण के बावजूद, हम भारत के बारे में नारे लगाते हुए देख रहे हैं कि या तो यह एक विश्वसनीय और अविश्वसनीय देश है, या फिर यह कि हिंदुस्तान एक हिंदू देश है या फिर यह कि भारत एक पूर्णतया धार्मिक (धर्मनिरपेक्ष) देश है और इसका क्या अर्थ है।

ये सभी नारे हमारी मूल पहचान पर ही प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं, इसलिए हमारे लिए यह समझदारी होगी कि हम इस चर्चा को ऐतिहासिक विवरण के साथ आगे बढ़ाएं, न कि सनकी बनकर देश में अराजकता पैदा करने में भागीदार बनें।

3. प्रश्न पूछे जा रहे हैं कि क्या भारत एक विचार है या यह सिर्फ एक भूमि का टुकड़ा है, या इसका अर्थ कुछ और है, या यह शब्दों का मिश्रण है, या यह एक संक्षिप्त नाम है या एक विशेषण या एक क्रिया है या भारत एक दिया गया नाम है या यह अर्जित या दी गई उपाधि है?

3.1 भारत शब्द का सबसे पुराना संदर्भ (जिसका उच्चारण आज भी विशेष प्रार्थना/यज्ञ के समापन पर किया जाता है) इस शब्द में आता है – "जम्मू द्वीप :: भरत खंडे (जम्मू द्वीप) द्वीप भारत – खंडे) और कहा गया कि यह संपूर्ण पृथ्वी को भारत दर्शाता है।

3.2. पिछले कुछ हजार वर्षों में कई लोगों ने "हिंदुस्तान भारत" को हिमालय और हिंद महासागर के बीच सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियों से घिरा एक क्षेत्र माना है और इस क्षेत्र को भगवान की भूमि या देवताओं की भूमि/ब्रह्मा की भूमि और उसके बच्चों को हिंदू और ब्रह्मपुत्र (सिद्धू / हिंदू) कहा है। एवं ब्रह्मपुत्र).

3.3. It can be said that the Bharat is a title earned because of the work it has done to lighten the masses and enlighten the classes. The name "Bharat (Bha –light and rat busy, भारत (भा = प्रकाश, रोशनी, ज्योति, रत= व्यस्त, संलग्न) प्रकाशित करने के कार्य में व्यस्त) has come because of its quality and its efforts to enlighten the mankind,

3.4. "हिंदुस्तान" और "भारत" नाम इसे सामान्य स्रोत 'सिंधु' से दूसरों द्वारा दिया गया है जैसे: (i). 'सिंधु-हिंदू - हिंदुस्तान' (सिंधु - हिंदू - हिंदुस्तान), (ii), 'सिंधु' - "इंदु" - 'भारत' (सिंधु - इंदु - भारत),

3.5. भारत शब्द का उल्लेख गीता के एक सबसे प्रसिद्ध श्लोक में भी किया गया है-

अगर अगर एच धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

(यदा यदा हि धर्मस्य) साफ भवति भारत,

अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानम् श्रीजामयम्), 4.7॥

यहाँ भारत शब्द का प्रयोग बुद्धिमान/प्रबुद्ध और विश्व के लिए किया गया है।

यहां एक और बात ध्यान देने योग्य है कि महान/पवित्र ग्रंथ धर्म की बात करते हैं, बिना इसके साथ कोई उपसर्ग या प्रत्यय जोड़े, जिसमें सनातन या हिंदू भी शामिल है।

4. ऐसा कहा जाता है कि "हिंदी-हिंदू और हिंदुस्तान 'संस्कृत-सनातन धर्म और संसार/भारत' का अपभ्रंश (भ्रष्ट संस्करण) है।"

आज भी हर भारतीय अपने आप को "हिंदी-हिंदू और हिंदुस्तान" जैसे अर्थों की अपेक्षा "संस्कृत, सनातन धर्म और भारत" से अधिक जोड़ता है।

ऊपर समस्या है, हो सकता है कि यह हमारे मूल धर्म से हमारे वियोग के कारण हो या नहीं? क्या इस पर व्यापक चर्चा करना उचित नहीं होगा?

प्रश्न: भारत-इंडिया-हिंदुस्तान, एक बेहतर स्थान क्यों है?

उत्तर : आमतौर पर यह देखा गया है कि हर धर्म के प्रचारक/पुजारी आतंकवादियों, चोरों, धोखेबाजों, लुटेरों और तथाकथित शैतानी ताकतों और उनकी गतिविधियों से खुद को अलग रखते हैं, लेकिन गैर-धार्मिक कार्य करते रहते हैं जैसे: समाज में भय फैलाना और नफरत और दुश्मनी पैदा करना।

इन ताकतों के विपरीत, संत और साधु अच्छे काम करते रहते हैं लेकिन श्रेय लेने से खुद को अलग कर लेते हैं। हालाँकि हर देश में शैतान और संतों और साधुओं का अपना हिस्सा होता है, लेकिन अनादि काल से भारत को संतों और साधुओं का निवास माना जाता रहा है। संतों और साधुओं की उपस्थिति के कारण ही "हिंदुस्तान - इंडिया-भारत" के रूप में जाना जाने वाला यह देश सदियों से चली आ रही तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद अपनी पूर्ण धार्मिकता को बनाए रखने के लिए भाग्यशाली है। इसके अलावा, ऐसे प्रतिष्ठित वर्ग की उपस्थिति के कारण ही भारत विभाजन के दौरान हिंदू राष्ट्र बनने के लिए जबरदस्त दबाव के बावजूद खुद को "धर्मनिरपेक्ष (पूरी तरह से धार्मिक) राष्ट्र के रूप में बनाए रखने में सक्षम रहा है। धर्म-निरपेक्ष के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक शब्द नहीं है, धर्मनिरपेक्ष शब्द का अर्थ है ऐसा देश जहाँ पैसा महत्वपूर्ण है और एक अधार्मिक देश (शब्दकोश ऑक्सफोर्ड शॉर्टर)।

वैसे तो समवर्ती भारत की स्थिति बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन भारत के बारे में अच्छी बात यह है कि इसके बच्चे आत्मविश्वास प्राप्त कर रहे हैं और उनमें खुद पर और खुद पर भरोसा, अपनी जड़ों पर गर्व, किसी भी स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र समाज के लिए बुनियादी शर्त है। यह विश्वास संतों और साधुओं के आशीर्वाद के साथ मिलकर भारत-हिंदुस्तान-भारत खुद को खड़ा पाता है और शाश्वत/शाश्वत (हिंदी और संस्कृत में - शस हवत/सनातन, उर्दू में - जावेद, द्वमी) सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को बहाल करता है और मूर्खता/बुराइयों को खत्म करता है।

ऊपर प्रस्तुत है
भगवान हमें आशीर्वाद दें,

सादर,

बंदना चौधरी

लेखक - "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था"

ईमेल: बंदनाचौधरी2016@gmail.com,

ब्लॉग: <https://tbandana.blogspot.com>,

नरेंद्र

मार्गदर्शक एवं संपादक - "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था - प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था",

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com,

दिनांक: 20.06.2024

स्थान: भारत

विल पर कुछ

एक कविता

हमारी इच्छा या प्रकृति की इच्छा

हर कोई समझता है कि,
अंततः यह ईश्वर (प्रकृति) की इच्छा है,
वह प्रबल होगा,

प्रबंधन का संबंध, मनुष्य, धन, सामग्री, मशीन, बाजार से है।
जनता को काम देना और जनता से काम लेना,
[प्रबंधक भौतिक संस्थाओं से निपटता है]

योजना मनुष्य और पदार्थ से संबंधित है,
प्रबंधकों को काम देना और प्रबंधकों से काम लेना,
[योजनाकार इरादों, अवधारणाओं, इसके व्यवहार्य गठन और प्रस्तुति से संबंधित है]

प्रकृति अंतर्ज्ञान, कल्पना और स्वप्न से संबंधित है
योजनाकारों को काम देना, ताकि अंततः प्रकृति की इच्छा ही प्रबल हो।
[प्रकृति अंतर्ज्ञान से संबंधित है: कंपन, ऊर्जा, दृष्टि, कल्पना और स्वप्न अर्थात् विचार और संकल्प]

- बंदना चौधरी द्वारा



बंदना चौधरी, (जन्म अप्रैल 1993), इस संकलन “धर्म और उससे जुड़े मुद्दों पर कुछ-इसके आत्मसात की आवश्यकता” (धर्म का आत्मसात क्यों, कैसे और क्यों तथा अर्थशास्त्र, न्यायपालिका और प्रशासन का पुनर्गठन और इसकी तात्कालिकता) की प्रस्तुतकर्ता, श्री नरेन्द्र अग्रवाल द्वारा वर्ष 2024 के सोशल मीडिया पोस्ट का संग्रह, सामाजिक कार्यप्रणाली की गहरी पर्यवेक्षक हैं, पहले ही दो पुस्तकें लिख चुकी हैं, जिनके नाम हैं ‘काम की बात (जल, जमीन और जंगल पर और हिंदी भाषा में)’ और बहुचर्चित पुस्तक ‘वैकल्पिक अर्थव्यवस्था’, जिसमें अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इसके अलावा उन्होंने मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा, डिविंक्लेसी (ईश्वरीय-लोकतंत्र), सनातनी वैश्विक व्यवस्था (शाश्वत विश्व व्यवस्था), परांजलि और धार्यते इति धर्म नामक पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। उपरोक्त सभी पुस्तकें अमेज़न किंडल पर उपलब्ध हैं और वेबसाइट: revivenofdharma.com से निःशुल्क डाउनलोड के लिए भी उपलब्ध हैं।

संकलन, प्रस्तुति एवं प्रकाशन: बंदना चौधरी